# रत्नसागर

## तुलसी साहब (हाथरस वाले) का

## जीवन चरित्र सहित

जिस में

कुल रचना का भेद, बेद और शास्त्रौं का निरूपन, युगौं का प्रभाव, चार खानि और चौरासी लक्ष योनी का हाल, कर्मों का हिसाब, जीव का फँसाव, उसके उबार की युक्ति, संत शरन और सतसंग की महिमा, भेषौं की दशा इत्यादि, पूरी भाँति से दिखाया है



इलाहाबाद

बेलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग वर्कस् में प्रकाशित हुआ

सन् १९०९

२३० सफ़हा] [दाम ॥।=)

Printed at the Belvedere Steam Printing Works, Allahabad, by E. Hall.

# सब्सक्रैबरों के लिये दाम में एक चौथाई की कमी
## (इस निवेदन के पृष्ठ २ का आख़िरी जुमला पढ़िये)

---

संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जक्त-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी व उपदेश को जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है। अब तक जितनी बानियाँ हमने छापी हैं उन में से विशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं और कोई २ जो छपी थीं तो ऐसे छिन्न भिन्न, बेजोड़ और अशुद्ध रूप में कि उन से पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ ऐसे हस्त-लिखित दुर्लभ ग्रंथ या फुटकर शब्द जहाँ तक पिछले पाँच बरस के उद्योग से हो सका असल या नकल कराके मँगवाये और यह कार्रवाई बराबर जारी है। भर सक तो पूरे ग्रंथ मँगा कर छापे जाते हैं और फुटकर शब्दों की हालत में सर्व साधारन के उपकारक पद चुन लिये जाते हैं। कोई पुस्तक बिना कई लिपियों का मुक़ाबला किये और ठीक रीति से शोधे नहीं छापी जाती, ऐसा नहीं होता कि औरों के छापे हुए ग्रंथों की भाँति बेसमझे और बेजाँचे छाप दी जाय। लिपि के शोधने में प्रायः उन्हीं ग्रंथकार महात्मा के पंथ के जानकार अनुयायी से सहायता ली जाती है और शब्दों के चुनने में यह भी ध्यान रक्खा जाता है कि वह सर्व साधारन की रुचि के अनुसार और ऐसे मनोहर और हृदय-बेधक हों जिन से आँख हटाने का जी न चाहे और अंतःकरन शुद्ध हो।

कई बरस से यह पुस्तक-माला छप रही है और जो जो कसरें जान पड़ती हैं वह आगे के लिये दूर की जाती हैं। कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत नोट में दे दिये जाते हैं। जिन महात्मा की बानी है उन का जीवन-चरित्र भी साथ ही छापा जाता है। परंतु इस सब जतन पर भी यह नहीं कहा जा सकता कि हमारी पुस्तकें निर्दोष हैं अर्थात उन में अशुद्धता और क्षेपक नाम-मात्र नहीं है।

यह अनमोल ग्रंथ "रत्नसागर" हम को कृपा करके लाला सुदर्शन सिंह सेठ साहब ने हस्त-लिखित गुटका के रूप में दिया। हम इस पुस्तक को खोजी और प्रेमी जनों के सामने छापा में रख कर सेठ साहब को अनेक धन्यबाद देते हैं जिन्हों ने इस अनमोल और दुर्लभ रत्न को परम पुरुष पूरन धनी स्वामी जी महाराज, राधास्वामी मत के प्रकाशक के पाठ की पुस्तकों में से निकाल कर हम को उस के छापने की इजाज़त दी, और बाबा अचिन्तदास जी साधू को जिन्हों ने पहले पहल इस ग्रंथ की ख़बर हम को दी और फिर गुरमुखी अक्षरों की पुस्तक से नागरी में इस की एक प्रति तैयार कर दी।

इस ग्रंथ की उत्तमता के विषय में कुछ कहना अनावश्यक है क्योंकि वह प्रकरनों की सूचीपत्र के देखने से आप झलकेगी और किसी प्रकरन के पढ़ने से पूरी पूरी दरसेगी।

अक्तूबर १९०९

बेलवेडियर प्रेस,
इलाहाबाद।

# ॥ सूची पत्र ॥

# तुलसी साहब का जीवन-चरित्र

तुलसी साहब जिनको लोग साहबजी भी कहते थे जाति के ब्राह्मण बहुत अच्छे कुल के थे। बाल अवस्था ही में इनको ऐसा तीव्र बैराग और प्रचंड भक्ति प्राप्त हुई कि घर बार छोड़ कर भेष ले लिया और अलीगढ़ ज़िला के हाथरस शहर में आकर रहे और वहीं शरीर त्याग किया। इनको गुप्त हुए साठ बरस के अनुमान हुए और देहान्त के समय उनकी अवस्था साठ बरस के क़रीब थी, इस हिसाब से उनका जन्म बिक्रमी संबत १८४५ मुताबिक़ ईसवी सन १७८८ और देहान्त बिक्रमी सबत १९०५ मुताबिक़ ईसवी सन १८४८ में या दो एक बरस आगे पीछे ठहरता है। हाथरस में उनकी समाधि मौजूद है और बहुत से लोग वहाँ दर्शन को जाते हैं।

तुलसी साहब का कोई गुरू न था और इस बात के प्रमाण में यह कड़ी उनकी दिखलाई जाती है—

"मिले कोइ संत फिरौं तेहि लारे"

इस में कोई संदेह नहीं कि तुलसी साहब स्वयं संत थे जिनको गुरू धारन करने की ज़रूरत न थी लेकिन मर्जादा के लिये चाहे किसी को नाम मात्र को गुरू बना लिया हो।

तुलसी साहब अक्सर हाथरस के बाहर एक कम्मल ओढ़े और हाथ में डंडा लिये दूर २ शहरों में चले जाया करते थे। जोगिया नाम के गाँव में जो हाथरस से एक मील पर है अपना सतसंग जारी किया और बहुतों को उपदेश दिया।

इन की हालत अक्सर खिंचाव की रहा करती थी और ऐसे आवेश की दशा में धारा की तरह ऊँचे घाट की बानी उनके मुख से निकलती।

जो कोई निकट बर्ती सेवक उस समय पास रहा उसने जो सुना समझा लिख लिया नहीं तो वह बानी हाथ से निकल गई। इस प्रकार के अनेक शब्द उनकी शब्दावली में हैं।

तुलसी साहब के अनुयायी अब तक हज़ारों आदमी हिन्दुस्तान के शहरों में मौजूद हैं। उनके प्रसिद्ध ग्रंथ घट रामायण, शब्दावली और रत्न सागर हैं। तुलसी साहब की घट-रामायण उनके मत के आचार्ज देवी साहब छाप चुके हैं, शब्दावली और रत्न-सागर पहिली बार बेलवेडियर प्रेस इलाहाबाद में छपी हैं।

तुलसी साहब ने घट-रामायण में लिखा है कि आप ही गुसाँई तुलसीदास जी रामायण के ग्रंथ करता के चोले में (अनुमान ढाई सौ बरस पहले) थे और उन्हों ने पहले घट-रामायण का ग्रंथ रचा जिस में घट का भेद दिया है और निर्गुण लखाया है परंतु फिर ब्राह्मणों के झगड़ा करने पर उस ग्रंथ को उठा रक्खा और समय के अनुसार दूसरी रामायण सर्गुण के रूपक में लिख डाली जो आजकल इतनी प्रचलित है।

तुलसी साहब ने अपनी बानी में कहीं कहीं बेद कतेब कुरान पुरान राम रहीम और प्रचलित मतों का खोल कर खंडन किया है जिस से लोग उन्हें निन्दक और द्रोही समझते हैं पर यह उन की अन-समझता की चाल है। तुलसी साहब के पदों के अर्थ पर ध्यान देने से स्पष्ट जान पड़ता है कि उन्हों ने किसी मत को झूठा नहीं ठहराया है बरन जहाँ तक जिस की गति है उस को साफ़ तौर पर बतला दिया है। उनका अभिप्राय केवल यह है कि इष्ट सब से ऊँचे और समस्त पिंड और ब्रह्मांड के धनियों के धनी का बाँधना चाहिये और उसी की सेवा करनी चाहिये, निर्मल चैतन्य देश के नीचे के लोकों के धनियों की भक्ति करने से परिश्रम तो उतनाही पड़ेगा और लाभ पूरा न उठैगा, अर्थात भक्त का काम अधूरा रह जायगा और वह आवागवन से न छूटेगा, देर सबेर जन्म मरन का चक्कर लगा रहेगा, क्योंकि यह लोक माया के घेरे में है चाहे वह कितनी ही सूक्ष्म माया हो।

तुलसी साहब के विषय में कहते हैं कि जब आप सतसंग कराते थे एक गरेड़िया रामकिशुन नामी चुपके से नीचे आ बैठता था एक दिन आप को मालूम हो गया पूछा कि तुम क्यों आते हो जवाब मिला कि मुझ को आप की बानी बड़ी प्यारी लगती है इस पर तुलसी साहब ने दया करके उस को एक पुस्तक अपनी दी और कहा कि पढ़ो उसने जवाब दिया कि मैं अनपढ़ हूं लेकिन आप के फिर आज्ञा करने पर उसने जो पुस्तक की ओर देखा तो धड़ाके से पढ़ने लगा। इसी तरह प्रसिद्ध है कि आप के गुरुमुख शिष्य सूरस्वामी थे जो निपट अनपढ़ और जन्म के अंधे थे उन को भी एक दिन आज्ञा की कि ग्रंथ पढ़ो और उनके उजर करने पर डाँटा तो सूरस्वामी की आँखों में जोति आगई और वह पढ़ने लगे।

एक बार आप घूमते हुए किसी स्थान पर पहुंचे। वहाँ के एक धनी ने आप का बहुत आदर सत्कार किया और भोजन सामने धर कर प्रार्थना की कि मुझे दया से एक पुत्र बख्शा जाय। तुलसी साहब ने अपना सोंटा उठाया और यह कह चलते हुए कि लड़का अपने सर्गुन इष्ट से माँग संतों की दया तो यह है कि अगर उन के दास के औलाद मौजूद भी हो तो उसे उठा लें और अपने दास को निर्बंध करें।

यह रत्न-सागर ग्रंथ कुल रचना के भेद का एक अनमोल भंडार है और जीव के उबार का सहज जतन बतलाता है। यह दुर्लभ ग्रंथ सचमुच "रत्न-सागर" है, रत्न-खानि नहीं कि जिस में से बड़े परिश्रम के साथ खोद कर रत्न निकालना पड़ता है-इस में तो जल की धारा की नाईं रत्न बह रहे हैं जिन्हे बड़भागी सहज में पा सकते हैं॥

# ॥ रत्न सागर ॥

( तुलसी साहब कृत )

॥ सोरठा ॥

हिरदे अरज कबूल स्वामी से कछु पूछिहौं ।
कहौ रचना निज मूल भूल भरम कब से भई ॥
जब नहिं अंड अकार सार सुरति रत कहँ हती ।
जब का कहौ बिचार पार प्रिये पद पुरुष का ॥

॥ छंद ॥

प्रथम पद्म* प्रनाम धुर गुर, आदि की रचना कहौ ॥
कस कुरम सेस अकार अँड खँड नौ, निरंजन कस रह्यौ ॥
सब चंद्र सूर जहूर पृथवी, कस भार सिर अपने लह्यौ ॥
सब तत्त अगिन अकास पवना, कौनि बिधि उतपत भयो ॥
जल बुंद पाँच पचीस बस, कस आप तन बंधन सह्यौ ॥
गुन गाँठ कस बैराट रचि, जिव जगत दृढ़ कैसे गह्यौ ॥
निराकार ब्रह्म अकार, कस घर भूल जग जिव होइ रह्यौ ॥
कस आप अपन बिसार पौ कोउ, नौ को नित बंधन सह्यौ ॥
तिरलोक सोक सिहारि† सब कोउ, उलटि घर कोउ ना गयौ ॥

---

* (चरन) कमल । † सम्हारना, पकड़ना ।

सुधि बुधि बिसारी आदि अपनी, करम के बसि बँधि रह्यौ ॥
भटके भवन मन मूल कैसे, भूल कस बादै बह्यौ ॥
सब आदि अंत हवाल तुलसी, बरन हिरदे को कह्यौ ॥

# रचना का मूल

( तुलसी दास बाच )

॥ दोहा ॥

जतन रतन सागर सुनो, रचना को बिस्तार ।
बिस्व बिदित बैराट के, सब जग उदर* मँझार ॥
होय बैराट प्रलै सभी, रबि चंदा बिस्तार ।
अंड खंड ब्रह्मंड लौं, बिनसत बारम्बार ॥
आतम अंस अकास में, भास भवन परकास ।
सनन सनन स्वाँसा चलै, जहँ मन करत निवास ॥

॥ चौपाई ॥

सुन हिरदे कहै तुलसी दासा । आतम सब में ब्रह्म निवासा ॥
आतम नाद आदि से आई । सिंध बुंद तन रह्यौ समाई ॥
धरती पवन अगिन जल चारी । नीर बुंद जग सृष्टि सँवारी ॥
ता में चेतन बास अनूपा । पंचम तत्त अकास सरूपा ॥
जड़ चेतन मन मूल बिसारा । अंतर गाँठ बहै नौ धारा ॥
नैन नासिका मुख अरु काना । इंद्री गुदा गुनन में साना ॥
बदन बास तन तत्त रहाई । इंद्री रुचि सुख भोग सोहाई ॥

---

* पेट ।

यह रस बस बहु फाँस फँसानी। उपजि मरै चौरासी खानी ॥

॥ दोहा ॥

उतपति परलै यों भई, गही न सतगुरु बाहिं ॥
संत चरन बिन बाद* यों, बहे भर्म के माहिं ॥

॥ चौपाई ॥

अब सुनु आदि अकास अचीन्हा। बूझै साध हरष लौलीना ॥
प्रथम पुरुष बिदेह बिन काया। जासे भई निरंजन माया ॥
माया पाँच तत्त उपजाया। यों रचि अस बैराट बनाया ॥
चेतन अंस आतमा सोई। भास अकास प्रकासिक जोई ॥
याको नाम निरंजन कहिया। भूमी बास अकास समइया ॥
सहस कँवल दल अंदर बासा। दस नौ द्वार पार परकासा ॥
दस नौ वार धार चल आई। चेतन जड़ यों गाँठि बँधाई ॥
निराकार आकार समाया। इच्छा रूप भई यक माया ॥

## मन की उत्पत्ति

॥ सोरठा ॥

निज तन बासी ब्रह्म, निराकार यह मन भयौ ॥
इच्छा अंग बिलास, आस अधर की तजि रह्यौ ॥

॥ चौपाई ॥

इच्छा मन मिलि बिस्व बनाया। योंरचि कीन्ह तत्त से काया ॥
इंद्री सुर देवन कर बासा। निज नभ कँवल गुनन की आसा ॥
रज सत तम तन तीन बसाये। ब्रह्मा बिस्नु महेस कहाये ॥

* वृथा।

# बेद कैसे रचे गये

स्वाँसा संग बेद जो भइया। सुछम* बेद अस नाम कहइया॥
अच्छर छर बैराटी बानी। भये बेद ब्रह्मा पहिचानी॥
नाद भये पर बेद बनाया। जा पाछे जग को समझाया॥
करम कांड करनी बिस्तारी। अरु उपासना कांड सँवारी॥
ज्ञान कांड कीन्हा मन बोधा। नहिं कोइ संधि समझ कर सोधा॥

॥ दोहा ॥

ज्ञान ध्यान जोगी जती, नहिं कोइ पावे भेद॥
खेद कर्म सुभ असुभ के, फल करनी कहे बेद॥

॥ चौपाई ॥

बेद मथन बेदांती कीना। ब्रह्म ज्ञान वहि में से लीना॥
बेद नाद से पीछे भइया। नेत नेत कह कर गोहरइया॥

# षट शास्त्र का बर्णन

षट सास्तर की सुनिये साखा। षट षट बाक बोल कर भाखा॥
कर्म मिमांसा बरन बतावे। पातंजली जोग ठहरावे॥
बरनि बिसेषिक समय सुनावे। नित्त अनित्त सांख समझावे॥
न्याय नीति भाखे करतारा। षट करनी में जीव बिचारा॥
सासतर नहीं सार समझावे। कस कस जीव अपनपौ पावे॥
षट का कहा करे परमाना। जामें न कोई सार पिछाना॥
जो कोइ इनकी साख सुनावे। मन हिरदे तुलसी नहिं आवे॥

---

* सूक्ष्म।

॥ सोरठा ॥

यह षट करम बिकार, सार भेद संतन लयो ॥
सुरति सुन्न आधार, पार पदम पट भवन में ॥

॥ चौपाई ॥

सुनु हिरदे यह आदि कहानी । भानु किरन भूमी पर आनी ॥
परथम निरगुन गुन से न्यारा । सरगुन काज कीन्ह बिस्तारा ॥
सरगुन की माया मतवारी । भट्ठी भर्म चुवावनहारी ॥
मद पियाय के कीन्ह बेहाला । यों बाँधे जग में जम जाला ॥
काम क्रोध मद लोभ बिकारा । जानो यह उनका ब्योहारा ॥
और अनेक फंद उन डारा । उरझा जक्त पार नहिं वारा ॥
सब रचना बंधन बस राखी । कीन्हे बेद देन को साखी ॥
षट* कर बोध पुरान अठारा । पीछे ब्यास कीन्ह बिस्तारा ॥

॥ दोहा ॥

हरि कृत लीला ज्ञान, भानु किरन बंधन भई ।
गही न गुरु की आन, जान जुक्ति ऐसे रही ॥

## अवतार का भेद

॥ चौपाई ॥

सरगुन ब्रह्म भया औतारा । जिन जग माँहि निसाचर मारा ॥
जगत भक्ति कीन्हा ब्योहारा । यह पुरान की रीति बिचारा ॥
ब्यास ब्रह्म सरगुन अवतारी । कीन्हे उन पुरान अधिकारी ॥
ज्ञान बैराग जोग अधिकाई । यह बरनन उन भाख सुनाई ॥

*छः शास्त्र ।

# मूर्त्ति पूजन

सरगुन भक्ति कही संसारा । बूझै साध समझ निरवारा ॥
काठ पषान जान जिन पूजा । अंदर में आतम नहिं सूझा ॥
ब्यास भागवत में यों भाखा । सूझै न जगत अंध की आँखा ॥
पढ़ि पढ़ि के पंडित बौराने । ब्यासबचनकोनहिंपहिचाने ॥

॥ सोरठा ॥

अंदर आतम ज्ञान, ध्यान करन सूरत कही ।
गई किरन रवि भानु, आप अपनपौ परखिया ॥

( हिरदे बाच )

॥ चौपाई ॥

जब हिरदे इक संसै लाई । स्वामी भर्म उठा मन माहीं ॥
ब्यास बचन कीन्हे परमाना । मन मोरे ने बोध न आना ॥
रचि पुरान जो कीन्ह अठारा । करनी का कीन्हा बिस्तारा ॥
पुरान पुरान कहा करतारा । बचनब्यासयोंभाखिसँवारा ॥
करता तो सब एक बतावें । यहअठरा*कसकसठहरावें ॥
जो पुरान देख्यौं मैं जाई । करता वहि पुरान बतलाई ॥
ऐसे अठरा निरख निहारा । कहे न्यारे न्यारे करतारा ॥
सिवपुरानसिव रचनाकीन्हा। बिस्नुपुरानबिस्नुरचिलीन्हा ॥

॥ सोरठा ॥

दुरगा देख पुरान, सब रचना दुरगा करी ॥
करता आप बखान, यों पुरान सब सब कहै ॥

---

* अट्ठारह ।

॥ चौपाई ॥

मूल भागवत ब्यास बखाना । नारद का उपदेस समाना ॥
इतनी कथन कहो तुम सारो । मूल मर्म मति नाहिं निहारी॥
तब आरंभ भागवत कीन्हा । नारद ने उपदेस जो दीन्हा ॥
नारदगुरूज्ञानकेभइया । तुमब्रम्हब्यासकौनबिधिकहिया॥
नारद हरि के दास कहाये । उन कस कस उपदेस सुनाये ॥
चौबिस[†] में सब सृष्टि बतावे। यहममकहनदृष्टिनहिंआवे ॥
मैं सेवक मोरि बुद्धि मलीना । अस स्वामी सेपूछनकीना ॥
ग्रंथ भागवत के अस माहीं । परीछत को सुकदेव सुनाई ॥
सुकदेव पुत्र ब्यास के पाछे । कसलिखिबचनसुनायेसाँचे॥

॥ दोहा ॥

ब्यास कथन आगे कही, बचन राय सुकदेव ।
ग्रंथ लिखित सुकराय के कस कहे उत्तर भेव ॥

# कर्म धर्म, भूल भर्म

(तुलसी दास बाच)

॥ चौपाई ॥

सुनु हिरदे यह अंतर बानी । जोगी आतम ज्ञान बखानी ॥
प्रानायाम पवन को साधा। इंगलपिंगलसुखमनऔराधा॥
घट में देखा सकल पसारा। सुकदेवराय ब्यास बिस्तारा॥
ब्यास बचन अंदर में भाखा । इन पढ़िबूझिजगतमेंराखा ॥
करें अरथ मन बुधि के मैले। जाने न ब्यास बचनकोखेले॥

---

[†] चौबीस औतार ।

ब्यास बचन ग्रंथन में गाये। संतन की गति अगम सुनाये॥
सो पंडित कहा जानें बिचारे। ज्ञान बुद्धि मन मान सँवारे॥
उन कही और और इन बूझा। ऐसे इन की आँख न सूझा॥

॥ दोहा ॥

सुनु हिरदे उत्तर बचन, समझि लखो मन माहिं।
ब्यास राय सुकदेव को, घट में कह्यौ बनाय॥

॥ चौपाई ॥

ब्राह्मन भरम जक्त में डारा। यों जुग जुग भरमा संसारा॥
सार तत्त को दीन्ह छिपाई। सुनु हिरदे असअस भरमाई॥
जीव अनादि काल से बूड़ा। संतन से कटे बंध अगूढ़ा॥
जगउनकोकोउचीन्हत नाहीं। भर्मत फिरे जीव जड़ताई॥
तीरथ बरत नेम निरधारा। भाख्यौ जीव कर्म करतारा॥
भय भव भार अचार अनीता। कर्म काल सँग पाल्यौ प्रीता॥
यह अस भाँति भुलायउ भाई। इच्छा अमृत बिषय पियाई॥

॥ सोरठा ॥

हिरदे अस बर्तमान, भर्म भूल जग जिव रह्यो॥
मन करता बिस्तार, भ्रमत भ्रमत जुग जुग भयो॥

# चौरासी लक्ष जोनि

॥ चौपाई ॥

कर्म प्रधान बुद्धि उपजाई। रह सुभ असुभ कर्म के माहीं॥
जसजसकर्म कीन्ह अधिकारा। जो जस जोनि बंद में डारा॥
जो जस बनिज किया बैपारी। दुखसुखहानिलाभसँगधारी॥

जोआसाबसबनिजबिचारा । बहाभवसिंधचौरासीधारा ॥
खान खान करनी से काया । फैलो प्रगट सृिष्टि में माया ॥
उपजे मरे धरे फिर देही । जो जस करनी के फल लेही ॥
लख चौरासी रह्यो अचेता । नर तन में बिरला कोइ चेता ॥
सतगुरुसाखसमझकोइबूझो । अंजनतिमरआँखजबसूझो ॥

॥ सोरठा ॥

बिन सतगुरु उपदेस, सुर नर मुनि नहिं निस्तरे ।
ब्रह्मा बिस्नु महेस, और सभन की को गिने ॥

॥ छंद ॥

सतगुरु बिना भव माहिं भटके, अटक नहिं गुरु की गही ॥
भृंगी भवन नहिं कीट पावे, उलटि भृंगी ना भई ॥
गुरु सब्द में चित नाहिं दीन्हा, कौन करनी में रही ॥
जिन सब्द सोध सिहार* सोचे, अलल† अंड उलटे सही ॥
जिन जगत मोह मिलाप कीन्हा, अंत को छूटे नहीं ॥
कोइ लाख लाख उपाय करिके, भर्म में बादहिं बही ॥
करि करि थके सब सोधि काया, मान मद ममता रही ॥
तुलसी दया गुरु दीन दिल, यों समझ हिरदे ने लई ॥

॥ सोरठा ॥

सतगुरु सूरत ध्यान, ज्ञान उदै छन भानु में ।
मंदिर मगन मिलाप, गगन गिरा गुंजत रही ॥

---

*सम्हालना । †अललपच्छ या सारदूल जो आकाश में इतने ऊँचे पर अंडा देता है कि वह पृथ्वी पर पहुंचने के पहिले फूट कर बच्चा उड़ जाता है ।

( हिरदे बाच )

॥ चौपाई ॥

हिरदे बिनय बचन कर बोला । स्वामी मन बेअंत अतोला ॥
छिनछिनमन यह तरंगउठावे । जैसे सिंध लहर लहरावे ॥
बिषधर* डसे लहरचढ़ि आवे।मनसुधिबुधिसबज्ञानहिरावे॥
यह अस समझ परा सब लेखा । स्वामी कहन दृष्टि से देखा ॥
जो कोइ कहे भाखि मन जीता । भूलि न मानूं बात अनीता ॥
ज्ञानी गुनी कहे कोइ जोगी । नहिं मानूंकहेलाखबियोगी॥
नट की कला खेल मन केरी । डारै पकरि पाँव में बेरी ॥
ज्यों सुपने में देख तमासा । यों बाँधे मन झूंठी आसा ॥

॥ दोहा ॥

इंद्री के वस में रहे, गहे न सतगुरु टेक ।
भेष जतन करि करि मरें, धरि धरि जन्म अनेक ॥

॥ चौपाई ॥

संतन के वस बरन सुनावे । तौ हिरदे के मन में आवे ॥
सूरति डगर डोर पद माहीं । उनकी अगम रीति अरथाई॥
उनका अंत संत कोइ पावे । अबिनासीगतिअगमलखावे॥
सुर नर मुनि गंध्रप और देवा । उनका अंत न पावे भेवा ॥
अगम अतीत तीत† से न्यारे । संतन की गति संत बिचारे॥
तुम्हरी कृपा समझ अस आई । दयासिंधु चरनन सरनाई ॥
मैं मतहीन दीन हूं दासा । बार बार चरनन की आसा॥
तुम दयाल मोहिं दृष्टि लखाई । जब मोरी बुधि ज्ञानमें आई॥

---

* साँप । † माया ।

॥ सोरठा ॥

हिरदे हरष बयान, स्वामी से बरनन करूँ ।
आगे को बर्तमान, बरन भिन्न मो को कहौ ॥

# मन की चाल घात

( तुलसीदास बाच )

॥ चौपाई ॥

मन का कूत भूत से भारी । इच्छा संग घुमावनहारी ॥
जो सतगुरु की सरना आये । सुरति डोर चरनन पर लाये ॥
संत चरन का भेद बताऊँ । सुन हिरदे तोको दरसाऊँ ॥
स्याम सेत के घाट निसानी । सुन हिरदे भाखूं सहदानी* ॥
संत चरन सूरत हुइ बासा । दृष्टि लाय नित करे निवासा ॥
जैसे महल चौक तिदुवारी । सैल करन को बैठक न्यारी ॥
जो नित नेम रखे वहि ठाँईं । मन इच्छा की नाहिं बसाई ॥
जल ओला गोला बँध गयऊ । घुल पानी वहि पानी भयऊ ॥

॥ दोहा ॥

जल ओला गोला भयो, फिर घुलि पानी होय ।
संत चरन गुरु ध्यान से, मन घुल जावे सोय ॥

॥ चौपाई ॥

सुनु हिरदे यह मन दुखदाई । या विधि जहर उतारे भाई ॥
और बात सँग हाथ न आवे । सतगुरु संत चरन लौ लावे ॥
करतब करि करि मुए अनेका । कोइ न पाया मन का ठेका ॥
मन थिर होय न एको बाता । जब पतियाय सुरति रँगराता ॥

* पहिचान ।

रिखी मुनी सब खाय नचाये। जोई बचे जेहिं संत बचाये॥
सिंगीरिषि* पारासर† जोगी। महादेव‡ भये ज्ञान बियोगी॥

*श्रृंगी ऋषि अकेले बन में रहते थे पवन का अहार करते थे और एक बार दरख़्त पर ज़बान मारते थे। राजा दशरथ के औलाद नहीं होती थी, बशिष्ट जी जोकि उनके कुल के परोहित थे उन्होंने कहा कि बिधि पूर्बक जग्य क्रया और होम होगा तब बेटा होने की उम्मेद हो सकती है और ऐसी क्रया सिवाय श्रृंगी ऋषि के और कोई नहीं करा सकता है। राजा दशरथ का हुक्म हुआ कि जो कोई श्रृंगी ऋषि को यहाँ लावेगा उसको हीरे जवाहिर का थाल भर कर मिलेगा। एक बेश्या ने कहा मैं ले आती हूं वह वहाँ गई देखा कि ऋषिजी बड़ी समाधि में बैठे हैं, जिस दरख़्त पर कि ज़बान लगाते थे वहाँ एक उँगली गुड़ की लगा दी। ऋषि जी ने जब ज़बान लगाई चाट लग गई पहिले एक दफ़ा ज़बान मारते थे उस रोज़ दो दफ़ा मारी दूसरे रोज़ तीन बार मारी इसी तरह रस बढ़ता गया और ताक़त आने लगी। वह बेश्या जो छिप के बैठी थी उसने हलुवा पेश किया तब थोड़ा थोड़ा हलुवा खाने लगे बदन जो दुबला था वह पुष्ट होने लगा ताक़त आई बेश्या पास थी सब कार्रवाई जारी होगई, दो तीन लड़के हुए। किसी बहाने श्रृंगी जी से बेश्या ने कहा चलो राज दरबार में यहाँ जंगल में लड़के भूखे मरते हैं बिचारे उसके साथ हो लिये। दो लड़कों को दोनों कंधों पर उठाया और एक का हाथ पकड़ा पीछे वह बेश्या चली। इस दशा में राजा दशरथ के दरबार में पहुंचे और वहाँ क्रया होम वग़ैरह की कराई। जब वहाँ किसी ने ताना मारा तब होश आया एक दम लड़कों को वहीं पटक के भागे और जाना कि माया ने लूट लिया।

†पाराशर ऋषि ने मछोदरी से नाव में भोग किया (यह स्त्री उन्हीं के बीज से मछली के पेट से पैदा हुई थी जो बीज गंगा में नहाते वक़्त ऋषि जी का किसी समय में गिर गया था और एक मछली ने खा लिया था) उस मछोदरी ने कहा अभी दिन है लोग देखते हैं तब ऋषि ने अपनी सिद्धि शक्ति से अँधेरा कर दिया आकाश में बादल आ गये। फिर स्त्री ने कहा मेरे बदन से मछली की बदबू आती है ऋषि ने बदबू को बदल के ख़ुशबू कर दिया। नतीजा इस संगम का यह हुआ कि ब्यास जी उस मछोदरी से पैदा हुए।

‡शिव जी जिन के पारबती ऐसी सुन्दर स्त्री थी उनको छोड़ के मोहनी

मोहनी छले ध्यान में जाई । संकर की बुधि काम जगाई ॥
पारासर पुत्री सँग भोगा । कामबानबसकरनबियोगा ॥
वाके गरभब्याससुतभइया ।जिनकीमातमछोदरिकहिया॥
सिंगी रिषिबन माँहिरहाई । मन उदवेग करा यों जाई ॥

॥ दोहा ॥

अन पानी की को कहे, लेत बृच्छ को चाट ।
माया प्रबल प्रचंड ने, आन बँधाई गाँठ ॥

॥ चौपाई ॥

और जगत की कहा सुनाऊँ । पसु पंछी नर नारि सुभाउ ॥
सब को करे काम बेहाला । मन दारुन यह काल कराला ॥
और कुसलकोइभाँतिनपावे । संत चरन मन में दृढ़ लावे ॥
वे दयाल जब दया बिचारें । सुरति जहाज से पार उतारें ॥
और उपाय करे बहुतेरा । नहिं कोइ पावे मन का डेरा ॥
भर्म चक्र चित चंचल घेरे । मारे बान आन मन फेरे ॥
बुधि मलीन सुधि एक नआवे । संका भाव अनेक उठावे ॥
नैन सुरख चित भंग रहाई । छावे आय अंग के माहीं ॥

स्वरूप माया का देख कर उसके पीछे दौड़े और जोश में बीज बाहर गिर गया (इसी बीज से पारा पैदा हुआ) जब देखा माया का चरित्र है तब अपने इष्टदेव को श्राप दिया कि जैसे हम स्त्री के पीछे दौड़े हैं वैसेही तुम भी दौड़ोगे—इसी से त्रेताजुग में राम औतार हुआ, सीता के पीछे बन बन दौड़ना पड़ा ।

॥ दोहा ॥

घटी बढ़ी कुछ नजर में, आवे न ज्ञान बिचार ।
जब तरंग उसकी उठे, ज्यों सलिता[*] धधकार ॥

॥ चौपाई ॥

मोह अपर्बल जग में भारी । ज्ञान बान लै लौ से मारी ॥
क्रोध पलीत[†] प्रचंड कहाई । यह तो मरे छिमा के माहीं ॥
कुमतिनारिमोहकीपटरानी । पाखँड पुत्र बड़े अभिमानी ॥
कपट वजीर मान मतवारे । डिंभी मत्र जुझावन हारे ॥
इनके संग लड़न को जोई । बिन गुरु बाँह हटेनहिंकोई ॥
आसा त्रिस्ना पुत्री दोई । अंतर बान चलावें सोई ॥
आसातजिनिरआस कहावे । तब इन से कोइ छूटन पावे ॥
यह उमराव फौज मनसाथा । कहोक्योंकरआवेयहहाथा ॥
राय बिबेक साज दल आवे । तौ कदाचि[‡] उन से टूट जावे ॥
ज्ञान निसान घुरे घट माहीं । सत की कला रहे उर छाई ॥

॥ दोहा ॥

बान बिचारे जुद्ध को, मन मनसा रनभूम्म ।
सब्द सिरोही[§] गुरुन की, ले फोड़ै घट कुंभ ॥

( हिरदे बाच )

॥ चौपाई ॥

यह तो मन का मर्म बताया । हिरदे के मन में सब आया ॥
संत बिना कोइ पार न पाई । यह अस मोर समझ में आई ॥
अब आगे भाखो बिरतन्ता । अंडा रचन कहो अर्थन्ता ॥

---

[*] नदी । [†] प्रेत । [‡] शायद । [§] तलवार ।

जो गति अगम संत अर्थाई । सो सब बरनि सुनाओ गाई ॥
प्रथम अकास कहाँ से आया । जासे अंड रचानी माया ॥
कहो कैसे महि पवन बनाया । आगे अंत कहाँ से आया ॥
जल औ अगिन कौन बिधि कीना । या का भाखो आदि अर्कीना* ॥
को है पुरुष कौन यह काजा । हिरदे को कहो कहाँ बिराजा ॥

॥ सोरठा ॥

यह सब बरन बयान, हिरदे के कारज कहो ।
जेहि बिधि भयो उपाय, पूरब† से उत्तर‡ गयो ॥

## आकाश की उत्पत्ति

( तुलसीदास बाच )

॥ चौपाई ॥

धुंधूकार रहे सुन माहीं । कइ जुग ऐसे बीति सिराई ॥
उठि इक सुन्न माहिं धधकारा । कड़का कुंभ पुरुष अधिकारा ॥
सब्द बिदेह लोक बिन काया । जब नाहिं हते निरंजन माया ॥
कुरम§ सेस नहिं अंड अकारा । जब का भाख सुनाऊँ सारा ॥
गोलाकार रहे जल माहीं । कहूं जेहि के आगे समझाई ॥
सब्द तेज से भयो अकासा । जस मेघा बादल में बासा ॥
घुमरे मेघ नजर में आवे । खुल मेघा वह वहीं बिलावे ॥
ऐसे सब्द अकास उपाई । ज्यों जल कजी‖ उपज हुई छाई¶ ॥

॥ दोहा ॥

धुंधूकार सुन में हता, सब्द अंड अधिकार ।
सब रचना पीछे भई, बीज बृछ बिस्तार ॥

* निश्चय । † सवाल । ‡ जवाब । § कछुआ । ‖ काई । ¶ नाश हुई ।

( हिरदे बाच )

॥ चौपाई ॥

हे दयाल यह समझ सुनावो । हिरदेको कहि कर अरथावो॥
हे स्वामी यह अकथ अदेखा । कहा जानूं मैं यहि कर लेखा॥
जुग जुग में रहुं सरन तुम्हारे। आन मिले बड़ भाग हमारे॥
करनोकौनकौन अधिकारी । कृपा चरन पर मैं बलिहारी ॥
आदि अकास सब्द से आया। ऐसे तुमने भाख सुनाया ॥
गोलाकार कुंभ को बाता । सो समझायकहोबिख्याता ॥
याकीकहनसमझनहिं आई । सोसतगुरुमोहिंकहैाबुझाई॥
यह कोइ बात भेद कहँ पावे । संत बिना कहो को दरसावे ॥

॥ दोहा ॥

गोलाकार अकास का, भाख्यौ कुंभ बखान ।
तिन बयान बर्नन करो, हिरदे की मन जान ॥

( तुलसीदास बाच )

॥ चौपाई ॥

कहे तुलसी तेरे हृदै न आई । यह तो कहन कहन में नाहीं॥
मन का अंत मिले नहिं भाई । संत अंत गति क्योंकर पाई ॥
यह तोरे कारन कर गाऊँ । जाका रूप रेख नहिं ठाऊँ ॥
नाम न ठाम गाम नहिंकाया। है अदेख की बात अकाया ॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस न जाना । बेद पुरान नहीं पहिचाना ॥
दस अवतार भेद नहिं पावे । जग अँधरे को कौन सुनावे॥
अब सुन याको भेद बखाना । संत चरन से महुं पुनि जाना॥
यहअतोल को तोल सुनाऊँ । जहँनहिंबोलबचनअर्थाऊँ ॥

॥ दोहा ॥

अगम पुरुष बेअंत का, संत सुनावें बैन ।
कहन कहूं समझाय के, हिरदे को सुख चैन ॥

# रचना का भेद

॥ चौपाई ॥

जबनहिंसब्दख्यालऔरस्वाँसा । जबका भेद कहूं परकासा ॥
धुंध अनेन सब्द इक हूआ । ज्योंअगिनीअंदरसेधूआँ ॥
धूआँ का इम्मर बँध गइया । असअकाससब्दसेभइया ॥
मधि अकास से स्वाँसा आई । धम्मन[*] ज्योंलोहारकीनाई ॥
जैसे चाम उठै कर माहीं । निकसेपवनउसीकीराही ॥
यों अकास से पवन पिछाना । सूरतवंत लखे धरि ध्याना ॥
यह सब सता[†] सुरत की जानी । पूरब से उत्तर सहदानी ॥
सूरति तन मन माहिं समानी । जड़ चेतन सृष्टी ले आनी ॥

॥ दोहा ॥

धुन्धकार सुन सब्द यह, सुरत किया बिस्तार ।
यह अकास यों सुरत से, स्वाँसा निकर निहार ॥

॥ चौपाई ॥

षोड़स कला सुरति से भयऊ । तामें एक निरंजन कहेऊ ॥
सूरति नाम आत्मा सोई । सो अंदर हेरा नहिं कोई ॥
कला एक से कुम्भ कहाया । एक कला गोला उपजाया ॥
गोलाकार भया इक अंडा । सूरत मद्ध भास ब्रह्मंडा ॥
जड़ अकास जब चेतन भयऊ । चेतन तन में पवन चलयऊ ॥

[*] धौंकना । [†] कुदरत ।

पवन अकास मिले जब भाई । यह दोनों अगिनी उपजाई॥
कुंभ प्रसेव^ कीन्ह समझाऊँ । उपजा यों जल तत्त प्रभाऊ॥
दूध तपे जस पड़े मलाई । यों पानी पर पृथवी छाई ॥

॥ दोहा ॥

गोलाकार अकार में, पाँचो तत्त समान ।
सब रचना ऐसे भई, यों यह अंड बिधान ॥

॥ चौपाई ॥

सूरत आतम सूर्य कहाई । सो प्रतिबिंब पड़ा घट माहीं ॥
जैसे घड़ा नीर से भरिया । सूरजकाप्रतिबिंबजोपरिया ॥
ऐसे आतम देह समाना । अंदर में कोइ देख न जाना ॥
बाहर कीन्हा भास प्रकासा । सो करे मन इंद्री में बासा ॥
नाद बिंद कीन्हा बिस्तारा । ऐसे रचि संसार सँवारा ॥
चरअरुअचरचराचरखाना ।गुनमनमिलिपसुपंछिनसाना॥
यों बिस्तार भई जग माया । बंधन भये जन्म जिव काया ॥
कोइनहिंभेद उधरकापाया । बार बार भव में उरझाया ॥

॥ सोरठा ॥

सुनु हिरदे यह भेद, रचना की बिधि यों भई ।
जुग जुग रही अचेत, सुरत बिसारी आदि की ॥

॥ छंद ॥

हिरदे अतंत अतोल की गति, खोल कर तोसे कही ।
जो जो अगम गति संत ने, लख देख कर भाषे सही ॥

^* पसीज ।

कोइ हंस होय बिचारि बानी, बिमल पद पंकज गही ।
दृढ़ सुरत डोर अपोढ़ पुर धुर, आदि गुरु चरनन रही ॥
कहुं क्या कँवल दल पार प्रीतम, परसि पद पारस भई ।
जहँ कोटि भानु प्रकास पद हद, हेरि जद जुगती लई ॥
जुग जुग अमरपुर बास बस अस, पुरुष ने बाचा दई ।
तुलसी दयानिधि पुरुष बिन मैं, श्रौर को मानूं नहीं ॥

॥ दोहा ॥

जगमग अंदर में हिया, दिया न बाती तेल ।
परम प्रकासिक पुरुष को, कहा बताऊँ खेल ॥

( हिरदे बाच )

॥ चौपाई ॥

हे स्वामी मोहिं अगम सुनाई । आदि अनादि नजर में आई ॥
बरनन एक श्रौर समझावो । कर्मकला मोहिं भाष सुनावो ॥
कैसे जीव कर्म बस डारा । जाका कहो मोहिं निरवारा ॥
कर्म की आदि अंत दरसावो । जीव बँधा जस मोहिं समझावो ॥
जीव केही घर बासा कीन्हा । कर्म कांड कैसे चित दीन्हा ॥
कहो किन कौन बँधाई आसा । कस कस जीव कर्म में फाँसा ॥
कर्म भूमि का कौन ठिकाना । क्योंकर यह यहि में लपटाना ॥
आदि अनादि भेद कस भूला । यह परबस होइ करस हे सूला ॥

॥ सोरठा ॥

रचि रह्यौ कर्म करूर*, मूर दियो बिसराय के ।
भटक भटक भरमाय, जाय नहीं घर आपने ॥

*दुखदाई, दारुन

# कर्मों का हिसाब

( तुलसी दास बाच )

॥ चौपाई ॥

तब तुलसी बोले यहि भाँती । रचना के सँग कर्म सनाती* ॥
कर्म बिना जिव रहन न पावे । रचना में योंकर कर आवे ॥
परथम अंस पुरुष से आया । यह यहि संग लगाई माया॥
माया पर बस भया अधीना ।यासेआपअपननहिंचीन्हा॥
सतगुरु का इन भेद न पाया । बार बार भव में भरमाया ॥
संतन की बानी नहिं चीन्हा । जा से जग में रहे अधीना ॥
अंस आदि से निर्मल आया । ज्यौं धोये कपड़े की छाया ॥
निरमल रहि जग रहन न पावे। मल के संग सहज उरझावे॥

॥ दोहा ॥

उजला आया वतन† से, जतन किया कर काल ।
चाल भुलानो आपनी, यों भये बंधन जाल ।।

॥ चौपाई ॥

धोया तो घर में से आया। बेद बाँधि कर्मन में लाया ॥
तपऔरजोगभोगबतलाया । यह कारन में जीव लगाया ॥
तप के फल राजेसुर भोगी । जोगज्ञानमनगुनभयोरोगी ॥
और उपासना नेम बिहारा । या बिधिसे जिवबाजीहारा॥
करनी ने जिव को बौराया । कर्म कांड करके उरझाया ॥
अबनिकसनकीगलीनपावे । जन्म जन्म जिव भटकाखावे ॥

* सदा से । † घर ।

सतसँग भाग मिलैकहुंआई । तो मन साँच न आवे भाई ॥
जो कोइ कर्म कांड बतलावे । जाकी साँच समझ मन लावे ॥

॥ दोहा ॥

लाख बात करके कहे, नहिं माने गुरु बैन ।
चैन कहो कहँ से मिले, समझे न सतसँग कहन ॥

॥ चौपाई ॥

रिषी मुनी तप कारन कीन्हा । यहसबज्ञानकर्मकोचीन्हा॥
तप करके सब राजस पाये । राज भोगकर नरक सिधाये॥
औ यह राम रहे अवतारा । कर्मकांडमनउनहुंबिचारा॥
इन की यह रामायन माहीं । सुनुहिरदेतोहिसाखसुनाई॥
राम सिया कह कानन* जोगू । कर्म प्रधान सत्त कहे लोगू ॥
अस बोले रघुबंस कुमारा† । बिध‡ का लिखा कोमेटनहारा॥
कर्म प्रधान बिस्व§ रच राखा ।जोजसकियासोईफलचाखा॥
ऐसे साख पुकारे बानी । पढ़करकेकोइनहिंपहिचानी॥

॥ सोरठा ॥

हिरदे कर्म बिषाद‖, बाद जन्म ऐसे गयो ।
रह्यौ जुगन में साथ, हाथ पकरि आवै नहीं ॥

॥ चैापाई ॥

कौन कौन से कर्म बताई । हिरदे जिव चैारासी माहीं ॥
अंडजपिंडज उष्मजखाना । सब पर भयो कर्म परधाना ॥
नर नारी की कैान चलाई । यह बँध रहे खबर नहिं पाई ॥

* बन । † राम । ‡ ब्रह्मा । § संसार । ‖ दुखदाई ।

यहि कर्मन ने बंधन कीन्हा। जलबिनरहे तड़पजसमीना* ॥
जल छूटे पर प्रान गँवाई। यह अस दसा रही उर छाई ॥
जेकोइज्ञानसमभ्रतलावे। सो हिरदै में नेक न लावे ॥
जेहिंचरचासुखकीसमझावे। निज देही में नींद सतावे ॥
आलस कर आसा ने मारा। कैसे होय जीव निरवारा ॥

॥ दोहा ॥

हिरदे सतसँग में रहे, ऊँघे सुन कर कान।
हानि लाभ चीन्हा नहीं, कहा जाने परमान ॥

॥ चौपाई ॥

निद्रा आलस कर परभाऊ। यह पूरबले कर्म सुभाऊ ॥
जेहिबिधिअमलदारजगमाहीं।उठिगयाअमलउदासीछाई।
ऐसे पूरब जोग की रीती। अमल उठे कर्म करे अनीती ॥
आलस नींद सुभाव उठावा। और तरह कछु चले न दाँवा ॥
मन में नेक बसन नहिं पावे। जासे मन उद्बेग उठावे ॥
और उपाय लगे नहिं कोई। तो यह बुद्धि अनेकबिगोई† ॥
मन को भर्म उचाट उठावे। मनछिनएकटिकननहिपावे॥
ज्ञान बैराग कहै बहुतेरा। तौ मन नहिं आवै वहि केरा॥

॥ दोहा ॥

कर्म भाव बिष ब्याध की, सुनै समझ सुख पाय।
हाय कधी आवे नहीं, क्योंकर संग समाय ॥

---

* मछली। † बहका देना।

॥ चौपाई ॥

रस की लहर बसै मन साँचे । और लहर मन कधी न राचे ॥
अपनी बुधिमत ज्ञान बिचारे । सतसंग समझ कधी नहिं धारे ॥
सतसँग का रस पियन न पावे । परख प्रमान और बिधि लावे ॥
जिन के इभटक भाव दृरसाया । नाँगे पाँव फिरे मन धाया ॥
यह बंधन का करे बिबेका । कस कस पावे मन का ठेका ॥
जो कोइ लाख कहे उपकारी । आवे न मन में बात करारी ॥
मन सतसँग से उचटा चावे । बुधि जड़ यह बिपरीत उठावे ॥
लाभ घटी बूझै नहिं भाई । यह सब पुरब जोग अधिकाई ।

॥ दोहा ॥

सतसँग में मन ना बसे, फंसे कर्म के माहिं ।
खाय बिषय बिस्वास यह, नहिं कोइ पियत अघाय ॥

॥ चौपाई ॥

मन तन रस को पल पल धावे । इंद्री के रस को सुख चावे ॥
फीकी नीकि चिकन कडुवाई । षट रस भोजन माहिं मिठाई ॥
इंद्री भोजन भोग बिलासा । यह मन में उपजे बिस्वासा ॥
राग रंग नित सुने बिलासा । आवे न नींद रात भर पासा ॥
कोउ सत संग भोग से पावे । तौ सई साँझ नींद भर आवे ॥
भोजन करे पेट भर भाई । तौ घर नींद कौन के जाई ॥
यह रह सब मन जीव भुलाना । निसदिन रहे गहे नहिं काना ॥
मर्म उठे नहिं कैसे भाई । इंद्री मन मिलि मौज बसाई ॥

॥ दोहा ॥

इंद्री सुख रस रीति में, बिलसत जनम सिराय ।
कहा कहूं अज्ञान की, नेक न मन सरमाय ॥

॥ छंद ॥

मन बिषम यह बिष बाद के बस, समझ कर थिर ना रहे ।
रस भोग सोग सुनाय कहे कोइ, तुरत उदमद* में बहे ॥
कोइ नीक फीक बिचारि बंधन, यह समझ सुध ना लहे ।
पल पल परख रस रीति सुख यह, दुख समझ निस दिन दहे ॥
सतगुरु दया निज बिमल बातें, समझ सुधि बुधि ना गहे ।
कर्म कांड बेद बिचार बानी, समझ के साँची कहे ॥
नर को बदन बिस्वास करिके, बेद सँग बादै बहे ।
सतसँग बिना नहिं साँच पावे, कर्म के बंधन सहे ॥
हिरदे अपर्बल बात मन की, ठान जो अपनी ठहे ।
तुलसी तरक† कोइ साध के सँग, रँग लगे तब ना डहे ॥

॥ सोरठा ॥

हिरदे मन की रीति, चित्त न सोचे आपने ।
भव भर्मन की प्रीति, कोई कहन माने नहीं ॥

(हिरदे बाच)

॥ चौपाई ॥

स्वामी यह सब बरनि सुनाई । आगेकीकहोसमझबताई॥
यहमनकोबिषरस बस कीना । यासेभया भँवर मति हीना॥

* मस्ती । † बहस मुबाहसा ।

पोहप बास मन रहन समाई । जासेसुधिअपनीनहिंपाई॥
बिषय बासना में मन राता । जासेपकरि न आवे हाथा॥
यहसबसमझिसमझिलखलीन्हा। आगेकोकहोकैसेकीन्हा॥
चार लाख चौरासी धारा । कौन कौन कस कर्म सिहारा॥
खानि खानि का न्यारा भेदा।सो भिन्नभिन्नकरिकहोनिषेदा
करनी कौन कर्म मन काया। कहोकोकोकेहिंखानरमाया॥

॥ दोहा ॥

कौन कौनि करनी करी, फल तन पाया आय।
जो जो जस बंधन बंधे, भिन भिन कहो अर्थाय॥

## जन्म मरन की पीड़ा

( तुलसीदास बाच )

॥ चौपाई ॥

सुनु हिरदे मैं कहा बताऊं । जीवविपतितोकोसमझाऊं॥
चार खान जीवन की होई । जामें सुखी न देखा कोई॥
जन्ममरन क्या कहूं अलेखी । पूछै कही जाय नहिं एकी॥
जन्मत गर्भ माहिं का लेखा। जरते जठर* अगिन में देखा॥
ज्यों कीड़े मोरी के माहीं। तड़पत जेठ तपन में भाई॥
छटपट करे तपत रहे पानी। येही दसा गर्भ में जानी॥
जन्मत जीव जबर दुख भारी।बाहरकीकहूंबिपतिबिचारी॥
जोनी संकट की सुनु भाई । रहे नौ मास नरक के माहीं॥
उलटे गर्भ रहा लटकाना। औंधे मुख मल मुत्र समाना॥

* पेट।

॥ सोरठा ॥

मुख उलटे लटका रहे, गर्भ बास के माहिं।
कहा कहूं दुख अंत को, जाने भोग समान ॥

॥ चौपाई ॥

जन्मत बालपना दुखदाई। सुधिबुधिज्ञानसमभ्फनहिंपाई॥
तरुन रहे तरुनी संग भोगा। बृद्ध भये तब बाढ़े रोगा॥
ऐसे यह तीनों पन बीता। नेक न जानी साहब रीता॥
अब मरने का सुनो संदेसा। प्रान गये पर किया अंदेसा॥
अब क्या होवे बात बिचारे। नर बाजी जूवा में हारे॥
घर बाहर से काढ़े डेरा। फिर नहिं आन किया नर फेरा॥
कर्म जोग जोनी भरमाये। कर्म किया सोई फल पाये॥
जब नहिं चेते मूढ़ गँवारा। बिगरे पै क्या करे बिचारा॥

॥ दोहा ॥

अब समझे से का भयो, चिड़िया चुंग गइ खेत।
चेत किया नहिं आप में, रहे कुटुंब के हेत॥

# सतगुरु और सतसंग बिना छुटकारा नहीं हो सकता

( हिरदे बाच )

॥ चौपाई ॥

जब हिरदे बोले यह बैना। दुखसुखभोगकर्मकाकहना॥
या बिधि जीव रहे जड़ताई। बिन सतसंग राह नहिं पाई॥
यहमोहिंसमभ्फपड़ीसहदानी। स्वामी के कहने से जानी॥

यह भवसिंधु पार नहिं पावे। सतगुरु मिलें तो पार लगावें॥
बिन गुर ज्ञानभया मतहीना। क्योंकर परे आप घर चीन्हा॥
सतगुरु मिलें न सतसँग पावे। क्योंकर बात हाथ में आवे॥
जग की रीति लगे मन मीठी। अंजनबिनाआँखनहिंडीठी॥
जब कोइ खोज करे मन लाई। संतन की संगत में पाई॥

( तुलसीदास बाच )

॥ सोरठा ॥

वे गुरु दीनदयाल, करें निहाल जो दीन होय।
जग बस बंधन काल, भाल* लिखन मेटें सही॥

॥ चौपाई ॥

हे हिरदे अस हृदय बिचारे। जो तैं कही समझ सोइ धारे॥
संत चरन में सूरति राखे। सतगुरु सब्द कहन अस भाखे॥
जो सब्दन में करे बिबेका। तो सतगुरु का पावे ठेका॥
छलतजिप्रीतिजोकरेहमेसा। तो वे काटें काल कलेसा॥
अंतर साँच रहे मुख बैना। सतगुरु संतबचनक्या कहना॥
या बिधि से सत सुरति लगावे। भव जल पार उतर के जावे॥
कोई बिषाद† न रोके भाई। आद अरु अंत साध समझाई॥
या बिधि समझ करे निरवारा। कोइ न उनका रोकनहारा॥

॥ दोहा ॥

तन मन से साँचे रहे, गहे जो सतगुरु बाँहि।
काल कधी रोके नहीं, देवे राह बताइ॥

*माथा। †कष्ट, बिघ्न।

जैसे नाव नदी के पारी । केवट* वा को देत उतारी ॥
जैसे जहाज समुंदर माहीं । वार पार सहजै उतराई ॥
सतगुरु केवट मिलें दयाला । रोके न काल जबर जम जाला ॥
मन होय लीन दीनता पावे । मरजीवा[1] मोती ले आवे ॥
पैठे माहिं समुंदर केरे । जो सतगुरु चरनन को हेरे ॥
जाने जोई संत गति प्रीती । हिरदय में नहिं रहे अनीती ॥
सुरति सिरोमन चरन लगावे । जब संतन की गति को पावे ॥
जैसे बनिज करे बेपारी । मूर रहे पर नफा बिचारी ॥

॥ सोरठा ॥

सौदागर का ज्ञान, माल दिसावर से भरे ।
करे नफा से भाव, घटो जानि बेचे नहीं ॥

( हिरदे बाच )

॥ चौपाई ॥

हे स्वामी अगम कोइ कहिया । सतसँग कर हम कछु न पइया ॥
सतसंग करन बहुत दिन कीने । देखा न नजर नैन से प्रीते ॥
यह सतसंग कस कस गोहरावा । वाके तो कछु हाथ न आवा ॥
याका भर्म भया मन माहीं । यह संसै स्वामी समझाई ॥
कैसे मन ने मन को रोका । याका समझ मिटावो धोखा ॥
सतसंग की महिमा कहें भारी । कहो जो समझ परै अधिकारी ॥
कहो जो कहा कौन उन कीन्हा । सतसंग से उन लाभ न लीन्हा ॥
क्यों कर के सतसंग न पाया । कैसे वाको बोध न आया ॥

*मल्लाह । [1]समुद्र में डुबकी लगाकर मोती निकालने वाला ।

॥ दोहा ॥

कौन बात कीन्हा नहीं, कैसे न बोध समान ।
ज्ञान रतन कहो कौन सा, सो न परा पहिचान ॥

॥ छंद ॥

हिरदे कहे गुर ज्ञान स्वामी, कस न बोहि हिय में भयो ।
अस कौन बात बिवेक तन मन, आप में खाली रह्यो ॥
कोइ समझ सोध न बोध कीन्हा, गुरु भटक मन से गयो ।
कोइ भाँति बरन बिचार कारन, बूझ बिन लै ना लयो ॥
कहो कौनि बिधि बिस्वास मन से, दिल बिकल है नहिं सह्यौ ।
कोइ कहन में नहिं कान दीन्हा, यह कहो कैसे भयो ॥
याको कहो बरतंत मोसे, संग में मन ना दियो ।
तुलसी तरक* मन माहिं अचरज, कौन बिधि मोटो कह्यो ॥

॥ सोरठा ॥

हिरदे कहत सुनाय, स्वामी यह मो से कहो ।
कर्मन के बर्त्तमान, की कोइ और उपाय से ॥

## सतसंग से लाभ कितनों ही को क्यों नहीं होता

( तुलसीदास बाच )

॥ चौपाई ॥

तुलसीदास कहे सुनु भाई । तोको बचन कहूं समझाई ॥
जीव अनादि काल से आया । जन्मजन्मकर्मकीट† लगाया ॥

---

* संसय । † मैल की काई ।

लोहा को काई खा जावे । कीड़ा लगे काठ घुनि जावे ॥
जैसे असल सिरोही* होई । लगे मोरचे माहिं बिगोई ॥
जस ओला घुल पानी होई । असजिवआपअपनपौखोई ॥
कर्म कराल बड़ा अधिकारी । सूरत पर मन करे सवारी ॥
विष बंधन मन करे बिहारा । गाँठ बाँध चेतन जड़ डारा ॥
मनमलीनसुधिबुद्धि हिरानी । कहु वह सतसंगकोकाजानी ॥

॥ सोरठा ॥

जैसे अपढ़ अज्ञान जो, पढ़े जो पोथी जाय ।
अच्छर की सुधि बुधि नहीं, नाहिं उस अरथ प्रभाव ॥

॥ चौपाई ॥

ऐसे उन सतसंगत कीन्हा । भोजनलोभमाहिंमनदीन्हा ॥
जबलगस्वादमिलामनमाहीं । तब लग संग करा उन जाई ॥
राह रकाना एक न बूझे । कहो कैसे आँखी से सूझे ॥
भरे पेट जो खाय अघाई । सोवे सईसाँझ से जाई ॥
बैठे गाल फटाका मारे । मन मौजी को नाहिं सम्हारे ॥
जन्म जन्म का उरझा सूता† । को सुरझाय सके मजबूता ॥
करनी करे आप को सोई । की सतगुरु के सरनै होई ॥

॥ दोहा ॥

की अपनी करनी करे, की गुरु सरन उबार ।
दोनों में कोइ एक नहिं, नाहक फिरत लबार ॥

---

* तलवार । † सूत ।

॥ चौपाई ॥

डावाँडोल बोल मन केरा । सो क्या पावे जीव निबेरा॥
संत चरन पर प्रीति बढ़ावे । तो उन से उपकारी पावे ॥
दीन देखि के करें निबेरा । जो कोइ साँचे मन से हेरा ॥
संतन को चीन्हब बड़ि बाता। छल बल दाँव चलावें हाथा ॥
जो करनी में देखन चावे । भटकत जन्म नजर नहिं आवे॥
उनके रीति रकाने भारी । तैं का जाने चीन्हि अनारी ॥
बेद नेत उनको गोहरावे । अवतारी कोइ भेद न पावे ॥
तिरदेवा नहिं पावें अंता । परखि न परें लखन में संता॥

॥ दोहा ॥

कोइ सतसँग करके लखे, सज्जन सुमन बिचार ।
दीन गरीबी रहनि जो, मन से बैठे हार ॥

॥ चौपाई ॥

हे हिरदय मन के जो ऐसे । सो लख पावें संत सदेसे ॥
रहनी और करनी में नाहीं । जो खोजे सो रहे भुलाई ॥
कधी इक करें अज्ञानी काजा । कधी सभा में ज्ञान बिराजा॥
कधी इक बड़े ज्ञान के राजा । कधी मूरख अज्ञान समाजा ॥
कहो को उनको परखे भाई । पारख परख लखन में नाहीं॥
यह क्या परखे जीव बिचारा । सतसँग के बिन सार असारा ॥
जोई कदाचित भाग से पावे । तो अपने मन साँच न लावे॥
कई तकरीरें कहन उठावे । या बिधि उनका भेद न पावे॥

* जल्द ।

॥ दोहा ॥

जो उपाय छल से करे, मिले न उनका भेद।
फेर जुगन जुग में सहे, उन गति अगम अभेद॥

॥ चौपाई ॥

जो कोइ कहे संत को चीन्हा। तुलसीहाथकानपरदीन्हा॥
कोइ कोइ सज्जन हैं बड़ भागी। जिनकीसुरतिचरनमेंलागी॥
वे परखें गति अगम सनेही। जो मिथ्या जग जानें देही॥
नर-पसुवत जग माहिं घनेरे। सो का जानें जम के चेरे॥
हिरदे मोसे कही न जाई। यहजिवकुटिलबड़ाअन्याई॥
जो याकी करनी दरसाऊँ। तोजगकागजस्याहीनपाऊँ॥
इन अपनी सुधि कबहुं न पाई। आद अरु अंत रह्यौ भर्माई॥
खोटे जन्म कर्म कर बीता। ऐसइ रहा हाथ से रीता॥

॥ दोहा ॥

यह अज्ञानी जीव की, क्यों कर करूँ बखान।
अपनी बुद्धि बिकार की, करे न मन पहिचान॥

॥ चौपाई ॥

इतनी नजर कहाँ से आवे। बाहर भीतर को कस पावे॥
सतगुरुको कहो कहा पिछाने। कहो यह बुद्धि कहाँ सेआने॥
जग धंधे में जन्म बिताया। साँझ पड़े घर अपने आया॥
भोजन करिके खाट बिछाई। पौढ़े पाँव पसारे जाई॥
ऐसे जन्म गयो सब बीती। कस आवे सतसँग की रीती॥

जक्त भेष दोउ आहिं अनारी। यहबँधेमायामोहकीजारी*॥
सुपने सतसँग कबहुं न पावे। इनको कहो कैान समझावे॥
हिरदे कौन जिकर मन लागे। इनको देख दूर मन भागे॥

॥ दोहा ॥

यह जग जीव अनादि से, भटकत फिरे निकाम।
काम बान† मन में बसे, जुग जुग से भरमान॥

॥ चौपाई ॥

कइमतिकेबहुभाँतिबिकारा। लोक न बनेपरलोकबिगारा॥
केहिकेहिभाँतिपड़ाजमघेरा। अरु दूजे यह चले अनेरा॥
कौनभाँति कहूंयाकी रीती। अपने बस नहिं चूके अनीती॥
सतसँग में कैसा होइ जावे। कैसी बिरह बात समझावे॥
ज्यों ठग ठगन करे ठगियाई। मारे माल लेन के ताँई॥
ज्यों बैपारी माल खरीदे। सौदा लोभ माहिं मन बीधे॥
रोकड़बाँधि कमर के माहीं। चौकस करिके माल बिसाही‡॥
उथलपथलकरकीन्हासौदा। अपनी नजर देख मन बोधा॥

॥ दोहा ॥

या बिधि सतसँग में करे, रोकड़ कम्मर बाँध।
चाँद सुरज जहँ लगि रहे, कभी न आवे हाथ॥

॥ चौपाई ॥

माँगे माल संत से आँधे। जैसे कम्मर रोकड़ बाँधे॥
खिजमतनहिंकछुखरचेदामा। सहजसंतकामाल निकामा॥

---

* जाल। † एक लिपि में "बान" है दूसरी में "बाम", बान—तीर; बाम—स्त्री। ‡ मोल ले।

सभी महात्मा कठिन बतावें। यह जाने अस माँगे आवे ॥
यों बुधिहीन करे लड़िकाई । यह तो मिले मेहर के माहीं॥
ज्यों जल भरा सिंधु के माहीं । तोला चहे तोल में नाहीं॥
गगरी जो अपनी भरि लावे ।याबिधिपानीप्यासबुझावे॥
अस संतन मति तुले न भाई। है अतोल तोलन में नाहीं ॥
जो गगरी जल जीव बिचारे । संत कृपा से कारज सारे॥

॥ दोहा ॥

सिंधु अथाह न थाह कहिं, मिले न वाका अंत ।
भटक भटक भव पचि मरे, को गति पावे संत ॥

॥ छंद ॥

सिंधु अगम अथाह जल को, अकल कर तोले तुही ।
ऐसे अगम गति संत की, आगे नहीं ऐसी हुई ॥
कोइ कहे परख पिछान मैं, सोइ गिरि पड़े माहीं भुंई* ।
खोटे करम मन भोग करि, जस बस्त्र को सीवे सुई ॥
जो संत से आधीन होय, जब कर्म की आसा मुई ।
जिव काज कारज की कहूं, नर जाय जो ममता धुई ॥
भव सिंधु से केहि भाँति कढ़ जिव, जक्त यह औंधी कुई ।
तुलसो तरक मन तोल के, जब छूटि हैं गाँठै गुई† ॥

॥ दोहा ॥

संतन से माँगे नहीं, घट घट जाननहार ।
जीव दया हिरदय बसे, नाहक करत बिचार ॥

---

*धरती । †गूढ़ ।

॥ चौपाई ॥

मन सूरत चरनन में लागी । वे हैं हिरदे संत अनुरागी॥
उनका बार बंक* नहिं होवे । वे नित पाँव पसारे सोवें॥
जैसे साँड़ दगे जग माहीं । उनको जग कोइ पूछे नाहीं॥
मोहर छापकागजपरलागी । रुके न जीव सुरत बड़भागी॥
जो कोइ संत सरन के दागी । जिन से काल दूर होइ भागी॥
जमकीजालनिकटनहिंआवे। मारगछाँड़िअलगहोइजावे॥
साँचे मन आवे बिस्वासा । संत चरन नहिं दूजी आसा॥
जिनकेभर्म निकट नहिं आवे । एक आस बिस्वास समावे॥

॥ दोहा ॥

संतन की साखी सभी, देत जुगन जुग ज्ञान ।
सतसँग करिके बूझि ले, करत सभी परमान ॥

( हिरदे बाच )

॥ चौपाई ॥

कह हिरदे यह सच कर भाखी। कहेअससुनीसबनकीसाखी॥
अब वह कथा कहो बिस्तारी। चार खानि में जीव दुखारी॥
जस जस कर्म जीव ने कीन्हा। सुनकर आवै हृदय अकीना॥
कर्म जक्त में बहु परकारा । जसजिनकीकरनीबिस्तारा॥
जो जिन कर्म किये हैं जैसे । सो तिन ने फल पाये कैसे॥
यह भवसिंधु बड़ा दुखदाई । कौन कर्म केहि खान समाई॥
इच्छा सँग दुख देवनहारी । रहे नाहिं ढिंग ज्ञान करारी॥
तन धर के दुख सहे अनेका । जो जस कहो खानि का ठेका॥

* टेढ़ा ।

॥ दोहा ॥

कौन कर्म किन ने किये, करनी के परभाय ।
जौन जीव जेहिं खानि में, पड़े कहो समझाय ॥

## सज्जन और असज्जन का भेद

( तुलसीदास बाच )

॥ चौपाई ॥

सुनु हिरदे भवसिंधु अपारा । याका नहीं वार अरु पारा॥
ज्यों दरियाव माहिं है सोई । मोती संख सीप सब होई॥
ऐसे जग जिव को पहिचानो । मोती संख सीप सम जानो॥
कोइ मरजीवा मोती पावे । कोइकोइहाथसंखचढ़िजावे॥
कोइ सनीप सीप ही पावा । अस अस न्यारे जीव प्रभावा॥
मोती की कीमत है भारी । संख सीप की कहूं बिचारी ॥
सुभ के कर्म संख सम जाना । जोई असुभ हैं सीप समाना॥
नहिं नर जग में एक समाना । मोती संख सीप यों जाना॥

॥ दोहा ॥

मोती सज्जन को कहें, संख असज्जन जान ।
ज्यों कनिष्ट* सीपी भई, ऐसे परख पिछान ॥

॥ चौपाई ॥

सज्जन की सूरत मतवारी । उनकी रीति जक्त से न्यारी॥
सज्जन सतसँग संत सुहावे । सूरत उनकी अंत न जावे॥

* छोटी ।

जो कोइ जीव जक्त में ऐसा । कधी न पावे कर्म कलेसा॥
संतन की बानी अस बोले । जो कोइ जीव समझ में तोले॥
सुनो असज्जन का ब्योहारा। करनी बुद्धि कहूं अनुसारा॥
साँच झूंठ नहिं परखे बैना । अपनी बुद्धि समझ का कहना॥
उलटै बात बचन नहिं बूझे । सो अज्ञान ज्ञान नहिं सूझे॥
अपनी बुद्धि अधिक करि जाने। सतसँग का बिस्वास न माने॥

॥ दोहा ॥

कुटिल बचन बोले सदा, कधी न माने हार ।
धार बहो बहु फिरत है, कर्म कुमति अनुसार ॥

॥ चौपाई ॥

और असज्जन का सुनु बैना । फूहर बचन बाक मुख कहना ॥
कहे अनीती अधम अनारी । गुन के हीन जक्त संसारी॥
जो कहुं जाति पाँति में जावे । अड़बंगी इक बात चलावे॥
बचन उलटि के अपनी ठाने। हलुकी गरू* नाहिं पहिचाने॥
सभा माहिं मसकरी† चलावे । ज्यों मद पिये खुमारी आवे॥
चाल चले छाती उचकाये । टेढ़ी पाग छोर लटकाये॥
एड़ी बेड़ी कहे बनाई । कुल मरजाद ऊँच ठहराई॥
घाटि‡ करन को चूकत नाहीं। घट में घाटि बसे मन माहीं॥

॥ दोहा ॥

कूड़ कुमति में गरक§ है, फरक न माने एक ।
जो कोइ अक्किल की कहे, उरझे उलट परेत ॥

*भारी । †ठठोली । ‡घात । §डूबा हुआ ।

॥ चौपाई ॥

अच्छी सुन कूकर सम भूंके । खोटी कहत नेक नहिं चूके ॥
अच्छी में लज्जा ले आवे । छोड़े लाज बुरी को धावे ॥
जो कहुं जाय बजारे भाई । हाट हाट पर हाँसी लाई॥
फिरते फिरे चिकनिया जैसा । सेखी बड़ी गाँठि नहिं पैसा॥
जो पैसा होय हिर्स बढ़ावे । मैली बात समझ मन लावे॥
नहिं नगीच नीके के जावै । फोक फरेब* करन को चाहै॥
माल पराये को दिल दौड़े । घूमे कुफर बात में बौरे॥
ऐसे मलिछ बिषय के मूरा । बाँधे सदा धूर के पूरा ॥

## असज्जन अंडज खानि में उतर जाते हैं

॥ दोहा ॥

अपकीरति जग में बढ़ी, सब सिर डारे धूर ।
लाज कधी आवे नहीं, साँचो कहे न मूर ॥

॥ चौपाई ॥

यह तो ऊपर जग ब्योहारा । मन अंदर का सुनो बिचारा॥
मन इच्छा सँग साथ चलावे । इच्छा मन सँग तरँग उठावे॥
जहँ मन लगे तहाँ तन जावे । मनमनमिलेमिलापकहावे ॥
जैसे नदी लहर की लहरी । जैसी बास चले मन केरी ॥
यह जग जीव लहर में माता । दुनियानामपड़ोयहिभाँता॥
मन की कला अनेकन होई । मनइच्छासँगबादबिगोई ॥

* दग़ा ।

मदिरा को कलवार बनावे । पीवे दाम देइ दुख पावे ॥
मन भट्ठी कलवार चढ़ावे । कलवारिन पी पीव छकावे ॥

॥ सोरठा ॥

मन है मुकर* कलार, कलवारिन इच्छा भई ।
बिष रस विषम बिकार, रात दिवस करते रहें ॥

॥ चौपाई ॥

जागृत में मन लागे जोई । पहुंचे सुपने में तहँ सोई ॥
छल बल करे रीति दरसावे । जागृत सो सुपने में पावे ॥
लहर उठे जो मन के माहीं । सो तदरूप देख दरसाई ॥
या मन मन इच्छा जिव बाँधे । कर्म करूर ताहि में फाँदे ॥
जैसे माल भरे बैपारी । जाय दिसंतर वेचे भारी ॥
ऐसे कर्म खरीदी लेखा । चैारासी के भोग अलेखा ॥
जो हिसाब कागज में होई । धर्मराय भुगतावे सोई ॥
नरक स्वर्ग दोउ बने करूरा । या में से कोइ बाचे पूरा ॥

॥ सोरठा ॥

अंड असज्जन रीति, जन्म जन्म जोनी पड़े ।
अंडज में बिसराम, तीन† तत्त तन मन धरे ॥

॥ छंद ॥

अब यह असज्जन रीति की, करनी करम गति यों भई ।
मर के अंडज की खानि में, तन पाय के भुगते सही ॥
अप(१) काय बाई(२) तेज(३) तत बस, बास में काया कही ।
सागर कलप के बाद‡ फिर, फिर जोनि में आवै वही ॥

---

*आईना, दर्पन । †अंडज जीव (पक्षियों) में तीन ही तत्व अर्थात तत्व-सम्बन्धी गुण होते हैं—(१)जल, (२)वायु और (३)अग्नि । ‡पीछे ।

कोइ कर्म के अनुसार करि, चर* खान में उतपति रही ।
जुग जुग वतन† करिके रहे, नर की जोनि पावे नहीं ॥
जस बाट में कोइ बृच्छ फल, पड़ पड़ पके गिर के भुईं ।
कोइ संत आय उठाय मुख, जब खाय नर जोनी भई ॥
दइ‡ जोग से संजोग अस कोइ, आनि के बरते सही ।
करनी करे नहिं पार पावे, संत की किरपा भई ॥

॥ सोरठा ॥

अस जड़ खानि सुभाव, निकसन का रस्ता नहीं ।
संत सँवारें आय, नर तन पावे मुक्ति मन ॥

॥ चौपाई ॥

अंडज से जो नर तन पावे । जाका भाखूं सकल सुभावे ॥
खानि लच्छ मैं कहूं समझाई । अंडज से नर देही पाई ॥
खानि जुगन जुग रहे अनेका । उनकालखपहिचानपरेखा§॥
मन की बसन बसे परतीता । वह उपजावे वैसी रीता ॥
जस जस रहे खानि रस माहीं । जस जस बुधि उपजावे भाई॥
जैसी रहनि चाल नित चाले । लच्छअलच्छदोईप्रतिपाले ॥
जोइ रस में मन रहा निदाना । सोइरसदरसेपरखपिछाना ॥
रहनि रहे सब भासक रीती । सो भासक होइ परसे प्रीती॥

॥ सोरठा ॥

अंडज खानि सुभाव, धरा जो नर तन आइ के ।
लच्छन के बर्तमान, जोनि जन्म जुग जुग रहे ॥

---

*चार । †घर मान कर । ‡दैव । §परखा ।

॥ चौपाई ॥

आलस नींद नैन भरि सोवे । काम क्रोध दालिद्दर होवे॥
चंचल चोर चुगल चतुराई । माया मोह ममत अधिकाई॥
गुरु के चरन चित्त नहिं लावे । संतन की संगति नहिं भावे॥
भूत पिसाच अरु पूजे देवा । देवी दरस और नहिं सेवा॥
तीरथ बरत बहुत मन लावे । ठाकुर प्रीति भाव चित चावे॥
बेद पुरान कहन बहु भावे। सिवलिंगपरसिपूजिलौलावे॥
बन बाहर घर आगि लगावे । रोवत माहिं हँसी उठि आवे॥
छिनसुरतानअलापसुनावे । दुख सुख पीर पराई न आवे॥
कोइकछुकहेगुस्साभरिआवे। जिद्द पड़े मारन को धावे ॥

॥ सोरठा ॥

या बिधि उद्मद ज्ञान, अज्ञानी भव भटक में ।
अटक न माने काहु, पूरब करनी करम फल ॥

॥ चौपाई ॥

कोइ कोइ को देखत कछु देवे । मन मलीन मैला करि लेवे॥
मन में झुरे आप दुख पावे ।अंदर माहिं बहुत पछितावे॥
जिकरबिबादबहुतमनभावे।ज्ञानध्यानसुधिबुधिबिसरावे॥
सुरख नैन रतनारी* रेखें† । भौं टेढ़ी दिरगन से देखे ॥
मुख में लार बहे दिन राती । बहु बिधि हेत जुवारी साथी॥
नीचा आप ऊँच मन राखे । मन का मोट मधुरता भाखे॥
हम समान दूसर नहिं कोई । या बिधि बसे हिये में सोई॥

*लाल। †आँख के डोरे।

कुबरी पोठ पेट हलुकाई । सुने कोइ बात तुरत कहेजाई॥
बाँकी धरन मूड़ टेढ़ाई । यह लच्छन बहु भाँति रहाई॥

॥ सोरठा ॥

यहि बिधि बरनन बाक, भाख कहूं प्रकृती सभी ।
कभो न चूके भाव, जो लच्छन यहि में कहे ॥

॥ चौपाई ॥

जा में कुटुंब काज यों धावे । ज्यों कूकर पिल्ले को चावे ॥
लेत ऐंड़ाई तन को तोड़े । सभा बैठि के मूछ मरोड़े ॥
मीठे भोजन अधिक सुहाई । फल फलहार खाय बहु भाई॥
जाने न जाति आपनी छोटी । बातें करे बड़न से मोटी ॥
चाल चले तीतर की नाईं । काग सुभाव रहे मन माहीं॥
लंपट बात करे बरियाई* । अंदर सदा कपट रहे छाई ॥
अंडज जो जोइ खान कहावे । तत्तहीन भव भटका खावे ॥
कोइ संजोग पड़े अस भाई । नर की देंहि धरे तब आई ॥

॥ दोहा ॥

तीन† तत्त अंडज कह्यौ अद्यादिक सब कोय ।
नर अंडज से जो भया, यह सुभाव प्रति होय ॥

( हिरदे बाच )

॥ चौपाई ॥

जब हिरदे इक संसै लाई । स्वामी मोहिं कहो समझाई ॥
अंडज से जिन नर तन पाऊ । जाका भाखो सकल सुभाऊ ॥

---

*शेखी । †देखो नोट पृष्ठ ३९ में ।

तीन तत्त अंडज में कहिया। उन नर तन कहो कैसे पइया॥
नर तन में तत पाँच बतावे। तीन तत्त कस नर तन पावे॥
यह संसैमोरि दूर बहावो। हिरदे चित संसै समझावो॥
तत्त हीन यह क्यों कर भयऊ। सोस्वामीमोहिंबरनिसुनयऊ॥
याकी बिधी कहो बरतंता। कस कस भाख सुनाये संता॥
यहअचरजमोरेमनआवा। सो स्वामी पूछूं परभावा॥

॥ सोरठा ॥

नर तन धर ततहीन कस, कस अंडज में जाय।
सो मोहिं बरन सुनाइये, जोनि खानि परभाव॥

## कर्म फल से खानों में उतार

( तुलसीदास बाच )

॥ चौपाई ॥

सुनु हिरदे यह बात ब्रतंता। सूरतवंत कहे सब संता॥
जस जस देखा अंड पसारा। सो तोसे भाखूं अनुसारा॥
परथम नर बैराट बनाया। तीनलोकयहि उदर समाया॥
प्रभुता आप आपनी भूला। किरिया करम करे तज मूला॥
कर्म कलंदर* ने भटकाया। पिंडज चार तत्त में आया॥
चार तत्त जड़ रहे अचेता। तीन तत्त अंडज में रहता॥
कर्म होय अधिकारी भाई। टूटे तत्त एक जब जाई॥
तब नर से पिंडज में आवे। पिंडज चार तत्त तन पावे॥

* बैरागी का भेष

॥ दोहा ॥

नर देही ततहीन से, पिंडज माहिं पसार ।
सार भुलानो आपनो, खानइ खानि खुवार* ॥

# चार खानों का भेद

॥ चौपाई ॥

अब पिंडज से अंडज माहीं । पसुवत देह बनै कछु नाहीं॥
जड़ता तन निरज्ञान कहावे । कर्म भोगि फिर भव में आवे॥
भव के भार तत्त नस जावे । तीन तत्त अंडज तन पावे॥
असअस्थावर†उष्मज‡लेखा । सुरतवंत कोइ करे बिबेका ॥
हिरदे नर तत पाँच कहाई । पिंडज पसू चार के माहीं॥
तीन तत्त अंडज तन पावे । दो तत उष्मज खानि कहावे॥
अस्थावर तत एक रहाई । यों ततहीन गुनन के माहीं॥
पिंडज चार तीन तत आया । यों अंडज की खानि कहाया॥

॥ दोहा ॥

कर्म करे बरियार से, तत्त छीन होइ जाय ।
तत्त घटे घट खानि में, दुख सुख माहिं बिलाय ॥

॥ सोरठा ॥

कही असज्जन रीति की, उतपति कर्म सुभाव ।
अंडज की करनी करे, यों तत तीन समाय ॥

॥ दोहा ॥

सागर में जो संख है, रंक§ जीव कृत भाव ।
हिरदे यह गति यों भई, संख असज्जन राव‖ ॥

*ख़राब । † जड़ सृष्टि जैसे पेड़ वग़ैरह । ‡ गरमी से पैदा हुई सृष्टि ।
§दरिद्र । ‖ राजा ।

( हिरदे बाच )

॥ चौपाई ॥

जब हिरदे बोले अस बाता। स्वामीसमझिलीन्हबिख्याता॥
जो स्वामी भाखें मुख बानी। सो सब हिरदे सुनि मन आनी॥
कहा असज्जनकापरभावा। सो सब मोरि समझ में आवा॥
अबवहबरनिकहोसहदानी। नर उष्मज तन क्यों कर जानी॥
याका भेद कहो समझाई। नर तन तजि उष्मज को पाई॥
उष्मज के लच्छन दरसावो। नरतनतजिउष्मजसमझावो॥
सो बिरतंत* कहो अरथाई। लच्छन गुन कहो भेद बताई॥
कौन कर्म नर तन में कीन्हा। जासे उष्मज खान अधीना॥

॥ सोरठा ॥

नर तन की करतूत, उष्मज में बासा किया।
दई कर्म भ्रम भूत, मन तन में बासा लिया॥

॥ चैापाई ॥

उष्मज से नर तन कस पावे। भिनभिनकहोसमझमेंआवे॥
करनी कौन खानि में बूड़ा। कस नर देही मिले अगूढ़ा†॥
नरतनमिलाभक्तिनहिंपावा। कौन कर्म के भोग प्रभावा॥
नर की देह जीव निस्तारा। सो नहिं पावेकौनिबिचारा॥
यह दुर्लभ तन सभी पुकारें। जिव बाजी नर तन में हारे॥
नहिंकछुज्ञानबिबेकबिचारा। बहु बहि जाय सिंधु कीधारा॥
सिंधु कराल बहे बहु भाँती। भँवर करूर‡ उठे दिन राती॥
यह संसार भँवर बड़ भारी। जो उबरे जन रहे करारी॥

*बतान्त। †निर्मल। ‡बिकराल।

॥ दोहा ॥

नर तन तो पावे नहीं, पसु पंछिन में जाय ।
अस्थावर उष्मज रहे, नर तन बाद गँवाय ॥

# अज्ञानता और भोग बिलास में आशक्ती का फल

( तुलसीदास बाच )

॥ चौपाई ॥

सुनु हिरदे नर बड़ा अयाना । सतगुरुसोधिचरननहिंजाना
सतगुरुबिननरफिरतभुलाना। ज्यों केहरि* भेड़न में आना॥
जग भेड़न की चाल चलाई । सतगुरु बिना रह्यो उरझाई॥
जुगजुगभटकिभूलिदुखपाया। मन इंद्री गुन माहिं चलाया॥
लच्छ अलच्छ कहूं का भाई । को हिरदे कहे कथा बढ़ाई॥
इक इक बात कहूं बिस्तारा। तोनहिंकहनउमरनिरवारा॥
बन बन खेले जीव सिकारा। मारिजीवपुनिकरतअहारा॥
दयाहीन मुख स्वाद सँवारा । जिह्वा का बंधन बिस्तारा॥

॥ सोरठा ॥

जीवत मारे जीव, कधो दर्द आवे नहीं ।
तलफत जीव नसाय, बेदर्दी बूझै नहीं ॥

॥ छंद ॥

हिरदे अधम नर रीति की, बरनन कहो कहँ लग कहूं ।
जग रीति को रहे जीति जिन से, मैं पुनी हारे रहूं ॥
कोइ खोट नीक बिचार की अस, कहन में सबकी सहूं ।
जगको निरखि निज नैनसे, सुख चैन हित चित क्यों बहूं॥

* शेर

खोटी कुभंडी चाल जग से, भाग कर गुरु को गहूं ।
असकुटिलकाँट करील* जग लखि,लोगसेभाग्यों महू†॥
जग जीव के यह कर्म अघ, बेफायदे नाहक लहूं ।
तुलसी अधम संसार की गति, हारि के हिरदे कहूं ॥

॥ सोरठा ॥

अकरम करम बिचार, जीव हतत हारे नहीं ।
आतम होत बिनास, आस अवस पावे यही ॥

॥ चौपाई ॥

बाक बिलावल‡ में समझाऊँ । जग अचेत की आस सुनाऊँ॥
कहुं कहा रीति भाँति बहुतेरी । कर्म कुटिल से प्रीति न फेरी॥
जग को तोल तरक कर हारा । कहा बिलावल में अनुसारा॥

॥ बिलावल ॥

हिरदे जग तरक तोल, बोल हेरि हारा ॥ टेक ॥
देखो द्रग काल साल, माँगे स्वर्ग बास हाल ।
लिये मोह भर्म जाल, ख्याल खोज पारा ॥
बूझे नहिं साध संत, खोजे नहिं आदि अंत ।
पावे कस पिया पंथ, बूड़े भव धारा ॥
ऐसा भव भर्म माहिं, काम क्रोध लारा ॥ १ ॥
राम प्रिये परन ठानि, मन से सुत त्रिये मानि ।
माया बस पड़त खानि, बूझ खोज पारा ॥
यहि बिधि अज्ञान बास, बूझे मृत अंत नास ।
प्रीति मुक्ति कहे अकास, स्वाँस नास न्यारा ॥

---

* एक काँटेदार झाड़ । † मैं भी । ‡ एक राग का नाम ।

ऐसी बुधिहीन चीन्हि, बूझि ले गँवारा ॥ २ ॥
चाहत पद राम बास, रामही पूरन प्रकास ।
उन के बस काल फाँस, आस मौत मारा ॥
वासे कोउ करो न हेत, बूझो नर अंध अचेत ।
सूरति छबि नाम लेत, चौथे पद पारा ॥
याही बिधि बान ठान, संत पंथ न्यारा ॥ ३ ॥
देखो कृत कर्म काग, यासे पुनि निकसि भाग ।
साधो सत सुरति लाग, लख अकास पारा ॥
ऐसी लख मान सीख, नाहीं भव खानि नीक ।
ऐसी अज अमर लीक, हिरदे तन छारा ॥
याही घट खोज रोज, चौज मौज मारा ॥ ४ ॥
भाखा सत मत पसार, ताका भव भिन अपार ।
चाखा पद मूर सार, जाहिर जग सारा ॥
पावे सत मत्त सार, देखे अगमन बिचार ।
उतरे भव सिंधु पार, नौका भव वारा ॥
हिरदे घनघोर सोर, निरतो चित चारा ॥ ५ ॥
हिरदे तन माहिं पैठि, छाँड़ो नर सकल टेक ।
आदि और अंत देखि, टेक एक सारा ॥
कहनी मन में बिचार, तेरा कोउ ना निहार ।
निरखो निज नैन पार, वाहि को अधारा ॥
हिरदे यह खूब अजूब, पावे मन मारा ॥ ६ ॥

मोको सब जक्त कहत, तुलसी के राम टेक ।
जाना निज एक अलेख, संतन की लारा* ॥
जाके नहिं रूप रेख, देखा जाइ जो अदेख ।
ऐसा पद पार पेख, पंकज† गुरु चेरा ॥
हिरदे तत कर विचार, राम रमत हेरा ॥ ७ ॥
हिरदे सतगुरु की दृष्टि, तासे निरखा अदृष्ट ।
सत्तलोक पुरुष इष्ट, वे दयाल न्यारा ॥
मोरी लौ चरन लार, छिन छिन निरखत निहार ।
कीन्हा पद पूर पार, काल जाल मारा ॥
हिरदे यह जक्त भ्रष्ट, देखा दीदारा ॥ ८ ॥
हिरदे यह अंड खंड, निरखा सगरा ब्रह्मंड ।
मारा मन काल डंड, छाँड छूंड न्यारा ॥
धरती और चंद सूर, निरखा सगरा जहूर ।
लीन्हा रन खेत सूर, सतगुरु मत सारा ॥
हिरदे दीदा निहार, भागे बट पारा ॥ ९ ॥

॥ सोरठा ॥

हिरदे हेर बयान, हरख हृदय प्यारा लिया ।
जड़ जिव जग अज्ञान, कहा जाने यह भेद मत ॥

॥ दोहा ॥

जड़ जूड़ी त्रय ताप, जुगन जुगन तपता रहे ।
गहे न गुरु गम बास, आस अथिरता की गहे ॥

* साथ । † कँवल ।

॥ चौपाई ॥

दुनिया माहिं दुरंगी रीती। नहिं कनिष्ट* नर निज घर प्रीती॥
सिंधु माहिं सीपी जिमि होई। यों कनिष्ट जिव जक्त बिगोई॥
अब सुनु आगे नर बिस्तारा। यह मन अधम नेक नहिं हारा॥
परथम नर बैराटी काया। कर्म भोग पसु पिंडज पाया॥
तत्तहीन पिंडज में भाई। अंडज तन तत बास कराई॥
अंडज में करनी से हारा। उष्मज खानि भया सिर भारा॥
चूक पड़ी करनी में भाई। ऊँचे चढ़ि नीचे गोहराई† ॥
हिरदे सतगुरु बिन बौराया। आदि अपन तजि उलटा आया॥

॥ दोहा ॥

परथम नर तत पाँच में, पिंडज में तत चार।
तीन तत्त अंडज रहे, उष्मज दो बिस्तार॥

( हिरदे बाच )

॥ चौपाई ॥

उष्मज का लेखा समझावो। हिरदे को यह भेद सुनावो॥
अब सब कथा कहो बिस्तारी। समझ पड़े बिधि न्यारी न्यारी॥

( तुलसीदास बाच )

तब तुलसी कहे यह नर काया। बेद पुरान मुनिन भटकाया॥
कर्म रीति नीके समझाई। आदि अधर घर राह भुलाई॥
जग की रीति करन सब लागे। सिंधु गये तजि रहे अभागे॥
दुनिया जग दिन राति दिवानी। ब्रह्म बंध नर भये जिव प्रानी॥

* छोटा, यहाँ "नीच" के मानी हैं। † पुकारा।

समुंदर माहिं सीप का लेखा। यों कनिष्ट नर जीव बिबेका॥
सुरत सुमन* तजि नोके आई। कुमन† करंदे‡ से चित लाई॥

॥ दोहा ॥

पाँच पचीसो तीन मिलि, इच्छा कीन प्रचंड।
मार मार सब कोउ करे, ज्यों दुखिया पर डंड॥

॥ चौपाई ॥

याबिधिउष्मजखानिसमाया।नर तन तजि उष्मजमेंआया॥
परथम नर करनी बिस्तारा। तपफलराजभोगअनुसारा॥
जुगनजुगनतपमारगलीन्हा। नर तनतजेराजसुखकीन्हा॥
जिवफल भोगि रहे बहुभाँती।ममताबढ़ीअधिकदिनराती॥
चक्रवर्त राजा होइ जाई। अंदर यों आसा उपजाई॥
कोइ संजोग पड़ा अस भाई। चहुंदिस चक्र फिरे जगमाहीं॥
चक्रवर्तहोय सब बस कीन्हा। मकड़ जन्म देह तजि लीन्हा॥
टूटे पाँव लँगड़ता चाले। माया ममता फिरे बिहाले॥

॥ दोहा ॥

यों नर तन तजि जीव यह, उष्मज माहिं समाय।
दुख सुख भोगे कर्म को, लख सत्ताइस माहिं॥

## उष्मज जीव संत चरन से कुचल जायँ तो उद्धार हो जाता है

॥ चौपाई ॥

यह आसा उष्मज में लाई। लख सत्ताइस जोनि कहाई॥
कृत्रिम§संगमनमायाब्यापी। रोग सोग दुख सुख संतापी॥

*अच्छा मन अर्थात ब्रह्मांडी मन। †बुरा मन अर्थात पिंडी मन।
‡कारिन्दा। §बनावटी।

जोजोउष्मज खानि कहाई । भुगततफिरे जुगन जुग माहीं॥
कोइ संजोगउदय कहुं होई । बिचरत संत मिले कहुं कोई॥
मारग पाँव चलत के माहीं । चरन पड़े जिव मुक्त कहाई ॥
पाँवतरेकोइजीव कुचाना । जो जिव मरे धरे नर जामा॥
यों उष्मज से नरतन आवे । और भाँति कहुं गैल न पावे॥
करनी करे भोग फल पावे । नर तन कोटि करे नहिं आवे॥

॥ दोहा ॥

संत चरन अति बहुत बड़, जो जिव चरन खुंदाय* ।
नर जामा पावे वही, संत चरन परभाव ॥

( हिरदे बाच )

॥ चौपाई ॥

स्वामी से पूछूं इक बाता । सो मोहिंबरनि कहोबिख्याता॥
चक्रवर्त मक्कड़ तन धारा । यह कारन कहो कौन बिचारा॥

( तुलसीदास बाच )

कहेतुलसीहिरदेसुनुकाना । ममता बढ़ी बढ़े अभिमाना॥
यहहिरदेसबजगबिस्तारा । चक्रवर्त कहो कौन बिचारा॥
बढ़बढ़गयेराज मद माहीं । इंद्र पदी लेने को चाही ॥
जबममतानेमारिगिराया । तन मक्कड़ यह यों बिधिपाया॥
माया बड़ी चूहड़ी† होई । नर बस करन मोहनी सोई ॥
जोजो जोनि खानिमेंडारा। जीव ममत माया बिस्तारा॥

॥ दोहा ॥

हिरदे करम कराय के, देत पलीता बार‡ ।
अंदर आगि लगाय ज्यों, दगन करे तन झाड़ ॥

---

* पिस जाय । † भंगिन । ‡ जलाना ।

॥ चौपाई ॥

यह ऐसे मक्कड़ तन पाया । हिरदे तो को बरनि सुनाया ॥
उष्मजजीवखानियोंआवै । यों आसा सुख भोग समावै॥

(हिरदे बाच)

इक हिरदे संदेह उठावा । स्वामी भर्म एक मोहिं आवा॥
उष्मजसेनरतनजिन पावा। संत चरन के पद परभावा ॥
ऐसे बरनि कही तुम बानी । यहदरसावोभिनभिन छानी॥
नर तन में लच्छन दरसावो ।लच्छअलच्छ सभी समझावो॥
रहनिगहनिकौनेबिधिहोई । सोस्वामीकहोबरनिबिलोई॥
उष्मजखानिलच्छबिस्तारा । नरतनमेंकिनकसकसधारा॥

॥ सोरठा ।

खानि लच्छ परभाव, नर तन में कस बूझिया ।
संसै समझ उपाव, बरनि कहो सब भेद यह ॥

# असज्जन का रूप और लक्षण

(तुलसीदास बाच)

॥ चौपाई ॥

सुनु हिरदे यह खानि सुभाऊ। दो तत दुर्गम पाँच तत माहूं ॥
बुद्धिहीन जड़ता के माहों । तन छूटे रस खानि सुभाई ॥
जक्त माहिंबड़ भक्त कहाई । माला कंठी अधिक सुहाई ॥
चंदन तिलक लगावे खौरी । झूठा ज्ञान करे बर जोरी ॥
दसन*बहुतबड़बदन†भयाना‡। गुरु केबचनसुनेनहिंकाना ॥

* दाँत । † चिहरा । ‡ भयानक ।

गुरु बानी कबहूं नहिं माने । सुनेनकभी न हित पहिचाने॥
गुरु को मेटि करे अधिकाई । निंदा करे गुरुन की भाई ॥
बातें करे मूढ़ की नाईं । ज्ञानीबनिकथिज्ञान सुनाई॥

॥ सोरठा ॥

यह अस बरन सुभाव, वर्त्तमान ऐसा रहे ।
गहे कर्म तन पाय, सहाय सुरत समझै नहीं ॥

॥ चौपाई ॥

बातें कहत नाहिं सरमावे । ज्वाब स्वाल नहिं पूरा आवे॥
पाप अंदर मुख भाखे दाया । सोजिवजमकेबंधनसहिया॥
नाक बड़ी सूवा की नाईं । पीरे नैन माहिं सुरखाई॥
रति* करने चोरी से जावे ।कहेकोइलाखसरमनहिंआवे॥
लम्बे पाँव परखिये सोई । अंगुठा से अंगुरी बड़ होई॥
कान सुने स्वारथ की बातें । परस्वारथ के डगर† न जाते॥
हाँसी करे और की मीठी । कहते ज्वाब बंधे मुख सीठी॥
लेत पराया देत न भावे । माँगे जब लड़ने को जावे॥

॥ दोहा ॥

हिरदे यह लच्छन सुनो, गुनो गिरा के माहिं ।
तन मन भीतर और है, कहते और बनाय ॥

( हिरदे बाच )

॥ चौपाई ॥

यह स्वामी इक संसै आई । मोरे भर्म भया मन माहीं॥
संत चरन में जीव कुचाना । तुमने कहा भया नर जामा॥

*मैथुन । †रास्ता ।

यह बिस्मय* भइ अंतरजामी। स्वामी कह निपरख पहिचानी॥
संत चरन में जीव खुंदाना। भया नर बरनन औ़र बखाना॥
उष्मज से नर की भइ काया। उनका बरनन बरनि बताया॥
यह बिचार करि मन के माहीं। स्वामी सन्मुख आनि सुनाई॥
यह सुन के मन भया अँदेसा। स्वामी भाखो सकल सँदेसा॥
याकी मोहिं तफसील† सुनावो। बिधि रबचन समझ समझावो॥

॥ दोहा ॥

संत चरन बड़ भाग से, मिले कहें सब संत।
मोको सुनि संसै भई, बानी बचन बृतंत॥

# संत की अपरंपार महिमा

( तुलसीदास बाच )

॥ चौपाई ॥

कहे तुलसी हिरदे सुन लीजे। यह संदेह कभी नहिं कीजे॥
संतन की गति अगम अतोला। उनके बानी बचन अमोला॥
उनका भेद कोई नहिं पावे। कोटिन जन्म समाधि लगावे॥
क्या जानें जग जीव बिचारे। खोजत बड़े बड़े सब हारे॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस कहावा। वह खोजत कहिं पार न पावा॥
बेदहु नेत नेत गोहरावे। औ़तारी कोइ पार न पावे॥
यह का लखे जक्त जिव अंधा। मन तन जन्म काल के फंदा॥
दृष्टि पड़े देखन में सोई। वे अदृष्ट गति अगम अगोई॥

---

* अचरज। † बिस्तार।

॥ दोहा ॥

संतन की महिमा सभी, कहते माहिं लजाय ।
चरन आस सब कोइ करे, भागन से मिलि जाय ॥

॥ चौपाई ॥

वे हैं सत्त पुरुष अबिनासी । हैं सतगुरु पूरन पद बासी॥
दृष्टि देंह देखन में नाहीं । हैंअदृष्ट गति अगम अथाही॥
उनकी गति सूछमसमझाऊँ । हैं अरूप रूप नहिं नाऊँ॥
सूरज तेज बड़ा जग माहीं ।उनसेअधिक तेज कोइ नाहीं॥
कोटि सूर इक रोम लजावे । संतन की महिमा अस गावे ॥
औरकहाँलगि बरनि बताऊँ। थोड़ी कहन माहिं समझाऊँ॥
कोटि सूर्य इक रोम कहाई । ऐसे रोम करोड़न भाई ॥
कहँ लग हिरदे बरनि बताऊँ। यहसुनुसौदाअगमअथाऊँ ॥

॥ दोहा ॥

यह अथाह के थाह को, कोटिन करे उपाव ।
सतसँग बिन जाने नहीं, दया दीन परभाव ॥

॥ चौपाई ॥

हिरदे सतगुरु का पद भारी । यह कहा जानेजक्तअनारी॥
किर्मि कीट उष्मज के माहीं । जड़ता ज्ञान खानिमें आहीं॥
यह कहा जाने जीव अचेता। बुधिअबूझहिरदेनहिंहेता॥
चेतन तन में चेत न पावे । जड़ता तन की कौन चलावे॥
जड़ तन खानि तीन बिस्तारा। चौथे नर देही निस्तारा ॥
तन अचेत सुधि अपनी नाहीं। पसुवतमें नहिं ज्ञान समाई॥

संत कृपा बिचरन परभाऊ । यह अचेत वे सहज सुभाऊ॥
उन के मन इच्छा में नाहीं । चले जातु हैं सहज सुभाई ॥

॥ दोहा ॥

मरत जीव जो चरन से, सहज चलत के माहिं ।
जो खुंदाय कुंच के मरे, छूवत नर तन पाय ॥
संत चरन परताप से, खानि राह रुकि जाय ।
नर तन में सतगुरु मिलें, मेटें सकल सुभाय ॥

॥ छंद ॥

हिरदे सुनो गति संत की, बेअंत कोइ कहँ लग कहे ।
तन मन सुरति धर ध्यान करिके, लैा लगी चरनन रहे ॥
कहूं और ठौर न छूट छटके, भटक भव भ्रम ना गहे ।
जो चरन लीन अधीन होइ कर, चीन्ह चित से ना बहे ॥
पसु कीट किर्म कदाचि कोइ जिव, जान नर तन वे भये ।
चित हित हिये में साँचि उपजे, सुरति तन मन से लये॥
अस बचन बाक बिचार मन में, संत सब ऐसी कहें ।
हिरदे समझ सब सोध खोली, बोध बोली को गहे ॥

॥ सोरठा ॥

जो जिव चरन निवास, और आरु बिसराय के ।
सत मत सूरत साथ, नित प्रति रहे लौ लाय के ॥

॥ चैापाई ॥

जिन हिरदे यह बचन बिचारा । कबहुं न रहे काल की जारा॥
नर तन में सतगुरु पद सेवे । संत चरन चित से लौ लेवे॥

चरन छुवे छिन छिन में भाई । आठ पहर रहे लगन लगाई॥
मन में बास बसे नहिं औरी । संत दया से बंधन छोरी॥
जड़ चेतन बंधन की गाँठी । अंदर खुले भरम की टाटी॥
मैला मन साबुन से धोवे । गहि गुरु ज्ञान हिये में जोवे*॥
परम प्रकास भास दिन राती । दीपक ज्ञान ध्यान बहु भाँती॥
अगम अनैन नैन से न्यारा । सो जाने संतन का प्यारा॥

॥ सोरठा ॥

भक्ति पदारथ सार, यह नर जग जाने नहीं ।
जग के बिषम बिकार, सो सब समझे साँच करि ॥

( हिरदे बाच )

॥ चौपाई ॥

हे स्वामी इक संसै आई । हिरदे को कहो समझि सुनाई॥
उष्मज चरन भई नर देहा । नर तन में नहिं संत सनेहा॥
यह कारन कहो कौन बिचारा । भर्म खोलि कहि ये निरबारा॥
चित संदेह जाय नर देही । उनके बचन कान नहिं लेई॥
सच बिस्वास नहीं मन आवे । कहो स्वामी यह कौन प्रभावे॥
महिमा संत सनातन गाई । क्यों याको बिस्वास न आई॥
सब अवतार भये जग आई । राम कृस्न दोउ नर तन माहीं॥
संत चरन की महिमा गावें । सब पुरान ऐसे गोहरावें ॥

॥ सोरठा ॥

सुनें कथा नित कान, ध्यान धरन बूझें नहीं ।
संतन को जस जान, गायँ महातम सभी सब ॥

*ढूंढ़े ।

# चलनी ज्ञान और सूप ज्ञान

( तुलसीदास वाच )

॥ चौपाई ॥

सुनु हिरदे यह देखत भूला ।ठगिठगिरचाकालतजिमूला॥
सुनि सुनिके सब बूझ बुड़ाई । खेत रहा खर नाज गोड़ाई॥
खेत रहा खर से भरि भाई । वा में नाज कौन उपजाई॥
यहिबिधिज्ञानसुनेनरलोई । नाज निकाइ* खरखेतीबोई ॥
जैसे चलनी चून छनावे । चून सार गिरि चूकर† पावे॥
यहिबिधिज्ञानगहेजगसारा। ततवस्तुकोइनाहिंबिचारा॥
ज्ञान मान की बड़ी मोटाई । भक्ति गरीबी कोइ न पाई॥
संत चरन यासे नहिं भावे। क्योंकर हिरदै साँच समावे॥

॥ दोहा ॥

सूप ज्ञान सज्जन गहे, फूफर‡ देत निकार ।
सार हिये अंदर धरे, पल पल करत बिचार ॥

॥ चौपाई ॥

हिरदे नर यह बड़े अभागे । सार छाँड़ि चूकर में लागे॥
कहो वे फुलके§ चहें बनाये । चूकर के फुलके किन खाये॥
यह जग चूकर रीति समाना । संत चून फुलके पर ध्याना ॥
चून चीन्ह कर करें रसोई । या बिधि जग खावेसबकोई॥
चूकर में नाहिं भूख नसावे । यहि कारनकहिकरगोहरावे॥

*उखाड़ कर। †चोकर। ‡भूसी। §पतली रोटी।

कोइ सज्जन जन परमसनेही। माने बचन करे हित वेही॥
अगम सुधा रस अमृत बानी। सो उनने गहेकरिपहिचानी॥
संत बचन हिरदे अभिलाषा। रस बिसेष सज्जनने चाखा॥

॥ दोहा ॥

अमृत रूपी संत के, बचन गहे सुन कान।
सो सज्जन सत रीति में, हित चित करत प्रमान॥

॥ चौपाई ॥

सुनु हिरदे यह खानि सुभावा। भइ नरदेह जड़ तनसे आवा॥
देंह धरे छूटे जस खाना। जाका जैसे उपजे ज्ञाना॥
नर तन पाय कहोका कीन्हा। लच्छन तो जड़वत के लीन्हा॥
कर्म प्रभाव ज्ञान उपजावे। सतगुरुबिनकोज्ञानसुझावे॥
जो रँग पगे वही खसबोई*। निकरें तदपि तरंगें सोई॥
भँवर न करे चंप पर बासा। वह सुगंधि सँग रहे उदासा॥
ऐसा मन भँवरे को नाईं। नीकी तज फीकी पर जाई॥
नीम कीट† जसनीमपियारा। बिष को अमृत कहे गँवारा॥

दोहा

बिष रँग के सँग में पगे, किया न मन को तंग।
संग मिलै मधु मालती, जब निकसै कछु रंग॥

॥ चौपाई ॥

मन भँवरा सतसँग जब पावे। हिरदै बिषय बास जब जावे॥
ज्यों हलवाई करे जलेबी। अंदर खैंच पिये रस गैबी॥

*खुशबू, सुगंधि। †नीम का कीड़ा।

अस संगति रस पियेअघाई । जब यह मनकोदुरमतिजाई॥
संगति में सुनि देइ न काना । जासे नर तन में भरमाना॥
संगतिकरे रीति नहिं जाना । कस कसछूटेमनअभिमाना॥
यह हिरदे यों नर तन हारा । यों मद ममता ने जग मारा॥
बिन सतगुरु नहिं कर्म नसाई । जो कदाचि करेकोटिउपाई॥
वे सूरज यह किरनि कहावे । भूमि भासतजिरबि में जावे॥

॥ दोहा ॥

सूरज बसे अकास में, किरनि भूमि पर बास ।
जो अकास उलटे चढ़े, सो सतगुरु के दास ॥
अललपच्छ* का अंड ज्यों, उलटि चले अस्मान।
ज्यों सूरति सत सजन की, आठ पहर गुर ध्यान ॥

॥ चौपाई ॥

सुनु हिरदे यह सज्जन रीती । जोइ असज्जनकरेअनीती॥
सज्जन हंस मुक्ति पद पावे । बग बपुरा मछरी को चावे॥
ऐसे असज्जन सज्जन लेखा ।उभय†बीचकछुकह्योबिबेका।
यह जग अंध असज्जनजाने । संतन का मत कहा पिछाने॥
यों भइ अंध धुंध जग माहीं । मनमत ज्ञान कहें गोहराई ॥
साख महातम की पढ़ि गावें । फूटे हिया समझ नहिं लावें॥
कर्म कांड पर लीन्ह घटाई । जोउनकहीसमझ नहिंपाई॥
यों अज्ञान बसा जग माहीं ।कछु कछुखानिसुभावरहाई॥

*देखो नोट पृष्ट ९ में। †दो ।

॥ दोहा ॥

यौं हिरदे अज्ञान में, सब जग रहा भुलाय ।
बिन सतगुरु उपदेस के, जुग जुग खेई खाय ॥

( हिरदे बाच )

॥ चौपाई ॥

स्वामी अगमसुगमसमझाई । मन मोरे में खूब समाई॥
अंडज उष्मज के कहे बैना ।स्वामी बचन सुने सुख चैना॥
अब वह कथा कहो समझाई ।अचल खानिका भेद बताई ॥
नर अस्थावर[†] में तन पाया ।जब बैराट प्रथम से आया॥
जब की करनी कहो बनाई ।नर तन से अस्थावर माहीं ॥
तीस लाख अस्थावर जाती ।उत्पतिबरनमरनबहु भाँती॥
सो लेखा मोको समझावो । कसकस भयो भेदबतलावो॥
ऋषीमुनीजपतपबहुकीन्हा।वाहिसमयभयाअचरअधीना॥

॥ सोरठा ॥

ऋषी मुनी जप तप करें, जग कस कीन्ह बिचार ।
नर तन तो तबही हता, कस चर अचर समान ॥

# नर को स्थावर योनि कैसे मिलती है

( तुलसीदास बाच )

॥ छंद ॥

हिरदे सुनो गुन बेद ने, जग बाँधि कर रचना करी।
मुनजन ऋषी तप जोग करि, जग बोध नर हिरदे धरी॥

---

बि० ? । †जड़ सृष्टि अर्थात ऐसी सृष्टि जो चल फिर नहीं सकती ।

कह्यो ज्ञान गुफ[*] बैराग बानी, बचन सुनि गुन में परी ।
गुन गो[†] गिरा[‡] बस बाँधि करिके, भर्म की आसा भरी ॥
महातम कहे फल करम के, जस धरम की धारन धरी।
सुभ असुभ अंक बढ़ाय करि, जिवजन्म जग बुड्ढो हरी ॥
कोइ बोध सोध न आप अस, जसनारियरभीतरगरी ।
जैसे बिधी बादाम मेवा, मद्ध में मींगी भरी ॥
कोइ संत ने यह अंत अंदर, देख कर सूरत करी ।
जग रचन के बस बास मन तन, तरंग में सूरत जरी ॥

॥ दोहा ॥

ज्ञान जोग विज्ञान तप, सब मुनि कीन्ह प्रमान ।
जक्त आस बिस्वास दे, कर्म ईस परधान ॥

॥ चौपाई ॥

जैसे पुत्र सराफ सिखावे । कौड़ी से पैसा परखावे ॥
ज्यों गुड़ियाँ लड़की लै लावें। साँच पिया मिलनेकोचावें॥
साँचे पिया मिले नहिं भाई । झूठे काल दीन्ह उरझाई ॥
पियातजि केदधिबेचनआई। जब से गुजरी[§] नाम कहाई॥
जब गोपाल गौ पालन लागे ।रसदधिमोलबिकनजबलागे॥
मन गोबिंद गौ इंद्री माहीं । नाद बिंद दधि बेचन आई॥
सो बिंद ने बिंदाबन कीन्हा। तनबैराटसमझिजिनलीन्हा॥
यह कोइ भेदी भेद बतावे। जबरचनाकीबिधिकोपावे ॥

---

*गूढ़ । †इन्द्री । ‡बानी । §गुजरी अर्थात गूजर जाति की स्त्री जो पछाँह में दूध दही बेचती हैं और दूसरे मानी उस के "गुज़री हुई" या "पतित" के होते हैं जिस से इस चौपाई में ख़ूबसूरती आजाती है ।

॥ दोहा ॥

यों रचना यहि बिधि भई, छूटा मूल मुकाम ।
स्याम कंज के बीच में, आय रहे निज धाम ॥

॥ चैापाई ॥

जग ब्योहार कर्म की बाजी । भूले मुल्ला पंडित काजी॥
पढ़ि पढ़ि के सब खोजलगावें । पढ़ने पार भेद नहिं पावें॥
मुरसिद गुरू मिला नहिं भाई ।परखे बिना सराफी नाहीं॥
ज्यों सराफ रुपिया को परखे । गुरु दें द्रष्टि हिये में हरखे॥
पाट-कीट* की होत हगारा ।गुरु लछ†से पीतंबर पारा‡॥
अस गुरु ज्ञान मिले जब भाई। कर्म कीट से लेइ छुटाई॥
परथम सतगुरु पद नहिंचीन्हा। जबबैराट कर्म बस कीन्हा॥
सो नर धरि आतम यह देही। छूटा गुरु पद सब्द सनेही॥

॥ दोहा ॥

सूरति भटकी भर्म में, सब्द गुरू का ध्यान ।
आप अमर पद को तजा, कहँ पावे बिसराम ॥

॥ चौपाई ॥

कुंदन से सोना कर दीन्हा । सोना खोंट खार से कीन्हा॥
या बिधि जीव कर्म के खारा। क्योंकर के पावे निरबारा ॥
परथम नर पिंडज की काया। फेरि पिंडपसु जोनिमेंआया॥
अंडज करम जोग अनुसारा। उष्मजजबसेआइतनधारा॥
अस्थावर तत एक रहाई । कर्म जोग करनी समभाई॥

*रेशम का कीड़ा । †दृष्टि । ‡बनाया ।

कुंदन से अस सोन कहाया। खारकर्मजिवखोंटमिलाया ॥
अब यह कथा कहूं बिस्तारी। कुन्दन सोन खोंट भया भारी॥
दीपामुनिकरेजोगअभ्यासा। जोजन एक द्वारिका पासा ॥

॥ दोहा ॥

दीपा मुनि जोगी कहे, रहे द्वारिका पास।
जोजन भरि वहि नगर से, करते तप अभ्यास ॥

॥ चौपाई ॥

यह गुजरात द्वारिका नाहीं। वह बूड़ी है जल के माहीं ॥
महातम बड़े मुनिन के माहीं। जिनसास्तरकीन्हेजगमाहीं॥
तप जप जोग भया परवेसा। यह सास्तर कीन्हे उपदेसा॥
कर्म उपासना ज्ञान दृढ़ाया। यामें सब जग को उरझाया॥
ज्ञान कांड मारग मत कीन्हा। फिर नर से नरदेही लीन्हा॥
जिन उपासना आस बिचारी। मृग पसुवत अद्यादिक धारी॥
कर्म कांड जो जीव बिचारे। सो भये अचर खानि में सारे॥
जिनतपजोगकियामुनिराया। परथम तिन मुक्ती को पाया॥

॥ दोहा ॥

मुक्ति जो पूछे मुक्ति को, मेरी मुक्ति बताय।
जो घट चीन्हे आपने, मुक्ति मुक्ति होइ जाय ॥

॥ चौपाई ॥

भई प्रथम रचना में काया। जबका बरनन बरनिसुनाया॥
कर्म अकर्म कीन्ह जबकाया। जब नर से अस्थावर आया॥

जंगम* भया काठ का कीड़ा। तज जंगम अस्थावर पीढ़ा॥
कुंदन अंस आतमा आई। तन संचय† में सोन कहाई॥
कर्म खार सास्तर उपजाया। याबिधिसोना खोट कहाया॥
जब न्यारीगर‡ सतगुरुपावे। सोना खार खोंट अलगावे॥
तब निस्कर्म आतमा होई। गुरु किरपा से मारग जोई॥
बुंदसिंधु मिलि भया अकेला। सो कुंदन सतगुरु का चेला॥

॥ दोहा ॥

यह मारग गुरु मेहर से, चेला चीन्ह बिचार।
निराधार इक-रस रहे, कुंदन चेला सार॥

॥ चैापाई ॥

कीड़ा कीट बीज बिस्तारा। यों उपजै अस्थावर सारा॥
वही आस अस्थावर बासा। काठ घुनै कीड़ा रहै पासा॥
यहइनकी उत्पति समझाई। कीड़ा रहै काठ के माहीं॥
जो रस भास करै परकासा। अंत जहाँ जिन लीन्हाबासा॥
पूरब प्रीति काठ सँग कीटा। सोई स्वाद लागु जेहिं मीठा॥
इच्छा आसा देत घुमाई। जहँ मन लीन§ देह तस पाई॥
चारखानि उत्पति रस माया। चरऔरअचरचराचर खाया॥
उपजे मरे धरे फिर देही। आसा बँध बस बास सनेही॥

॥ दोहा ॥

जुगन जुगन जड़ जीव यह, बिष बिसेष रस खाय।
भँवर पुहुप गुंजार ज्यों, मायहिं माहिं बिलाय॥

* ऐसी सृष्टि जो चल फिर सकती है। † थैली। ‡ सोना को साफ़ करने वाला। § आशक्त।

# स्थावर से एक दम नर तन कैसे मिल सकता है और मनुष्यों की बुद्धि की दशा

॥ चौपाई ॥

अबआगेकासुनो बिचारा । काठ कीट बंधन निरबारा॥
जिनआसाअस्थावरमाहीं । सो रहे कीट काठ में जाई॥
यों बंधन बिस्तार बताया । अब छूटन का सुनो उपाया॥
कीट छाँड़ि नर देही पावा । जोजेहिकाठकापलंगबनावा॥
बनासिंघासनआसनसंता । जो वहि माहिं कीट नर अंता॥
कीट काठ में जो रहे भाई । जो जन नर भये चरन छुवाई॥
सो सुतार तन भयाबढ़इया। कीट काठ से संत कढ़इया॥
जस बुधि रही काठ के माहीं। जस लच्छन भाखूं समझाई॥
छिनक*बुद्धि भरमावे कोई। तुरत भर्म ले आवे सोई॥
छिनक बुद्धिमतिहीनबिचारे।सत मतमें जग रीति निहारे॥

॥ दोहा ॥

काठ बुद्धि काया धरी, कीट सुभाव निहार ।
सत मत में पाया नहीं, उलटे करत बिचार ॥

॥ चौपाई ॥

जोजिवअचरखानिसेआया।धरि नर देह चरन जिन पाया॥
करनीखानि माहिं कहा होई। इक तत करनी जड़ता जोई॥

*एक छिन में ।

पाँच तत्त करनी करि हारे। एक तत्त कहो कौन उबारे॥
जो कोइ संत भूमि जहँ बैठे। जीव भूमि के कर्म उलेटे*॥
जीव छुड़ाय जोनि से भाई। संत भूमि जहँ चरन छुवाई॥

## ( महादेव पारबती की कथा )

एक समय संकर और गौरा। चले जात मारग बड़े भोरा॥
संकर बड़ी डंडवत कीन्हा। पारबती मन भया मलीना॥
होइ मलीन संकर से पूछी। काहे करो डंडवत छूछी॥
देवल देव मनुष नहिं होई। कीन्ह डंडवत दीख न कोई॥
जब संकर ने बचन उचारा। बड़ी भूमि के भाग अपारा॥

॥ दोहा ॥

पारबती या भूमि का, क्या कहूं बरनम भाग।
दस हजार के बाद† यहँ, संत रहे यहि जाग‡॥
सुनु हिरदे कहुं संत की, महिमा अगम अपार।
कर प्रनाम वहि भूमि को, संकर बारम्बार॥

॥ छंद ॥

हिरदे बड़े वहि भाग भुमि, जहँ संत के चरना पड़े।
संकर करी परनाम अति सुख, सीस भूमी पर धरे॥
बारम्बार करि डंडवत, निज नीर से नैना भरे।
गदगद पुलक सब गात कहुं क्या, हरष हिये से ना टरे॥
संकर बिकल बेहाल हिरदे, कहत में छाती भरे।

* पलट दिये। † पीछे अर्थात बीते हुए काल में। ‡ जगत।

रहि गै कहें यहँ संत आगे, सहसदस बर्स के परे ॥
गहे चरन भूमि पुनीत जो जिव, संत ने कारज करे ।
हिरदे हरष मन तरक तोले, काज संतन से सरे ॥

॥ दोहा ॥

संत चरन अति बहुत बड़, जानत चतुर सुजान ।
जो संतन हित ना करै, सो नर पसू समान ॥

( हिरदे बाच )

॥ चौपाई ॥

अस्थावर नर देह अलेखा । भइ कस साहब कहो बिसेषा॥
कहो करनी उन कौन बनाई । पुनि फिर कस नरदेहीपाई॥

( तुलसीदास बाच )

॥ चौपाई ॥

अस्थावर जिव जड़ अस्थूला । कौन कौन कहुं याकी भूला ॥
जुगजुगकल्पकल्पकहूंलेखा । कहँ लग बरनन कहूं बिसेषा॥
की कोइ समय जोग परभाऊ ।की कोइ संत कृपा भइ काहू॥
फूल पात फल पान खवाये । अस्थावर अद्यादिक आये॥
बिचरत कोई संत चलिआये । भावभोगजिनरुचिरलगाये॥
जो जो बृच्छ पान फल बीड़ा । जिनजिनपायोमनुषसरीरा
सो जेहि के लच्छन दरसाऊँ।लच्छअलच्छदोऊसमझाऊँ॥
गुनऔगुन जसजसकरतूती । भाखूं होनहार मजबूती ॥

# स्थावर से नर तन में आये हुए जीवों का लक्षण और सुभाव

॥ दोहा ॥

अस्थावर की खानि का, नर तन माहिं सुभाय ।
दाव पेच जस जस वही, बरनि कहूं अलगाय ॥

॥ चौपाई ॥

हाँपत चले राह के माहीं । बैठत उठे पीर अधिकाई॥
बाई रहे बतीसो* माहीं । बाइचारनितप्रतिहिं सताई॥
पँच हथियार सवारी चावे । घोड़ा चढ़े हँफन सी आवे॥
जामा फेँटा पाग सुहावे । नित दरबार करन को चावे॥
जीव मारि मन आनँद माहीं । छौंके खाय बहुत सुख पाई॥
पूजा सेवा अधिक सुहाई । तीरथ बर्त करे मन लाई॥
और उपासना नेम बिचारै । ब्राह्मन मिलै चरन पर वारै॥
चुगली सैन करै बहु भाँती । हिरदे माहिं बसै दिन राती॥
हानि लाभ जिनके बहु नीके । नीका निरखि करे मन फीके॥

॥ दोहा ॥

यह अस्थावर खानि के, हिरदे लच्छ सुभाव ।
और बरनि आगे कहूं, मन के छलबल दाँव ॥

॥ चौपाई ॥

अब खाने का स्वाद सुनाई । दूध भात नीके मन लाई॥

*बत्तीस दाँत

उरद दाल फुलका बहु भावे । माहिं खटाई मिरच मिलावे॥
कढ़ी बरी तरकारी माहीं । यहसबस्वादअवसकरचाही॥
मीठा मिले चोरी से खावे । देखे खात तो हाथ छिपावे॥
जोकोइ माल पराया आवे । लेने को बहु मन ललचावे॥
कौड़ी खरचत प्रान गँवाई । वैसेइ कोइ दे आन खिलाई॥
नाच तमासा देखै जाई । मन में उमँग रहै बड़ भाई॥
हरि चर्चा में नींद जुड़ावै । जो जगवै तेहिं मारन धावै॥

॥ सोरठा ॥

सुनु हिरदे यह भेद, कर्म सुभाव लच्छन कहूं ।
आगे सुनो निषेद, जो जो भाखूं ताक जस ॥

॥ चौपाई ॥

आमैं सामै* देत लड़ाई । लबराई† की बात बनाई ॥
जब कोइ लड़े देइ हँसि तारी। अपनेअवगुन नाहिं बिचारी॥
माया मोह बहुत मन लावे । कधि रोवे कधि मंगल गावे॥
जोकधिहानिहोयघरकेरी । तो मारे सब घर को घेरी ॥
जूझ झपट करि रहे रिसाई। खाने को कहे गुसा‡ कराई ॥
जो कोइ घर में बड़ा कहावे । जाकी बात नेक नहिं भावे॥
उत्तर पर प्रति-उत्तर देई । लोचन रूख§ सनेह न जेही॥
मूल मुलाजा|| नेक न लावे । अपनी खरी बात ठहरावे ॥

---

*वक्त बेवक्त । †झूठा । ‡क्रोध । § रूखी आँखें । ||रू रिआयत ।

॥ दोहा ॥

यह अस्थावर खानि के, यह सुभाव जड़ताय ।
अपनी अपनी कहत है, पूरब अंग प्रभाय ॥

( हिरदे बाच )

॥ चौपाई ॥

हिरदेकहे स्वामी समझाई । सो सब कहन समझ में आई॥
अचरखानिकाकहा बिबेका । सो सब बैठा मन में लेखा॥
नर पिंडजपसुपिंडजआया । यह पसु पिंड धरी कस काया॥
यहहिसाबमोकोसमझावो । स्वामी दया दीन दरसावो॥
कौन जोग परभाव कहाया । ता से पसु पिंडज में आया ॥
सो बरतंत कहो समझाई । जासे चित की संसै जाई ॥
कर्म कांड जब हता न कोई । करनी कहो कौनसी होई ॥
देव पिंड पित्तर नहिं पूजा । केहि कारन दुरमति में जूझा॥

॥ दोहा ॥

सास्तर बेद पुरान यह, कब से संग सहाय ।
हाय हाय बंधन पड़े, लख चौरासी माहिं ॥

## नर से पशु योनि कैसे पाता है

( तुलसीदास बाच )

॥ चौपाई ॥

कहे तुलसी हिरदे सुन लीजे । कहुं बरतंत कान मन दीजे॥
पाँच तत्त नर कीन्ह बनाई । इच्छा नारि तुरत उपजाई॥
जड़चेतनजब गाँठि बँधानी । इच्छा नारि भई पटरानी ॥

इन अपना परिवार बसाया । सार तेज का भास नसाया॥
जब नर हुआ जगत का रासी* ।राज करे मन इच्छा बासी॥
जो इच्छा मन उठे तरंगा । जस जस खेल करे परसंगा॥
उधर आस सब दीन्ह छुटाई ।इधर तरँग मनइच्छा माहीं॥
जब कछु रहे नाहिं बिस्तारा। नर का नर होवे करतारा॥

॥ दोहा ॥

इच्छा रानी सँग हती, आप रहे करतार ।
जो तरंग मन में उठे, वैसा करे बेवहार ॥

## वेदोक्त करनी

( पिंडदान इत्यादि ) मनुष्य को तन की आसा धराती है

॥ चौपाई ॥

ऐसे कई दिवस गये बीती । तेहि पाछे भइ ऐसी रीती॥
ब्रह्म सृष्टि सब जक्त कहावे ।उतरे नहिं नहिं बंधन आवे॥
जब बेदन का किया उचारा । ओंकार जब सब्द निकारा॥
सो भया सब्द तिरकुटी माहीं। बेद नाद ने यों उपजाई॥
जबजब बेद किया बिस्तारा। कर्मकांड करनी निरधारा ॥
अस बेदन ने कही पुकारी । यासे सृष्टि बही चौधारी॥
ब्रह्म सृष्टि का तेज उड़ाई । जब नर सृष्टि भई सुनु भाई॥
जब रहि ब्रह्म सृष्टि बरहाला†।परम हंस मति जब से चाला॥
वही समय बेदांत बतावे । यह नर मनुष ब्रह्म ठहरावे॥
ब्रह्म तेज परथम था भाई । तेज गये नर मनुष कहाई॥

* रसिया । † क़ाइम ।

दिव्य ज्ञान हिरदै रहैबासा। जब बंधन से ब्रह्म खुलासा॥
सो बेदान्त बाक बतलावै। नर बुधि ज्ञान ब्रह्म ठहरावै॥

॥ दोहा ॥

ब्रह्म सृष्टि पहिले हती, जब रहे ब्रह्म प्रमान।
नर सृष्टी जब से भई, बेद बचन उरझान॥

॥ चौपाई ॥

नर सृष्टी जब से भइ भाई। केवल कर्म बेद अधिकाई॥
नर घर अधर तजे जग माहीं। करनी कर्म कार उपजाई॥
यासे नर तजि पिंडज बासी। पसुवत देंह धरै अबिनासी॥
पसु पिंडज ऐसे उपजाया। नर तजि देंह पसू में आया॥
पिंडज सब जो जात कहाई। फिरि फिरि रहे जहाँ लगि भाई॥
गिनतीका कछु अंत न छेवा*। यह सब संत बतावें भेवा॥
हिरदे जग याको कहाजाने। संत काज सज्जन को छाने॥
वह विबेक रस पिये विचारी। छूटि भर्म रुचिकीअधिकारी॥

॥ सोरठा ॥

नर पिंडज पसु पिंड में, यों अस कियो प्रबेस।
करनी कर्म कराय के, बेद बरन जग भेष॥

॥ चौपाई ॥

षटदर्सन सनमान बढ़ाये। यह सब बेद मते में आये॥
जोगी जती सेवड़े† भाई। सन्यासी दुरवेस कहाई॥
और जंगम† इक जाति कहाई। ऐसे षट दर्सन दरसाई॥

*हद। †भेषों के फ़िरक़ों के नाम।

इन से भये छानवे पीछे। सो प्रबेस पाखँड जग बीचे॥
यहि पाखँडने जक्त भुलाया। अपनी पूजा बरनि बताया॥
याके संग सृष्टि सब लागी। भव के भूत भये अनुरागी॥
किरिया करन मरन जब लागे। ब्राह्मन पिंड करे जग आगे॥
पिंड सरीर आसा बँधवाई। यों भया जिव बंध के माहीं॥

॥ दोहा ॥

पिंड आस बँधवाय के, अविनासी रहे छाय।
अपनी आदि बिसारि के, कोइ पीछे नहिं जाय॥

॥ चौपाई ॥

यों परबेस खानि का लेखा। बूझै को जो करे बिबेका॥
यों आसा पिंडज की काया। कर्म पिंड पिंडज में लाया॥
पिंड कर पिंड बँधाई आसा। यों पिंडज पसु तन मेंबासा॥
यह सब बेद कीन्ह उपचारा*। बाँधे सभी सिरन पर भारा॥
यासे नर पसुवत में आया। दुर्लभ तजि जग में भर्माया॥
पसुवत ज्ञान हीन है काया। यह प्रभाव से बहुत भुलाया॥
एक रोग की औषधि नाहीं। पचिपचि मरै हकीम कहाई॥
पावे संत चरन निरबारा। और नही कोइ भाँति उबारा॥

॥ दोहा ॥

पसुवत पिंडज अंग को, नहिं कछु ज्ञान समाय।
सँग अज्ञान जड़ देहि में, औषधि लगे न ताहि॥

* करतूत।

# पशु से नर चोला फिर कैसे मिलता है

॥ चौपाई ॥

यों बिधि हिरदे कारज नाहीं। दया संत की जो बनिआई॥
जब कभि संत चरन चलिआये। कृपाकीन्हदीन दिल लाये॥
जब कबहूं कोइ जीव जो दाया। चरनधूरिरजपावन* पाया॥
चारा चरत चरन पड़ि गयऊ। वहिप्रतापसेनरतनभयऊ॥
उड़ी रज धूरि चरन की भाई। किनकाउड़िलागैतनमाहीं॥
दधि घृत मट्ठा और असवारी। रज पावन नरदेहिसँवारी॥
कहुं मारग चलते परछाईं। पड़ीजायजिवसुफलकहाई॥
पिंडज से यह यों तन पावे। मनुषसरीरसुभगजबआवे॥

॥ दोहा ॥

संतन की यह मेहर से, जो कछु होय उपाव।
नाहिं और तादाद की, बात बिना बरनाव॥

॥ चौपाई ॥

यह अब पसुवत से नर आवा। जाका सुनो सकल परभावा॥
गुन लच्छन लख लोक लखाऊँ। जस जस पर बलप्रकृतसुभाऊ॥
बैरागी होइ उन्मति† धारी। करै ज्ञान जो बेद बिचारी॥
जग ब्योहार हरष बहु माने। उजले बस्तर सुभग सुहाने॥
सौड़‡ सुपेदी पलँग बिछाई। पान सुपारी बीड़ा खाई॥
जो सन्मान करे कोइ आई। बहुत भाँति से सीस नवाई॥

---

* पवित्र। † मस्ती। ‡ बिछौना।

बोलै बचन मीठ मधुराई। करै सनेह छाँड़ि चतुराई॥
काँचे बचन बाक नहिं काढ़ै। प्रीति परस्परनितप्रतिबाढ़ै॥

॥ दोहा ॥

पिंडज से जो नर भया, जाका यही सुभाव।
और बहुत कहँ लग कहूँ, बरनन का परभाव॥

॥ छंद ॥

पिंड के प्रभाव पुनीत नर यह, देँह पसुवत की धरे।
बिधि बेद के मारग मते से, आप जिव बंधन पड़े॥
जासे भई बहु खानि काया, ममत माया में मरे।
गुरु ज्ञान बचन बिचार कहे कोउ, नेक हिरदय ना धरे॥
बिन संत के नहिं अंत पावे, खोजि के पचि पचि मरे।
जिन पै कृपा भइ संत की, जब अंत के कारज सरे॥
नहिं और ठौर उपाव लागे, भाग कर्मन के भरे।
हिरदे दया दिल संत बिन, नहिं जीव को कारज सरे॥

॥ दोहा ॥

संत चरन कारज सरै, हरै सकल बिष ब्याधि।
साध सुरति चरनन रहै, टारै सकल उपाधि॥

( हिरदे बाच )

॥ चौपाई ॥

नर की नर धर देंही पाई। सो साहब कहो बरनि सुनाई॥
सो बरतंत कहो बिधि लेखा। समझपड़ेबिधिबाकबिबेका॥
करनी कौन कीन्ह करतूता। क्योंकरकीन्हामन मजबूता॥
की कोइ करतब के बसि पाई। की सतगुरु की दया बसाई॥

की कोइ और रंग रस भावा। सो जा से नर देंही पावा॥
संतनकी सब साख विचारी। दुर्लभ सब कहें सब्द सिहारी॥
सब सतसंग सुनावत तंता। बिन सतगुरु नहिं पावे पंथा॥
असअसबरनिकहीसबबानी।सोसाहबमोहिंकहोनिसानी॥

॥ दोहा ॥

नर तन से नर होत है, बहुत कहें नहिं होत।
यह जग में बायब* सुने, बिन करनी कहें थोथ॥

॥ चैापाई ॥

यह स्वामी अचरज की बाती।को जाने यह समझ सनाथी॥
भूत भवेस†बरन जिन कीन्हा।उनकीसुरतिकहाँभइलीन्हा॥
आगे कही भई वहि भाखे। सोसूरति रस कस कस चाखे॥
कहँ को गये कहा उन पाया। ऐसी कहो कहाँ दृष्टि समाया॥
यह कहुं कहन जक्तनहिंजाना।दृष्टि नपड़ी सुनी नहिं काना॥
यहबरननभिनभिनसमझावो। हिरदे के दिल को दरसावो॥
जो परबोध मोद मन आवे। हिरदे की तब सुरति जुड़ावे॥
कई दिवस का सोच समाना। सोनिरबारकहोबिधिनाना॥

॥ दोहा ॥

कौन करसमा‡ देखि के, सब कहें बिधी बयान।
भिन भिन भाखो उधर की, बाचा बचन प्रमान॥

---

* अचरजी, दुर्लभ। † भविष्य। ‡ कौतुक, इशारा।

# नर का पुनर्जन्म नर तन में क्योंकर होता है

( तुलसीदास बाच )

॥ चौपाई ॥

सुनु हिरदे यह बरन बयाना । भाखूं संत बचन परमाना॥
पूछी तैं नर से नर भइया । यहप्रतिबाकबचनतैंकहिय ॥
सुनु याकी बिधि कहूं बुझाई । परथम से कहूं बरन सुनाई॥
बुंद सिंधु से निर्मल आया । चोला पहिर धरी नर काया॥
काया के गुन ब्यापैं नाहीं । या बिधि रहै बदन के माहीं ॥
आसातन बंधन नहिं भासी। रस माया से रहै उदासी ॥
जग का राग त्याग बैरागा । रहै अंतर इन से मन भागा॥
नहिं संग्रह तजि त्याग कहाई। उभै बंध बस के नहिं भाई*॥

॥ दोहा ॥

आस बास बस ना रहे, निर्मल अंग उदोत† ।
पोत परख अपनी रहे, ज्यों दरियाव का सोत॥

॥ चौपाई ॥

जैसे बादल जल भरि लाया । ज्यों अकास भुइँ पर बरसाया॥
भुइँ पर बुंद पड़ा जल जेता । गया तड़ाग‡ सलिता§ में तेता॥
जो समुद्र से बाहर बरसा । जल भूमी मिलि मैला परसा॥
जो जो बुंद पड़ी समुदर में । निरमल बुंद धसा अंदर में॥

---

* वह गृहस्थाश्रम को छोड़कर भेष नहीं लेते क्योंकि उन के मन का बंधन किसी में नहीं है । † प्रकाश । ‡ तालाब । § नदी ।

यह नर तन यों ऐसा पाया। जैसे बुंद सिंधु में आया॥
जो जल भूमि पड़ा सुनु भाई। मैला नीच कींच के माहीं॥
मलअरुमुत्रपृथ्वीपरपड़िया। वे वे मिलि मन अंदर भरिया॥
जब निरमली* कहूं से पावे। होइ उजला जल मैल थिरावे॥

॥ दोहा ॥

निर्मली जल निरमल करे, जल मलीन थिरियात।
जग ढूंढ़त ढूढ़त रहे, पड़ी संत के हाथ॥

॥ चौपाई ॥

ऐसामैला जगत दिवाना। निरमलीकानहिंखोजपिछाना॥
वह निरमलो संत के पासा। मिलैमेहरजबहोइखुलासा॥
निरमलि बिना मैल नहिंजाई। जोकोइकोटिन करे उपाई॥
निरमलि नाम दया का होई। जो अंदर मल डारे धोई॥
दीन गरीबी भक्ति सुहावे। जब सतगुरु किरपा से पावे॥
नहिं तलास कोइ ढूंढ़नहारा। तनमन फैलि रहा जग सारा॥
अंदर मन में साँच न आवे। मन परदे कर बचन सुनावे॥
परदे आड़े आप कराई। गुरु को देवे दोष लगाई॥

॥ दोहा ॥

गुरू बतावें पुरब को, चेला पच्छिम जाय।
अंदर टाटी कपट की, मिले जो क्योंकर आय॥
तन मन से साँचे रहे, अंदर मेल मिलाप।
साफ सूपेदी को करे, धोबी के परताप॥

---

*एक बीज जिसे गदले पानी में डालने से वह निर्मल हो जाता है।

॥ सोरठा ॥

काग पढ़ाया पींजरे, पढ़ गया चारो बेद ।
अंदर की छूटो नहीं, रहा ढेढ़* का ढेढ़ ॥

॥ चौपाई ॥

यों ऐसा मैला मन भाई । कहो क्योंकर आवे सुथराई ॥
काल अपरबल बाजी लाई । यह पाजी को मालुम नाहीं ॥
अब याका परसंग सुनाऊँ । काल बली का छल दरसाऊँ ॥
यहि कबीर के ग्रंथन माहीं । भाखे आप कबीर गुसाईं ॥
संतन की यों साख सुनावे । बिना साख परतीत न आवे ॥

## (मधुमकुंद सेठ के रूप में काल)

मधुमकुंद इक सेठ रहाई । घर में त्रिया और कोउ नाहीं ॥
खुद कबीर का चेला होई । द्वादस† और संग में सोई ॥
संग कबीर कृपा नित राजे । तन मन सूरति चरन बिराजे ॥

॥ दोहा ॥

आठ पहर लागी रहे, सुर्रति कबीर के माहिं ।
यों ऐसे सब संग महिं, काल किया छल दाँव ॥

॥ चौपाई ॥

जबही सेठ ने चोला छोड़ा । सूरति मन साहब से पोढ़ा ॥
सतगुरुसब्द कबीरकहाया । सूरतिनिरतिमिलाप मिलाया ।
जहँ का माल जहाँ पहुंचाया । साहब कबीर ग्रंथ में गाया ॥
जेहि पाछे इक भया तमासा । कियाकालइकखेलबिलासा

* कौवा । † कबीर साहब के बारह मुख्य चेले थे ।

धर्मदास को कबीर सुनावे । अचरजका लेखा समझावे॥
सो मैं हिरदे तोहि सुनाऊँ । जैसी की तैसी समझाऊँ॥
कालपवन का रूप बनाया । तिरियाका[illegible]आनघुमाया॥
बोला बचन नाम गोहराई । मैं मकुंद हूं सेठ जनाई ॥

॥ दोहा ॥

जहाँ कबीर बैठे हते, द्वादस संगी पास ।
खबर जाइ के यों कहो, त्रिया सिर सेठ घुमाय ॥

॥ चौपाई ॥

द्वादस साथि संग में बोले । स्वामी यह तो सुनी अतोले* ॥

(कबीर वाच)

तब कबीर बोले मुख बानी । याका भेद कहूं सब छानी॥
बिरोधकालका हमसे परिया । नामसेठकहेसिरपरचढ़िया॥
काल भूत होइ त्रिया घुमावे । यों कबीर मत झूंठ कहावे॥
द्वादस साथि समझ भरमावे । तौ इनके कोइ पास न आवे॥
मुक्ति द्वार को दीन्ह खुलाई । तौ संसार रहन नहिं पाई॥
जीव अहार करूं मैं मोरा । सो कबीर ने बंधन तोरा॥

(तुलसीदास वाच)

हे हिरदे यहि काल जनाया । कालभूततिरिया सिर आया॥

॥ दोहा ॥

सेठ गये निज धाम को, कीन्हा काल प्रपंच ।
भूत रूप तिरिया छली, नहिं कबीर मत संच ॥

*अचरजी बात ।

॥ चौपाई ॥

ऐसे काल करी छल बाजी । कोइ कबीर से रहे न राजी॥
ऐसे धरमदास से भाखी । कही कबीर ग्रंथन में साखी॥
सतसँगसाँचहोन नहिं पावे । यों छलकरिकरिकालजनावे॥
हे हिरदे सत संगत माहीं । निहचै काल उपाधि उठाही ॥
जो भरमाय गये जम जाला । उनको खाय गया घर काला॥
वह उपद्र* केहि कारन करई । चारा मोर जीव अनुसरई॥
मोरी खुद्या† कौन बुझावे । यह कबीर मत मोर नसावे॥
जिनसतसंगरंग नहिं पाया । जिनके सदा काल उर छाया॥

॥ सोरठा ॥

हिरदे सुनु सम्बाद, काल दाँव ऐसा करे ।
सूरत देत घुमाय, जाय पड़े मुख काल के ॥

॥ दोहा ॥

ग्रंथ पदम सागर महीं, कहि कबीर सम्बाद ।
धरमदास से कहत हैं हिरदे तुलसीदास ॥

॥ चौपाई ॥

काग असज्जन की समझाई । यह तो सब मोरे मन आई॥
बायस‡ पालिये अति अनुरागा । होय निरामिषि§ कबहुं‖ कागा ॥
यह रामायन में चौपाई । हिरदे को दृष्टांत सुनाई ॥

*उपद्रव, फ़साद । †क्षुधा, भूख । ‡कौआ । §मांस अहार का त्यागी । ‖कभी ।

काल फाँस में कागा आवे। पंछी पकरि पारधी* लावे॥
फंदा करि जिव घेरे आई। ज्यों नलनी का सुवना भाई॥
जग यह यों अस काल फँदाना। ऐसे असज्जन का सरधाना॥

हिरदे बाच

जब हिरदे इक पूछि प्रसंगा। स्वामी कहो हंस सतसंगा॥
रहनिगहनिकहोबूझिबिचारा। हंसन के पद का निरवारा॥

॥ दोहा ॥

हंसन की रहनी कहो, तन मन सुरति सुभाव।
काल बली के पेच से, कस कस निकरे जाय॥

( तुलसीदास बाच )

॥ चौपाई ॥

हे हिरदे सज्जन गति न्यारी। करें भक्ति वे सुद्ध बिचारी॥
मुक्ताहल† मोती चुनि खावे। मानसरोवर में सुख पावे॥
त्रिकुटी माहिं चित्र चित सारी। सो वहँ जाइके दीपक बारी॥
बिना तेल बिन बाती भाई। दीपक जरे रैन दिन माहीं॥
चहुंदिसि फैलि रहा उजियारा। तेज पुंज वह देस निहारा॥
सो घर वहि हंसन का बासा। करें कौतूहल हंस हुलासा॥
निसदिन प्रेम भक्ति अनुरागी। तद्यपि नाम बिमल बड़भागी॥
आगे तोहिं प्रसंग सुनावा। हंसा बुंद सिंधु यों आवा॥

॥ दोहा ॥

बुंद सिंधु हंसा मिले, निर्मल मुक्ति बिचार।
नर देंही की अब कहूं, सुनु यह हिरदे सिहार॥

*शिकारी। †हंस।

॥ चौपाई ॥

सूरा होवे रन के माहीं । भव डर कंप कधी नहिं आई॥
निद्रा रैन दिवस नहिं सोवे । जब देखो तब जागत जोवे॥
कोइ बँदगी डंडवत करावे । सबके पहिले सीस नवावे॥
भूखा कोइ देखा नहिं जाई । जब कछु देवे जीव जुड़ाई॥
दया सील संतोष अपारा । भक्ति अरुज्ञानचलेचौधारा॥
बैठे बैठे में मरि जावे । देह छूटि फिर नर तन पावे॥
प्रान छूटि निज घरमें बासा । सुनु हिरदे यह भेद खुलासा॥
नर नर का तन ऐसे पावे । जब कहूं हिरदे लखन में आवे॥

॥ सोरठा ॥

नहिं मूरख पतियात, ले जराय बाती दिया ।
हिये अंदर के माहिं, देखो जोइ निहारि के ॥

॥ चौपाई ॥

सतगुरु नाम सुरति की बाती । गैबी जोति जरे दिन राती ॥
हिरदे यह सज्जन की रीती । अंग असज्जन करे अनीती ॥
परखिप्रकृति का कहूं सुभाऊ । कहि लच्छन उनके दरसाऊँ॥
कूर कुभंडी लुच्चे नंगे । वे गँवार कहें बचन बिढंगे॥
जो उनकी सोहबत सँग करई । नरकखानि जुगजुगलौं परई॥
मुख बोलै नहिं बचन सँवारे । जैसे मेढक हंस विचारे॥
हंसन की हाँसी करवावे । काग सुभाव कभी नहिं जावे ॥

## ( मेढक हंस सम्बाद )

याका इक दृष्टांत सुनाई । मेढक रहे कूप के माहीं॥
हंसा आय दिसंतर बाटे । बैठे जाय कूप के काठे॥

( मेढक बाच )

मेढक ने पूछा को आही। आये कहाँ कौन हो भाई॥

( हंस बाच )

हम हैं हंसा जाति गरीबा। कागा हमसे करे हरीफा*॥
कागा मिले आपको हारे। जीतन की नहिं गैल सिहारे॥
हंसा हंस मिले सुख होई। बिमल बिलास करें मिलि दोई॥

॥ सोरठा ॥

सुन मेढक यह रहस, देस हमारा दूर है।
रहें दरियाव के पार, हंस नाम हमरो कहें ॥

( मेढक बाच )

वह दरियाव बड़ा कहो केता। कहाँ वह देस तहाँ तैं रहता॥
चैापट चैाड़ा केता पानी। सुन के समभ्क लेव सहदानी॥

( हंस बाच )

जब हंसा बोले अरे भाई। सिंधुअथाहकोइथाहनपाई॥
जल जोजन कहा कहूं बताई। संख्या नाहि असंख्या भाई॥

( मेढक बाच )

तब छलाँग मेढक इक मारी। कही समुद्र इतना है भारी॥

( हंस बाच )

तब हंसा बोले सुनि लीजे। सिंधु अथाह थाह कहा कीजे॥

(मेढक बाच)

जब मेढक मन में रिसियाना। दे फलाँग दूजी अभिमाना॥
कहे मेढक इतना है भाई। जो दरियाव रहै तैं जाई ॥

* शरारत

(हंस बाच)

जब हंसा ने बचन उचारा। बिन जाने कहा करे बिचारा॥

(मेढक बाच)

तब छलाँग तीसर उन मारा। यासे कहा कहे अधिकारा*॥

(हंस बाच)

कूप सिंधु कहा पटतर लावे। तोरी बुद्धि समझ नहिं आवे॥

(मेढक बाच)

मेढक के मन गुस्सा छूटा। तैं है लबार जक्त का झूठा॥
यासे कहा बड़ा बतलावे। तैं अंधे को नजर न आवे॥
मेढक टेक आपनी राखा। हंसा को झूठा कहि भाखा॥

॥ दोहा ॥

सज्जन और असज्जना, दोनों का प्रतिबाद।
हंस हारि आपइ गये, मेढक अधम उपाध॥
ज्यों अज्ञानी मनुष को, मेढक बुद्धि बिचार।
हार जीत माने नहीं, ज्यों मछ धीमर जार†॥

॥ छंद ॥

मेढक अधम कहै हंस से, यह कूप से भारी कहा।
हंसा कहे दरियाव की गति, जन्म से हूँही रहा॥
दोनों में यह प्रतिबाद उत्तर, परसपर होता रहा।
कहि बात हंस न मानि मेढक, भूल में बादै बहा॥

---

*इस से बिशेष क्या हो सकता है। †जैसे मछुआ के जाल में फँसी हुई मछली।

हंसा सरोवर बास बस, जस दृगन से देखी कहा ।
मेढक कुबुद्धी जाति मूरख, उमर भर देखा कुआ ॥
वो सिंध की संधि समझ बिन, नहिं हंस की बातें सहा ।
हिरदे कठिन मन मेढका, जड़ टेक में अपनी रहा ॥

॥ सोरठा ॥

मेढक मूरख ज्ञान, हानि लाभ समझे नहीं ।
हंस सिरोमनि आहि, जानि बूझि बरते नहीं ॥

॥ चौपाई ॥

मेढक मन यह मनुष कहाया । संसै के भव-कूप रहाया ॥
समुदर संत हंस जहँ बासा । मानसरोवर सदा निवासा ॥
वह जड़ कहे कूप की बातें । सुरत समुंदर हंस समाते ॥
इनउनकाकहाबाकमिलापा । वे कहें और और इन थापा ॥
मेढक मन बस जीव विचारा । यह कहा जाने वार अरु पारा ॥
भौजल कूप बंध में बासा । हंस सरोवर रहे खुलासा ॥
हंस सीख जो मेढक माने । भव जल कूप परख जब जाने ॥
मानसरोवर संधि लखावे । कूप भवन तजि हंस कहावे ॥

॥ दोहा ॥

मेढक माने कहन को, हंस बचन बिस्वास ।
आस कूप भव जल तजे, सरवर हंस निवास ॥

( हिरदे बाच )

॥ चौपाई ॥

हे स्वामी इक बिस्मय जानी । हंसनकीक्योंबात न मानी ॥
मन बुधि में मेढक नहिं लावा । कहोस्वामीयहकौनिप्रभावा ॥

संत परमारथ के सहुकारा* । कारज करज मुक्ति निरबारा ॥
यह नहिं लेत चेत चित लाई । कौन खोट कर्मन के माहीं ॥

## चेतावनी और उपदेश

(तुलसीदास बाच)

भेष संत दोउ एक समाना । संतचीन्हनहिंपरखपिछाना॥
दोऊ को यह इक सम जाने । धनवँत निरधन परख न आने॥
करज कँगाल से लेने चाले । लकड़ी बाँस बेचने वाले ॥
वह का देवे करज बिचारा । मेहनत करि करि पेट सँवारा॥
साहूकार से लेन न आवे । नित निरधन से माँगन जावे॥
आवे न हाथ टका इक भाई । मूरख वोहि की करत बड़ाई॥

॥ दोहा ॥

निरधन से निरुचय करे, साहूकार से फेर ।
कहर† करे कधी कोप से, करत सुरति से बैर ॥

॥ चौपाई ॥

अंधा जग यह फिरत भुलाना । माँगे भेषन का नहिं जाना॥
सतगुरु की कोइ गैल न पावे । सूरति सिख सतगुरु पै आवे॥
ऐसा उनको कहा बिबेका । देखा सुना गुना न परेखा॥
जो संतन की साख बिचारे । दृष्टि माहिं जब इष्ट निहारे॥
इष्ट जान के इस्क लगावे । तौ सुधि बुधि थोड़ीसी पावे॥
उनकी कृपा दृष्टि है न्यारी । यह कहा जाने भेष अनारी ॥
जस जग रीति भेष के माहीं । भेष भिखारी जक्त कहाई॥
ज्ञानी बड़े गाँठि नहिं पैसे । वे लखपती होइ हैं कैसे ॥

*साहूकार । †क्रोध ।

॥ दोहा ॥

लखपतियन की रोकड़ी, अँगड़े लैके जाय।
साह दिसावर के बड़े, खाते जमा कराय॥

॥ चौपाई ॥

माल अपूरब संतन केरा। सो जग कोइ पावे नहिं हेरा॥
उनका रोकड़ माल खजाना। बीजक वह उनही का जाना॥
माल सड़े नहिं काई लागे। चोरै न चोर रैन दिन जागे॥
कबहुं न हाथ चढ़े केहु भाँती। खोदत रहे दिवस अरु राती॥
यह दौलत दुनिया नहिं जाना। गुप्त भेद में माल छिपाना॥
दया दीन दिल कूंची* पावे। मेहर नजर करि वे दरसावें॥
जो मूरख कोइ लेन बिचारे। जन्म जन्म पचि पचि के हारे॥
जुगन जुगन कोउ अंत न पाया। घर घर मुए अनेकन काया॥

॥ सोरठा ॥

यह दौलत दरबार की बकसीसी† के माहिं।
और तरह आवे नहिं, कोटिन जन्म सिराय‡॥

॥ चौपाई ॥

यह जग अँग सँग में मतवारा। चावे विषय भोग अनुसारा॥
इन्द्री सुख बहु भाँति सोहाई। मद के नसे छके रहे भाई॥
रात दिवस सिर काल सिकारी। पकरि घेर के मारि पछाड़ी॥
जब कोइ कुटुंब काम नहिं आवे। जम जुलमी की जूती खावे॥
दो दिन जग में देख तमासा। फूले फिरैं जक्त मन आसा॥

---

*कुंजी। †बखशिश। ‡बीत जाय।

कबहुं न हार हिये में लावै । मूरख जन्म बाद यों जावै॥
जग सुपना अपना करि चावै । अंतसमयकोइकाम न आवै॥
यों जग की यारी समझावा । मुए गये कोइ खोज न पावा॥

॥ सोरठा ॥

गुल लाला का फूल, छुवत हाथ मुरझात है ।
ज्यों ओला जल गाँठि, काँचे बर्तन नीर जस ॥

॥ चैापाई ॥

नर तन पाय किया का भाई । अंदर की नहिं अगिन बुझाई
जुग जुग रहा खानि में भटका । काल कला कर्मन में लटका॥
नरतन ले कहो का फल पाया । जानाजोजिनआप बनाया॥
यहऔसरभलिभाँतिबिचारे । नहिं यह जन्म वायदे* हारे॥
मन आपने बिबेक बसावे । बढ़ीघटी सब नजर में आवे॥
ज्ञानी रहे मगन मन माहीं । सुपने दुख सुख ब्यापे नाहीं॥
ज्ञानवंत नर परम अनंदा । भक्ति सिरोमन काटै फंदा॥
ज्ञानी का जीवन जग माहीं । रहे बिचार हिये लघुताई ॥

॥ दोहा ॥

बाक† ज्ञान में निपुन है, अंदर का नहिं भेद ।
उग्र‡ ज्ञान बिन भक्ति के, जुग जुग पावे खेद ॥

॥ चैापाई ॥

संत बिना नहिं कारज होई । या बिधि बात कहें सब कोई॥
जो संतन के बचन उचारा । बिन सतसंग नहीं निरधारा§॥

---

* वायदा=वादा यानी इक़रार जो मालिक के भजन का जीव ने गर्भ में किया था । दूसरे तौर पर "बाद ही" भी हो सकता है जिस के मानी "बेफ़ायदा" के हैं । †बाच या ज़बानी । ‡प्रचंड, लक्ष । §स्थिरता ।

ऐसे आगे सारा पुकारे । साँच होय तन मन से हारे॥
दुर्गम घाटी काल कराला । बाँधीबाटजुलमजमजाला॥
सतगुरु तेग सुरति से काटे । निकरि जाय जुलमी की बाटे॥
तन मन सोधि रहे निरबाना । तब लख पावे पुरुष पुराना॥
जुग जुग से जिव चले अनेरा । काटा कधी न जमका घेरा॥
जन्म जन्म चौरासी माहीं ।कबहुं न सुरति संधि को पाई॥

॥ दोहा ॥

सुरति सब्द के भेद बिन, होय न पूरन काम ।
चमर चाम की दृष्टि में, तन तत तिमिर* समान ॥

॥ चौपाई ॥

अंडज पिंडज उष्मज खाना । चौथे मनुष जन्म का जामा॥
यह सब बाक बचन बरतंता।यहि बिधि कही जुगन जुग संता
जिन नर तन में मूल बिसारा।कबहुं न होय खानि निरबारा॥
उत्पति परलै में जिव जावे । फिरिफिरि जग जिव खानि समावे ॥
करनी करे भोग फल भाई । जोनी धर फल को भुगताई॥
यह रहनी की बात बिचारा । यामें नहीं होय निरधारा†॥
करनी करे कर्म की बाजी । इन्द्री सुख भोगन में राजी॥
बिना सुरति नहिं संसै जाई । यह सतगुरु भाखें गोहराई॥

॥ दोहा ॥

करतब तो सब ने किया, जस जस जिनको भेद ।
कर्म खेद छूटी नहीं, सूरति सब्द उमेद ॥

---

*अंधकार । † स्थिरता ।

( हिरदे बाघ )

॥ छंद ॥

हिरदे अरज कहे साँच स्वामी, सब्द तो ऐसी कहे ।
सत बचन वाक बिलास बोली, आम बिन ऐसे रहे ॥
कोइ सुरतवंत जो पंथ पावे, बिकट मारग को गहे ।
इन्द्री सिथल मन कैद करिके, जुगति थिरता की लहे ॥
ज्यों पेड़ पौद झकोर पवना, यों डगन मन की सहे ।
जब सुरति सोधि उपाधि टारे, बाट मन की ना बहे ॥
धर नीलगिरि पर ध्यान निस्चल, सिखर पर सूरत रहे ।
हिरदे बिना अस काज कीन्हे, मीन जल मछरी बहे ॥

॥ सोरठा ॥

सुंदर* में स्रुति ध्यान, ज्ञान भक्ति बल्ली गहे ।
करि केवट पहिचान, सतगुरु पार उतारिहैं ॥

॥ चौपाई ॥

यहि बिधि करे जीव निरबारा। भव जल से जब उतरे पारा॥
यह ऐसे बिन कधी न होई । यहिबिधिसंतकहेंसबकोई॥
संत जुगन जुग कहते आये ।कोई जीव ख्याल नहिं लाये॥
भवसागर में नाव बतावें । जो कोइ उतरि पार को जावे॥
परमारथ के संत सुखदाई । उनके हृदै दया रहे छाई॥
वे पुकार करि कहें अवाजा । ज्यों मेघा बादर में गाजा॥
गरजे मेघ सुने सब कोई ।अस कहें गरजि संत सब सोई॥
जड़ता जीव जोनि के माहीं ।उनके बचन कान नहिं लाई॥

*सुन्न का द्वार ।

॥ दोहा ॥

वे दयाल जुग जुग कहें, बहिरा सुने न कान ।
ज्यों मतवाले मद पिये, छके नसे के माहिं ॥

॥ चौपाई ॥

यों अस फिरे खुमारी माहीं । छके नैन मद कहा न जाई॥
सब्द साख कहें बचन पुकारे । यह मूरख मन में नहिं धारे॥
ग्रंथ बनाय कीन्ह यह काजा । डारे भाख अनेक समाजा॥
नर तन यह यहि में कछु लावे ।करिउपावबुधि ज्ञान जगावे॥
निरमलज्ञान सिला जल धोवे । मैले से उजला यह होवे॥
कई प्रकार की बानी बोले । यहअज्ञानगाँठि नहिं खोले॥
कहते कहते जन्म सिराना । एक न बात कान पर आना॥
संतन की कछु खोर* न भाई ।कहन कहें सब कछु गोहराई॥

॥ दोहा ॥

यह अज्ञानी पातकी, सुने न उनके बैन ।
कहन कान लावे नहीं, कहाँ मिले सुख चैन ॥

॥ चौपाई ॥

ऐसे भटक भटक दुख पावे । चौरासी बंधन में आवे॥
राज रोग रोगी जिमि होई । वाको औषधि लगे न कोई॥
ऐसे रोग रहे संसारा । कोइऔषधिनहिंदर्दसिहारा॥
संत हकीम दवा को देवें । निर्मल अंग आप करि लेवें ॥
बिना दाम की दवा बतावें। जीव सुखी करि रोग छुटावें॥

---

*क्रोध, सराप ।

यह कमबखत कहननहिंमाने। भूत भवानी में मन आने॥
करे पिसाच अरु पित्तर पूजा। सतसँग की कछु बात न बूझा
कैसे भरम जीव को जावे। मैली बुधि नहिं ज्ञान समावे॥

॥ दोहा ॥

जुगन जुगन बंधन पड़े, कर्म काल के द्वार।
नर्क स्वर्ग की सुधि नहीं, दुख सुख बारम्बार॥

॥ चौपाई ॥

ज्यों कूकर हड़काना* होई। मारे मार करे सब कोई॥
जो घर को कोइ के पग धारे। दुरदुर करि के मारि निकारे॥
ऐसे जीव भया हड़काया। आवागवन नाहिं सुख पाया॥
उपजे मरे बहुरि तन पावे। फिरिफिरिआवागवन समावे॥
चौरासी बासी बस होई। जनमे मरे काल मुख सोई॥
ऐसे जनम अनेक सिराने। सतगुरु वाक बचन नहिं माने॥
खानिहिखानिजनम जुगधारे। बिन अधार फिरे मारे मारे॥
अंत अधार कोई नहिं कीन्हा। बिना सार सन्मुख नहिं चीन्हा॥

॥ दोहा ॥

जो सन्मुख रहे संत के, अंत कहूं नहिं जाय।
सूरति डोरी लै लगे, जहँ को तहाँ समाय॥

॥ चौपाई ॥

त्रियसुत मात पिता परिवारा। यह झूंठे इन बंधन डारा॥
मोह जाल जग रह्यो बँधाई। ममता माया बिपति बसाई॥

---

*दुरदुराना, रोकना।

यह जम जाल घेरि घुन खाई। जैसे कीट काठ के माहीं॥
घुनघुन खाय काठ को भाई। यों संसै सब जग घुन खाई॥
रातदिवस कोइ चैन न पावे। संसै सुपने जाइ सतावे॥
यह बंधन बिपता ने मारा। कैसे होइ जीव निरवारा॥
जुगनजुगन परिपाटी* आई। यों जिव पड़ा [illegible] के माहीं॥
ज्ञानबिबेकबचननहिं बूझा। यौँभयाअंधआँख नहिं सूझा॥

॥ दोहा ॥

आँखी में जाले पड़े, काढ़े कौन निकारि।
जब सथिया† नस्तर भरे, सुरति सलाई डारि॥

॥ चौपाई ॥

जब छूटैँ आँखी के जारे‡। सुरति सलाई नैन निहारे॥
सो कोइ यह सतगुरु से पावे। तिमिर नैन के तुरत छुड़ावे॥
यों जग का छूटे अँधियारा। गुरु सूरज से होइ उबारा॥
जो कोइ तिमिर नसाया चावे। गुरुचरनन पर सुरति लगावे॥
सुरजमुखी पथरी की नाईं। सन्मुख लावत अगिन समाई॥
जो चेला सतगुरु को चावे। गुरु प्रताप पद अगम लखावे॥
जब बंधन टूटे जम फाँसी। जग आसा से रहे उदासी॥
मन अनुराग बिषय सब त्यागे। रागरीतिजगकी सब भागे॥

॥ दोहा ॥

सुंदर सुरति सुधारि के, गुरु चरनन करि ध्यान।
भान उदय नितही उगे, संत बचन परमान॥

*बंधेज, रीति। †जर्राह। ‡जाला।

( हिरदे बाच )

॥ चौपाई ॥

चौरासी तजि नर तन थापा । यह सब संत चरन परतापा॥
एक बचन मोरी अभिलाखा। सोसुनिहौंस्वामी मुख भाखा॥
फिर नर तन का कहो बिचारा। जिनपायेजसजसनिरबारा॥
नरनिजरूप प्रकिर्त्ति बिचारा। कोइकोइआपअपनपौ हारा
कोइ सज्जन सुख सेज बिलासा ।कोइअपराधीबाँधीआसा॥
यह इनका कहो भेद निबेरा । हिरदे दास चरन का चेरा॥
जुग चारो कलु* मूल मलीना । नर तन धरे कलू* मतहीना॥
यासे मन संदेह उठावे । स्वामीबचन बोध मन आवे॥
यह मोरी संदेह मिटावो । हिरदे को बिधिबिधिअर्थावो॥

॥ सोरठा ॥

कठिन कलू की रीति, जोति सके नहिं आपको ।
मन इंद्री सँग प्रीति, हित अनहित गुन गाँठि में ॥

## कलियुग में जीव की दुर्दशा

( तुलसीदास बाच )

॥ चौपाई ॥

हे हिरदे यह अकथ कहानी । कहँ लगबरननकहूंबखानी॥
नर कलु के मतिहीन अभागी। चालचलेंमनबिपअनुरागी॥
अब याका बरतंत सुनाऊँ । मन तन बरन बास बतलाऊँ॥

*कलियुग ।

कोइ नर कर्मी कर्म करावे । जो कोई जैसे फल पावे॥
कोइ नर ज्ञानवंत अनुरागी । नरतनसुफलभोगबड़भागी॥
कोइ नर मुक्ति मनोहर पावे । नरतनमेंसोसुफलकहावे ॥
कोइकोइनरगुरगगनबिचारा । संत कृपा से आप सम्हारा॥
कोइनरकुटिलआपअपराधी । पड़ेकुमतिबसकालउपाधी॥

॥ दोहा ॥

कलू काल की कहा कहूँ, नर नारी मतिहीन ।
दीन भाव दरसे नहीं, मैली बुद्धि मलीन ॥

॥ छंद ॥

हिरदे कलू परताप से, नर की नजर मैली भई ।
गुन द्रोह दुंद विकार मारग, दिवस निस बिष में रही॥
इंद्री अपरबल बास बस अस, प्रीति में फाँसी गई ।
जग लोभ मोह बिकार माया, ममत में लागी रही ॥
बिष की पोट मद मान सिर पर, बाँध करि गठरी लई ।
जुग जुग करम के भोग काया दुर्गति* दुख दीन्हा दई† ॥
कहुं का बिपति यह जीव जड़ पर, जुलम जम की का कही।
हिरदे हिरस‡ करि कोटि कर्मी, तुरत तन छूटै सही ॥

॥ दोहा ॥

कोटि कर्म करनी करे, जम जुलमी की दाढ़ ।
जो रे पड़े सो ना बचे, सब जिव डारे चाब§ ॥

*दुर्गम, कठिन । †ईश्वर । ‡लालच । §चबाना ।

# मरने के समय सुरत कैसे खिंचती है---संत अपनी शरनागत सुरत की कैसे रक्षा करते हैं

॥ चौपाई ॥

संत जीव की बिपति छुड़ावें । कर्मी जीव जक्त को चावें ॥
याको फल चौरासी माहीं । भिन्न भिन्न तोहि कहूं सुनाईं ॥
जब जिव निकरि देँह दरसाऊँ । वोहिसमयकीसमभसुनाऊँ ॥
निकरि जीव तन छूटे भाई । जब की बातें कहूं बुझाई ॥
सिमटि अकास भास जब जावे । जब नाड़ी में सीत समावे ॥
जस रबिअस्तहोयअँधियारा । प्रान पती तन धुकधुक धारा ॥
जस रबि भास गये उजियासी । धुकधुक प्रान बसे तन बासी ॥
निकसेस्वाँस भासकृन*प्राना । ये रेसिमटिकहोकहाँसमाना ॥
जो वो ठाँव जौन से ठाईं । दसवाँ द्वार ब्रह्म के माहीं ॥
सूरज ब्रह्म द्वार दस माहीं । उनसे किरन अंड में आई ॥
किरनपाँचततप्रानकहाया । ततमिलिपाँचअकासजगाया ॥
आतम सब में भास प्रकासा । सोई भास किया तन बासा ॥
मारग भास जोई मग आया । तरक तालुवे राह समाया ॥
ज्यों प्रतिबिंब पड़े जल जाई† । ऐसे भास नाभ के माहीं ॥
नाभ तेज तन माहिं समाना । रामहि रोम बदन में जाना ॥
भास तेज चेतन भइ काया । यह भीतर में बरनिबताया ॥
जिन घट सैल करी काया की । भीतर भेद कहै जोइ भाखी ॥
ऊपर की कहनी नहिं मानूं । अंदर उदय होय घट भानू ॥

*किरन । †जैसे पानी में आकर परछाईं पड़ती है ।

॥ दोहा ॥

अंदर भानु उदै बिना, भीतर की का कहैन ।
बैन बचन झूंठे कहे, बिन अंदर नहिं ऐन* ॥

॥ चौपाई ॥

अहर जीव कुन प्रान कहाया । यह काया में भाखि बताया॥
ठीक ठौर अरु ठाम ठिकाना। अंदर कोईपरखि पहिचाना॥
यह सब बैन बदन में भाखी । सुन करि साध देइंगे साखी॥
निकरे प्रान बदन से जावे । जाहि समय की संत सुनावें॥
जाका अब दृष्टांत सुनाऊँ । नकल माहिं मैं असल दिखाऊँ॥
जैसे पतँग गगन चढ़ि जावे । डोरी देत देत बढ़ि जावे॥
जब डोरी वह खैंचि खिलाड़ी। खैंचि डोरि भूमी पर डारी॥
सिमटीडोरिकियाउनपिंडा। यहिबिधिसुरतिखिंचैब्रह्मंडा॥
रोम रोम से तेज खिंचाना। सिमटि सिमटि नाभी मैं आना॥
नाभि तेज से भास उठाया । जब तन मद्ध तालुवे आया॥
तालुवे से जब डोरि खिंचानी। जब तत पाँच अंड में आनी॥
खैंचे डोरि प्रान इँचि आवे । कालकान पर आसन लावे॥
काल कान के मारग आई । याबिधितनकेमाहिंसमाई॥
जब वा डोरि को पकड़े जाई। संत सुरति की बैठक वाही॥
वही सतगुरु की बैठक पासा। डोरिछाँड़िहोइकालनिरासा॥
प्रानी सतगुरु की सुधि लावे । डोरी छाँड़ि काल अलगावे॥
जो सतगुरु सुधि बिसरे भाई। जबहिंकालघर बजत बधाई॥

*आँख ।

जिनके हृदै संत लौ लागी। सतगुरु साँच प्रीति अनुरागी॥
जिनकेकाल निकट नहिं आवे। डोर छाँड़ि के दूर परावे॥
काल ठिकाने अपने आवे। सूरति में सूरति लिपटावे॥
अपनी सुरति सुरति में डाली। ज्यों बंसी मच्छी खिंचि चाली॥
बंसी में मच्छी खिंचि आवे। ज्यों सतगुरु मेंसुरतिसमावे॥
सुरति डोरि पोढ़ मजबूती। जर्यांहं काल सिर मारे जूती॥

॥ दोहा ॥

सुरति डोरि सतगुरु गहे, रहे चरन के माहिं।
सुन्न सुरति सब्दै मिली, डोरी डोरि समाय॥
काल रहा भख मार के, गयो जो दावा चूक।
निर्मल होइ आगे चले, कर्म काल मुख थूक॥

॥ चैापाई ॥

जे सतगुरु सज्जन अनुरागी। संत चरन सूरति बड़भागी॥
कहुं उनका यह योँ बरतंता। सूरति बसे सरन मेँ संता॥
जो कोइ ऐसी लगन लगावे। सो सूरति सतगुरु मेँ आवे॥
वार काल जहँ बसे ठिकाना। काल पार सतगुरु का थाना॥
जेहि के मद्ध सुरति का बासा। सज्जनजोकोइकरेनिवासा॥
अष्ट कँवल पखड़ी दल माहीं। जो जेहि आस रहे जहँ जाई॥
श्वाल स्याम के बीच रहाई। सेत सुरति सतगुरु कोभाई॥
बूझै यह कोइ समझ लखावे। याकीबूझसमझकोइ पावे॥
यामें जिव का लगे ठिकाना। यहमारगसज्जनका जाना॥

॥ दोहा ॥

नैन स्याम और सेत के, मद्ध सुरत की लाग ।
जो जैसे सतगुरु मिले, तैसे तिन के भाग ॥

॥ चौपाई ॥

जो सूरति सतगुरु को चाही। जैसी डोरि ऊँट की नाईं॥
जैसे ऊँट अगाड़ी जावे। सब कतार* पीछे चलि आवे॥
बाँधे डोरि पूंछि के माहीं। सब कतार पीछे चलि आई॥
सतगुरु सूरति मूल ठिकाने। ज्योंकतारजिवसुरतिसमाने॥
जो सूरति सतगुरु दृढ़ लावे। सुनु हिरदे वह वही समावे॥
यही भाँति से चले न दावा। और भाँति सब मार गिरावा॥
तप संजम जोगी बहु पाले। ये मारग में भये बिहाले॥
जोकोइ समझि करे यह लेखा। बिनसतगुरुनहिंमिलेबिबेका॥

॥ दोहा ॥

ज्यों कतार रहे ऊँट की, अगले ऊँट बँधाय ।
योँ सूरति सतगुरु कहें, सब जिव वही समाय ॥

( हिरदे बाच )

॥ चौपाई ॥

यह स्वामी सजजन की बाता। यहिबिधिभाखेसभीसनाथा॥
सब संतन की देखी बानी। सबने कही बिमल मति छानी॥
अब वह मोके भेद बतावो। करमी जीव काल को दावो॥
सज्जन का भाखा निरबारा। करमी जीव काल को जारा॥
उनके प्रान कहाँ होइ जाई। कहोस्वामीमोहिंबरनिसुनाई॥

---

* पाँती।

काल घाट रोके केहि द्वारे । सब जीवन कोखायबिडारे॥
कौन राह से जीव नसावे । कैसे सकल जगत को खावे॥
यह तन में केहि भाँति समावे ।बदन बीच वह क्योंकर आवे॥

॥ दोहा ॥

प्रान निकारे आय के, घेरे घट के माहिं ।
एक जीव बाचे नहीं धरि धरि सब को खाय ॥

॥ चौपाई ॥

करता कौन जीव का होई । बिनजाने जग जाय बिगोई॥
कहँ से आय कौन उपजाया । क्योंकर देँह धरी जग काया॥
पाँच तत्त तन रहा बँधाई । उपजि मरे चौरासी माहीं॥
याको सब यह सबब सुनावो । स्वामीयहधोखादरसावो॥
पत मत हीन दीनहौँ दासा। चरन कँवल कींनिसदिनआसा॥
और आस बिस्वास न आवे ।निसदिनसूरतिचरनसमावे॥
ज्ञान बिबेक एक नहिं जानी।ऊपरचरन सुरति कुरबानी॥
दिल दृढ़ मेहर सरन में होई । चित संसै मेटो प्रभु सोई॥

॥ दोहा ॥

दिल दुबिधा मोरे भई, स्वामी सरन तुम्हार ।
जार जक्त कैसे पड़े, कैसे जीव उबार ॥

॥ चौपाई ॥

काल बली परचंड कहावे । यासे जीव बचन नहिं पावे॥
छल बल दाँव करे कइ भाँती। करे कोप जिवपर दिन राती॥
नहिं कोइ ठौर बचन जिवपावे।जहाँ जाय तहँ जाय समावे॥

स्वर्ग मिर्त्त पाताल न बाचे। को है जबर सरन जेहिं याचे[*]॥
भटकत फिरे जुगन के माहीं। काल बली से पार न पाईं॥
यह कइ दाँव लगाये फंदा। कर्मो जीव जक्त का अंधा॥
मारे जो जोरावर कोई। जबर संग कछु जोर न होई॥
काल बड़ा बरियार कहावे। बिकट बिपति करि जीव सतावे॥

॥ दोहा ॥

काल जबर जुलमी बड़ा, खड़ा रहे मैदान।
कर कमान खैंचे फिरे, मारे गोसा[†] तान॥

॥ चौपाई ॥

ज्यों बन भेड़ी सिंघ अहारा। जैसे जीव काल का चारा॥
डाके[‡] सिंघ भेड़ के माहीं। ऐसे डाक काल जिव खाई॥
यह स्वामी मोहिं कहो बुझाई। कौन चरित्तर काल कसाई॥
या को कर[§] कूंची बतलावो। भिन्न भिन्न कहि करि समझावो॥
केहि बिधि जाय जीव को घेरे। केहि मारग से सूरति फेरे॥

## जीव सत्य पुरुष की अंश

( तुलसीदास बाच )

हे हिरदे तोहिं आदि सुनाऊँ। जीव सुरति को संधि लखाऊँ॥
चौथे महल पुरुष इक स्वामी। जीव अंस वहि अंतरजामी॥
उनकी अंस जीव जग आया। करता पाँच तत्त में लाया॥

॥ दोहा ॥

करता ने काया रची, जुग जुग जग बिस्तार।
सार दियो बिसराय के, घर घर करत पुकार॥

[*]माँगे। [†]तीर की गाँसी या भाल। [‡]दहाड़ता है। [§]कल।

# कर्म काया का संग

॥ चौपाई ॥

पिंड प्रधान बसे तन माहीं । करता ने काया उपजाई॥
बेद पुरान कर्म उपराजा । यासे करे जीव जग काजा॥
करता करम किया बिस्तारा। लख चौरासी रूप सँवारा॥
काल अपर्बल जाल पसारा। उन सब घेरि जीव को मारा॥
कर्म कलंदर* आप नचावे । बाजी लाय जीव भटकावे॥
कोइ बंधन से बाँधे भाई । ऐसे बंध अनेक लगाई॥
कोई दाँव नहिं मारग पावे । धरि धरि देही जन्म सिरावे॥
चौरासी से निकरि न पावे । बार बार वहि माहिं समावे॥

॥ दोहा ॥

कर्म सारनी† बुधि बसी, सूरति रही अधीन ।
आसा के बस में पड़ी, बासा बिपति मलीन ॥

॥ चौपाई ॥

कर्म अपरबल भारी भोगू ।सब जग जार जवर यह रोगू॥
बिना कर्म कोइ काया नाहीं । जग बस रहा कर्म के माहीं॥
काया बिना कर्म नहिं होई । कर्म बिना काया नहिं सोई॥
यह अनादि से रचना भाई । जुगन जुगन ऐसे चलि आई॥
कर्म भूत सब जग को लागा। यासे बची नहीं कोई जागा‡॥
कीट पतंग संग सब केरे। तीन लोक अंडा सब घेरे॥
सात द्वीप नव खंड कहावे । चौदह लोक कर्म बस गावे॥
चन्द्र सूर अरु दस औतारा । यह सब बँधे कर्म की जारा॥

* बंदर नचानेवाला । † कुतनी । ‡ जगह ।

॥ दोहा ॥

अंड खंड ब्रह्मंड लोँ, लोक सकल जग जाल ।
काल कर्म सिर ऊपरे, जुग जुग फिरत बेहाल ॥

# काल के चरित्र

॥ चौपाई ॥

अब यह काल चरित्र लखाऊँ। अंदर प्रान बसे जेहि ठाऊँ॥
काया महँ काल सतावे । जब वह प्रान लेन को आवे ॥
सिमटत भास स्वाँस उठि जावे। प्रान पती जब सिमटि समावे॥
भास अकास तत्त में जाई। तत्त अकास अंड* के माहीं॥
जब यह कर्म कला उपजावे । बुद्धि सुरति को आन दबावे॥
मैली बुद्धि सुरति के माहीं । वहीं समय में जाय समाई॥
कर्म अनुसार बसे मन आसा । सूरति मन बुधि बंधन फाँसा॥
सुनत अवाज स्याम सठ† गाँसा‡ । घेर घुमरि लावे जहँ स्वाँसा ॥

॥ दोहा ॥

कर्म सारनी§ बुधि बसै, आसा बास निदान ।
यह नव द्वारा पिंड में, निकसि जाय ज्यों प्रान ॥

॥ चौपाई ॥

यह तो कर्म बुद्धि अनुसारा । अब सुनियो यह काल पसारा॥
अष्ट कँवलदल अंदर माहीं । हूाँ छिपि बैठा काल कसाई॥
जबसब भास सिमटि करि आवे। जब सूरति पै बुधि पहुंचावे॥
कँवल द्वार पखड़ी को रोके । उलटी सुरति काल मुख सोखे ॥
काल दाढ़ में प्रान चबानी । जब ढरके नैनन से पानी ॥

*सहसदल कँवल । †काल । ‡घेर कर पकड़ लेना । §कुटनी ।

लगे टकटको दिखे न भाई। वही समय को करे सहाई॥
जम के दूत घेर चहुं फेरा। निकसे प्रान छोड़ करि डेरा॥

## जहाँ आसा तहाँ बासा

कर्म सारनी वुद्धि कहाई। जहं भइ आस बास जेहिं माहीं॥

॥ दोहा ॥

कर्म आस की बास में, जोनी जोनि समाय।
जो जैसी करनी करे, सो तैसे फल खाय॥

## नर्कों के दुख

॥ चौपाई ॥

जम का जुलम जोर दरसाऊं। मारग में जिव बिपति बताऊं॥
लोह के खंभ तपन के माहीं। जहाँ जीव को ले चिपटाई॥
तड़फ तड़फ जिव जुलम दुखारी। तपत खंभ दुख उपजे भारी॥
वाहि समय की कहा सुनाई। लोहा अगिन धमन धौंकाई॥
ज्यों धम्मन से धौंकि लुहारा। लोहा जो अगिनी में डारा॥
ऐसे कष्ट जले जिव भाई। वही समय की बिपति बताई॥
पाया भोग सोग सोइ जाना। छटपट करे जीव बिलखाना॥
अब नर्कन का सुनो सुभावा। कर्मी जीव सहें दुख दावा॥

॥ दोहा ॥

कुंभी नर्क निदान यह, पड़े जीव जब जाय।
सिर समेत बूड़ा रहे, सदा नर्क के माहिं॥

॥ चौपाई ॥

जबहि नर्क सिर ऊपर काढ़े। जब ऊपर जूती जम मारे॥
डूबा रहे नर्क के माहीं। सिर काढ़े जम मारे भाई॥

कुंभी नरक कलप लौं बासा। मुख में नरक नाक में स्वाँसा॥
कई जुगन लौं रहे बिहाला। फिर अघोर नर्क लै डाला॥
हूाँ को कठिन भोग दुखदाई। तन सड़ि मरै उपजि वहि माहीं॥
निकसि न होय कधी निरबारा। गाढ़े बंध बँधे चौधारा॥
पापी जीव अधम है सोई। करम भोग भुगते जो कोई॥
करनी कीन्ह मलीन बनाई। जिन की दसा* भोग दरसाई॥

॥ सोरठा ॥

नरक अनेकन और हैं, कहँ लग करूँ बयान।
दुख भुगते यह जीव ज्यों, जाने जो भोग समान॥

## खानि योनि के कष्ट

ये भुगताय बहुरि सुनु भाई। जोनी खानि जुलम दुखदाई॥
खानि खानि का कहूं निबेरा। लख चौरासी जीव बसेरा॥
भवसागर जल भरा अथाही। अंडा जीव पड़े सब माहीं॥
अंडा मद्धे जीव बिचारा। सो सब बहे चौरासी धारा॥
धार धार का कहूं बिबेका। तो लिखने नहिं लागै लेखा†॥
हे हिरदे यह अद्भुत बाता। लख पावे नहिं करम बिधाता॥
ब्रह्मा बासन गढ़ै कुम्हारा। वोहु पुनि कर्म जोग अनुसारा॥
सिव जोगी भिच्छा में राजे। बिस्नु भोग बैकुंठ बिराजे॥

॥ दोहा ॥

करम भोग अनुराग में, माया का बिस्तार।
तीन त्रिया तीनोँ लई, कर्म जोग अनुसार॥

*दशा, हालत। †हिसाब।

॥ चौपाई ॥

यहि बिधि जक्त चलाई बाटा। इन भुलाय दीन्हा घर घाटा॥
सब दुनिया मारग यहि लागी। भवसागर जिव भया अभागी॥
जग में जीव करै ब्योहारा। घटी बढ़ी कछु नाहिं सिहारा॥
आवागवन भया बिस्तारा। भवसागर यों जीव बिचारा॥

## संत छाप के एक जीव ने नर्क में पड़ कर सब नर्कियों का उद्धार कराया

अब वह कथा कहूं बिस्तारी। हिरदे सुनिये ज्ञान बिचारी॥
संत छाप जेहि जिव पै लागी। कोइ जिव भूलि गया अनुरागी॥
कूसंगति से भूल समानी। जाकी कहूं सुनो सहदानी॥
जो कदाचि नरक मैं जावे। संत जाय के जहाँ छुड़ावैं॥

॥ दोहा ॥

साह असामी पै करज, जाय लेइ जहँ होय।
ऐसे संत सुभाव को, परख लीजिये सोय॥

॥ चौपाई ॥

मोहर छाप के काज सिधावैं। नरक माहिं वे जीव जुड़ावैं॥
अँगुठा बोरि नरक के माहीं। वहि ततछिन मैं नरक सुखाई॥
जोनी छूटि नरक से आवे। फिरि मर देही जोनि जुड़ावे॥
एक जीव कारन उपकारी। सब छूटे भये जीव सुखारी॥
अब नानक की साख सुनाऊँ। सोदर* पौड़ी† में समझाऊँ॥

*ग्रन्थ साहब के वह पद जिस के शुरू में "सोदर" का शब्द आता है। †पद्य, नज़्म।

# संत की अनूठी दया

॥ दोहा ॥

धनधन राजा जनक है, जिन सुमिरन किया बिबेक।
एक घड़ी के सुमिरते, पापी तरे अनेक ॥
ऐसा सुमिरन जानि के, संतन पकड़ी टेक।
नानक सुमिरन सार है, बिसरे घड़ी न एक ॥

नानक जाय अँगूठा बोरा। नरक जीव के बंधन तोड़ा॥
ऐसी साख समझ कोइ बूझे। तिमिर जाय आँखों से सूझे॥
साखी देन का कारन नाहीं। अंधे जीव भरम के माहीं॥
जो बड़े भाग दया वे करईं। तो कदाचि बंधन निरबरईं॥
जुग जुग भूले जाव अनेका। दया भाव सतगुरु से ठेका॥
संत दया की रीति नियारो। बार बार चरनन पर वारो॥
जो कछु करैं करैं सोइ संता। संत बिना नहिं पावे पंथा॥
सतगुरु जो जोइ राह बतावैं। भूले को मारग दरसावैं॥

॥ दोहा ॥

सतगुरु संत दयाल से, करम रेख मिटि जाय।
मन तन सूरति साँच से, ज्यौं का त्यौं रहि जाय ॥

॥ छंद ॥

हिरदे अजब वोहि रीति घर की, संत से नाहीं बड़ी।
जहँ लौं निगम कहे बाक बानी, सो सभी नीचे पड़ी ॥
आगे अगम बेअंत मारग, सुरति वहिं जा कर अड़ी।
जहँ लोक लखन अलोक लखि कर, गगन पर सूरति चढ़ी॥

लक सूर सन्मुख दृष्टि धरि कर, नेह निसाने पै गड़ी ।
सूरति सिखर के पार होइ कर, कँवल पखड़ी से कढ़ी ॥
चढ़ते पलक नहिं बार उनको, निमख नहिं लागे घड़ी ।
छोड़े सकल सँग साथ सबको, फौज तजि पहुंची छड़ी ॥
सबको दिये छिटकाय करिके, सुरति सत मत से लड़ी ।
यहि भाँति साथ जड़ाव कुन्दन, नग अंगूठी ज्यौं जड़ी ॥
अंदर अलख के पार पद में, पुरुष के आगे खड़ी ।
भयो मेल मिलन मिलाप पिव को, संत के सरने पड़ी ॥
सत पुरुष संत दयाल दिल ले, सुरति सज्जन की बड़ी ।
कैसे नरक दुख खानि में से, काढ़ि लें वोही घड़ी ॥
ऐसे पुकारें साख सब कहैं, संत की बातैं बड़ी ।
सब सुन स्रवन पर हाथ डारे, संत पट खोलैं कड़ी ॥

॥ दोहा ॥

संत सरन जो जिव रहे, गहे जो उनकी बाँह ।
थाह बतावैं समुद की, बर्न्ना भवजल माहिं ॥

॥ चौपाई ॥

ऐसे हिरदे संत सुभावा । भवजल पार लगावैं थावा* ॥
जहाज सुरति उनको नित चाले। समुदर पार भरावैं माले ॥
भरती भरैं सुरति की डोरी । पहुंचैं पार जहाज को छोड़ी ॥
माल बिलायत में जा बैंचैं । मेवा आनि† खरीदी खैंचैं ॥
जम्बू दीप मुलुक के माहीं । खलक माल को चीन्हे नाहीं ॥
गली गली में ले दरसावैं । मेवा ल्यौ जो जिनको चावै ॥

*थाह में। †ला कर।

बार बार कहि कर गोहरावैं। कोइ मेवा के पास न आवैं॥
देखे सुने समझ कर कहते। यह तो माल बड़ा कछु लेते॥
भाव सुने पर मूड़ हिलावैं। साँचो मानि बहुरि नहिं आवैं॥

॥ दोहा ॥

तन मन से साँची कहैं, खरी खरी बतलान।
पल्ले में डालैं जबै, खैंचे खूंट निदान* ॥

॥ चौपाई ॥

कदर बिना नहिं माल बिकाना। संत दिसावर बड़ी नजाना॥
मेवा मोल खरीदी नाहीं। वह सवाद कहो क्योंकर पाई॥
देखे सुने खाय मुख माहीं। सो कीमत को जाने भाई॥
लिया दिया देखा नहिं आँखी। वह कहा परख कहेंगे भाखी॥
यह संतन का माल अगूढ़ा। सो का जाने जग मन मूढ़ा॥
यह तौ नाज खरीदा चावे। धर गठरी सिर ऊपर लावे॥
धड़ा† पसेरी तोल पिछाने। यहि बिधि माल संत का जाने॥
गठरी बाँधि लेउँ सब सारी। यह जाने यों माल अनारी॥

॥ दोहा ॥

संत मता दुरलभ कहैं, सतसँग में गोहराय।
बड़े बड़े हारे सभी, संतन की गति गाय॥

( हिरदे बाच )

॥ चौपाई ॥

जब हिरदे बोले इक बानी। स्वामी बचन कहन पहिचानी॥
बचन अडोल बोल प्रिय लागा। मोको मिले परख बड़ भागा॥

*जब उसके पल्ले में माल देने लगते हैं तो वह पल्ले का कोना खैंच कर लेने से इनकार करता है। †दस सेर का बाट।

करनी कौन पुरबली रेखा । स्वामी को भरि नैनन देखा॥
ऐसो कहा भाग भल मेरा । चरन माहिं चित रहे बहोरा॥
हे स्वामी यह कहनि बखानी । तुम्हरी दया समझ में आनी॥
को यह कहे अपूरब बाता । हिरदेचितबिस्मय*बिख्याता॥
बिस्मय दूर भर्म सब भागा । स्वामीचरनकँवलअनुरागा॥
एक बात मोरे मन आई । मेवा माल कहो समुझाई॥

॥ दोहा ॥

संत समुंदर पार में, जहाज भरी दरियाव ।
सो मेवा मो से कहौ, संत खरीदैं जाय ॥

( तुलसीदास बाच )

॥ चौपाई ॥

हिरदे जग आँखी मैं जाला । उन कहा कहूंप्रगटवहमाला॥
अच्छर मैं बोली समझाई । जग ने बूझ भर्म नहिं पाई॥
यह मेवा मैं वा समझाई । यहि मैं समझि लेव तुम भाई॥
अच्छर माहिं अर्थ समझाया। जिनबूझाजिननेकछुपाया॥
जो जाने यह भेद भलाई । जहंकहुं कृपा संत की छाई ॥
बानी बचन अपूरब बोली । जग मैं प्रगट नाहिं हम खोली॥
सज्जन सूर सुरति के नाका । सो समझे बोली यह भाखा॥
देस देसंतर के हम बासी । दीपक दृग नैनन पर चासी†॥
हिरदे हमरी जाति न पाँती । मैं कहा कहूं बड़ा अपराधी॥
यह अच्छर का लेखा लावे । सोइ सज्जन सत साध कहावे॥

*संदेह । †जगाया ।

॥ दोहा ॥

सतसँग मैं मन नीच है, जिनके हिरदे हार।
दीन गरीबी गवन से, बैठै मन को मार॥

## भक्त के लक्षण

॥ चौपाई ॥

जब हिरदे यह भक्त कहावे। दास भाव स्वामी को चावे॥
भक्ति बड़ी खाँड़े की धारा। जो यह करे आप जिन मारा॥
आपा को समझे नहिं भाई। जिन यह भक्ति गरीबी पाई॥
बिन सतसंग भक्ति नहिं आवे। दास भाव मन नाहिं समावे॥
यहि बिधि भक्ति करै मन लाई। जब स्वामी अज्ञा अस गाई॥
सिर धरि उचित चले मन मोड़ी। मद मन मान बड़ाई तोड़ी॥
सो सज्जन निज दास कहावे। यों सेवा सतगुरु की गावे॥
छलबल साफ सुरति से तोले। यों सतगुरु की बानी बोले॥

॥ दोहा ॥

छलबल से साँचा रहे, निर्मल बुद्धि बिचार।
जब रँग मिले मजीठ को, सतगुरु पुरुष अपार॥

## अभक्त के लक्षण

॥ चौपाई ॥

अब यह अभक्तन की सुनु भाई। कपट भक्ति मन मैं चतुराई॥
बगुला भक्त बड़े जग माहीं। बैठे जाय राह मैं जाई॥
छाप तिलक कर माल सुहावे। गठरी काटन को मन चावै॥
परदेसी निज बास निवासी। डारे जाय गले मैं फाँसी॥

मीठे मधुर दीन लघुताई। यह लच्छन उनके हैं भाई॥
औरअभक्त अधम अरथाऊँ। मन मैं कुटिल प्रीति परभाऊ॥
मैल अँदर मुख मीठा बोले। भीतरकपटगाँठिनहिंखोले॥
अंदर पाप बसे मन माहीं। ऊपर भक्ति भाव दरसाई॥

॥ दोहा ॥

बड़े भक्त जग मैं बजैं, मँजैं* न मन का मैल।
खेल खिलाड़ी काल के, फँसे गुमर† की गैल॥

॥ चौपाई ॥

हे हिरदे वे अधम कहाई। जुग जुग पड़े नर्क के माहीं॥
कोई न उनका काढ़नहारा। कीन्हे कर्म अनीत अपारा॥
जन्म धरे कइ नाहिं जुड़ावे। कर्म बली त्रय ताप तपावे॥
कीट पतंग जोनि जिन पाई। भोगभुगति अपनी अधमाई॥
कहँ लग कहूं कर्म की रेखा। जोकछुकीन्हलीन्हसोइ लेखा॥
बंधन कर्म आप अपनावे। औरन को कहि दोष लगावे॥
यह हिरदे जिवबड़ाअभागी। खरी छाँड़ि खोटी अनुरागी॥
दुर्लभ तन नर देही पाई। जीवन तुच्छ जक्त के माहीं॥

॥ दोहा ॥

घड़ी घड़ी स्वाँसा घटे, आसा अंग बिलाय।
चाह चमारी चूहड़ी‡, धरि धरि सब को खाय॥

## चेतावनी

॥ चौपाई ॥

आसा अमृत सब ने जानी। यौं ऐसे चौरासी खानी॥

*माँजैं। †गुमराही, भूल। ‡भंगिन।

स्वाँसा निकरि पलक में जावे। यह आसा करि कर्म बँधावे॥
तन का नाहिं भरोसा भाई। पलक माहिं यह जाय बिलाई॥
पड़ि बुल्ला फूटे जल माहीं। छिन मैं तन छूटे योँ भाई॥
महल मुलुक और माल खजीना*। सँग नहिं जाय परखि परबीना॥
जीव निकरि तन जाय जरावे। जब तेरे कछु संग न जावे॥
यह यौं अंध धुंध चलि आई। यह तेरे कोइ संग न भाई॥
हाय हाय करि जन्म बिताया। नहिं कोइ तेरे कारज आया॥

॥ दोहा ॥

हाय हाय करि पचि मरे, कुटुंब काज अज्ञान।
मान बड़ाई जक्त की, डूबे करि अभिमान॥

॥ छंद ॥

हिरदे करम जग जाल मैं, जिव अधम की आसा बढ़ी।
परले पलक मैं होय तन मन, मौत सिर ऊपर खड़ी॥
दिन चारि जग मैं जीवना जिव स्वाँस की बीते घड़ी।
चेतन बदन मैं बास बिन, फिर रहेगी काया पड़ी॥
काया किला गढ़ फूंकि जब, जमराय की फौजैं चढ़ीं।
अंधा धुंध दल प्रबल वाके, सामने कहो को लड़ी॥
भीतर बुरज के सुरँग लागे, पलक मैं टूटे गढ़ी।
हिरदे बड़े रन खेत में, कई सूर की लोथैं सड़ीं॥

॥ सोरठा ॥

जम यह जबर कराल, काल जुलम जुलमी बड़ा।
खड़ा रहे मैदान, जान कोई पावे नहीं॥

*ख़ज़ाना।

॥ चौपाई ॥

ऐसा घेरा जम ने डारा। सब जिव पकड़ि घेर करि मारा॥
जमकी जाल बड़ी दुखदाई। नहिं कोइ छोड़े काल कसाई॥
जीव अंध फँद माहिं फँदाना। भूला जीव जन्म से जाना॥
बंधन ने वा को बौराया। मोर तोर में जन्म गँवाया॥
आस अपरबल सब से भारी। यों कहा जाने भेद अनाड़ी॥
ममता ने चित चाट लगाई। अपने घर की बाट भुलाई॥
सतसँग सुना न सतगुरु पाया। यासे भेद हाथ नहिं आया॥
जन्म मरन दुखिया में दौड़ा। नाँगे फिरे पाँव नहिं जोड़ा*॥

॥ दोहा ॥

जुलमी की जाली पड़े, बड़े बड़े उमराव।
दाँव कधी लागे नहीं, भागन कवन उपाव॥

# काल कराल

॥ चौपाई ॥

खेले जुग जुग काल सिकारी। खाये जक्त जीव सब सारी॥
को रोके जबरी के माहीं। आड़े† फिरें सामरथ नाहीं॥
सतगुरु से डरपत है भाई। कछू और ना चले उपाई॥
जिव मूरख वो‡ जबर कहावा। याको कछू चले नहिं दाँवा॥
कई परपंच करे जम काला। यासे बपुरा§ जीव बिहाला॥
कोई उपाव से बाचे नाहीं। सतगुरु सरन बिना कोइ भाई॥

*जूता। †छिपते। ‡काल। §निर्बल।

उन बिन फंद कटन को नाहीं । जो कोइ कोटिन करे उपाई॥
मारग रोक बाट मैं बैठा । सन्मुख होइ को खावे खेटा*॥

॥ दोहा ॥

सतगुरु के टारे टरे, और न माने एक ।
भेष टेक करि करि मुए, करि दरियाप† दिल देख ॥

॥ चौपाई ॥

सबजिवसौंपिपुरुषयहिदीन्हा।तीनलोककामालिककीन्हा॥
जो चाहे सो करे अनीता। यहि के सन्मुख कोइ नहिं जीता॥
जबरी जोर अपरबल भाई । संत बिना कोइ पार न पाई॥
नाक छेद जो नाग नचावे। ऐसे करि काबू मैं आवे‡ ॥

## सात्विकी और दीन रहनी के गुन

यह संतन से बनै बिचारा । उन अपना कारज यों सारा ॥
जग आसा सबही बिसराया। जब यह उन के काबू आया॥
सब रस भोग खान अरु पाना ।इन्द्री सुखसबकोबिसराना॥
मेवा मट्ठा एक समाना । मोठ§ मिठाई सम करि जाना॥

॥ दोहा ॥

सहज भाव से जो कछू, आवे अमृत भाव ।
यह सुभाव भीतर बसे, जब कछु चले न दाँव ॥

*सौंटा—"खेटक" नाम बलराम जी के हथियार का है। †दरियाफ़्त=खोज और जाँच। ‡जैसे श्रीकृष्ण ने काली नाग को नाथ के नचाया था वैसे संत काल को परास्त करते हैं। §तीत?

॥ चौपाई ॥

रूखी रोटी साग अलोना । बहुत प्रेम से पावे दूना॥
उनके मन ऐसी उपजावे । जब वह उनके काबू आवे॥
यहि बिधि और करे जो कोई । सो चीन्हे मन बिरला वोही॥
और बात कोइ घाट न पावे । मनकी कला हाथ नहिं आवे॥
सतगुरु मूर मेहर गति न्यारी । वे चाहैं तो लेहिं उबारी॥
और उपाय एक नहिं लागा । भटकत खोज फिरे कइ जागा॥
यह बिषई मन मान बड़ाई । हिरदे कपट कुमति मति माहीं॥
मन मति मंद अंध है आँखी । मनकी तरँग रहे नहिं राखी॥

॥ दोहा ॥

मन तरंग तन में चले, आठो पहर उपाव ।
थाह कधी पावै नहीं, छिन छिन छल परभाव ॥

॥ चौपाई ॥

छल बल दाँव लगे नहिं हाथा । फोड़ै सिर कितने केइ भाँता॥
जब सतगुरु की मेहर मँझावे*। उनकी दया रमज कछु पावे॥
और भाँति कोइ करे उपाऊ । सुपने उनका मिलै न थाऊ†॥
ज्ञान जोग वैराग विधी से । और तने‡ नहिं मारग दीसे॥
वे अंदर घट लेइँ पिछानी । बोली में परखें सब बानी॥
चाल चलन सब भाँति बिचारें। जब जेहि जीवको कारजसारें॥
दीन लीन सब भाँति निहारें। जेहि जिव का अंकुर बिस्तारें॥
रहनि गहनि से देखें भाई । सुधि साँचे परखें सब ठाईं॥

*हेरै, खोजै। †थाह, पता। ‡तरह।

यौं सब भाँति लखैं परबीना । जब वाको दरसावैं चीन्हा॥
उजली बुद्धि मलीन नसावे । जब मनको सुधताई आवे॥
जग में रहे मरे मन भाई । जग इच्छा सब देइ उड़ाई॥
मुरदा बोल बने मति हीना । जग बिरोध खुस आप अधीना॥
मार मार सब जग गोहरावे । जब लालैं की लाली पावे॥
काला मुख मन मौज उड़ावे । जब दयाल की मेहर बसावे॥
उनकी कृपा दृष्टि है न्यारी । वे चाहैं जब लेइं उबारी॥
दीन जानि कोइ सरनै आवे । चरन कँवल चित सुद्ध बसावे॥
चीन्हे बचन संत के जोई । सिर ऊपर धरि लेवे सोई॥
उनको बड़े जानि मन माने । जब उनका उपदेस पिछाने॥

॥ दोहा ॥

उपदेसी वहि देस के, भेष भवन के पार।
सार समझ सुलटी कहैं, जग करि उलटि विचार॥

## भेष, पंडित, बाचक ज्ञानी इत्यादि

॥ चौपाई ॥

जो बानी मुख से उन गाई । कोई समझ न मन मैं लाई॥
ब्राह्मन ने रुजगार बिचारा । घर घर कथा कीन्ह बिस्तारा॥
बाँचत फिरे करे रुजगारा । उदर काज उन पेट सम्हारा॥
बानी का कछु मर्म न पाया । बाँचि बचन जग को उरझाया॥
परमारथ पर दृष्टि न डारी। बोल अमोल न बात बिचारी॥
संत बचन सब कहैं अतोला । बानी मैं कोइ सार न खोला॥
भेष टेक मैं रहे भुलाई । संत बचन की संधि न पाई॥

पूजा आप करावे अपनी । रात दिवस माला को जपनी॥
वह भी यहि मारग में भूला । केहि बिधि पावे सार अतूला॥

॥ दोहा ॥

पोथी पढ़ने में लगे, चढ़ा ज्ञान का मान ।
सभा माहिं मोटे भये, गुन के संग गुमान ॥

॥ चौपाई ॥

सार असार न चीन्हा भाई । गुन के ज्ञान चढ़ी गुरुवाई॥
संत सार नहिं बानी बूझी । गुन की गैल आँख नहिं सूझी॥
गुनीभये बहुजक्त रिझाया । बादइ जग में जन्म गँवाया॥
ज्यौँ बिस्वा* पैसे से राजो । या बिधि बुद्धि सभो उपराजो॥
जल बिन मीन भई बेहाला । ज्यौँ पैसे डाली जग जाला॥
ज्ञानी गुनो कबेसुर होई । पंडित और भेष सब कोई॥
माया ने चेरा करि राखा । समझै कहा संत की भाखा॥
ज्यौँ रबि अस्त होय अँधियारा । ज्यौँ जग हृदय तिमिर भया सारा॥
बिन अंजन नहिं नैनन सूझै । सतगुरु बचन कौन बिधि बूझै॥
गुरु दयाल से अंजन पावे । जब कहुं तिमिर आँखि सेजावे॥
दीन होय बिन पावे नाहीं । संत बिना नहिं तिमिर नसाई॥
और दवा कोइ काम न आवे । सतगुरु चरन सदा लो लावे॥

॥ दोहा ॥

और आस बिस्वास की, झूठी है सब बात ।
हाथ कछू आवे नहीं, जम धरि मारे लात ॥

* कसबी ।

॥ छंद ॥

ज्ञानी कबेसुर पंडिता, सब बाँच करि पोथी पढ़े ।
कोइ अर्थ बात बिबेक पूछे, तुरत ही उनसे लड़े ॥
बड़े ज्ञानवंत महंत मोटे, मान मुख बातें कढ़े ।
सतगुरु अगम पुर पार पद की, बात नहिं हिरदे गड़े ॥
केइ भाँति संत पुकार बोलैं, तोल बिन चित ना चढ़े ।
गफलत पड़ी सब देस दुनियाँ, समझि कोइ सूरे अड़े ॥
सज्जन सुरति के रंग राचे, कर्म काँचे से कढ़े ।
अपने रहे उनमान से, नहिं मान सेवा यक कढ़े ॥

॥ दोहा ॥

हिरदे जो जन असल है, नकल कधी नहिं होय ।
कूसंगति के गुन गहै, नकल कहावै सोय ॥

॥ चौपाई ॥

असली अपनी आदि न छोड़े । करि बिबेक बंधन को तोड़े ॥

# असली

## (तेजी* घोड़े का दृष्टांत)

॥ चौपाई ॥

अब याकी इक नकल दिखाऊँ । नकल माहिं असली दरसाऊँ ॥
कारवान सौदागर आया । घोड़े खरीद बहुत से लाया ॥
कीन्हा सहर से बाहर डेरा । फजर† जाय घोड़े को फेरा ॥
लोग सहर के देखन आये । तेजी गुन चित माहिं समाये ॥
कहो सौदागर कीमत भाई । कोइ कहिकर अस बचन सुनाई ॥

*"ताज़ी" घोड़े की एक नसल का नाम है । †तड़के ।

तब सौदागर बोला भाई। सवा लाख कीमत फरमाई॥
सहर माहिं कोइ का लै जाने।कीमत सुन करि होस हिराने॥

॥ दोहा ॥

तेजी* घोड़ा असल की, क्योंकर करूँ बखान।
चले पछैयाँ पवन ज्यौं, ऐसा तुरी निदान॥

॥ चौपाई ॥

यह भनकार राज पै आई। राजा के कोइ कान सुनाई॥
घोड़ा एक अपूरब आया। तेजी अस कहि नाम सुनाया॥
जब राजा बोले अस भाई। लावो वह सौदागर जाई॥
हलकारे को हुकम सुनाया। सुन सौदागर पै चलि आया॥
घोड़े सुधाँ† चलो तुम भाई। राजा का यह हुकम बजाई॥
सुनि सौदागर घोड़ा लीन्हा। राजा सन्मुख घोड़ा कीन्हा॥
घोड़े को देखत भये राजी। कहो कीमत सच सच उपराजी॥
जब सौदागर बोले बैना। सवालाख कीमत का कहना॥

॥ दोहा ॥

सौदागर से पूछि कर, राजा खामुस‡ खाय।
मुख से बोले कछु नहीं, मन ही मन मुसकाय॥

॥ चौपाई ॥

जब राजा ने बात बिचारी। सौदागर यह अहै अनारी॥
करोड़ रुपै कीमत का घोड़ा। इन ने मोल बताया थोड़ा॥
जब ऊपर से पाखर मोड़ा। काना एक आँख से घोड़ा॥

*ताज़ी ? †समेत। ‡चुप।

राजा तो घोड़े से राजी। लेना याहि बुद्धि उपराजी॥
दिये दाम सौदागर माँगे। घोड़ा भीतर भूमि उलाँगे।
घोड़े को बाँधा घुड़साला। कइ खिजमत के करनेवाला॥
मक्खी तन पर लगन न पावे। घोड़े ऊपर चँवर डोलावे॥
जब सिकार राजाजी जावे। काने को लावो गुहरावे॥
जब जब राय सिकारै जावे। काना कहि अस बचन सुनावे॥
ऐसे कइ दिन बीति सिराना। सुनि घोड़ा मन में रिसियाना॥
राजा मूरख बूझि न बाता। तेजी असल न जानी जाता॥
मैं तेजी की असल न जाने। काना मुख से भाखि बखाने॥
जब घोड़ा मन में घबराना। काना मुख से कहै बखाना॥
घोड़ा सुने बहुत दुख पावे। अब याका का करूँ उपावे॥
बोल राय के कैसे लागे। ज्यौं अगिनी हियरे में दागे॥
बहु घबराय कहे वो घोड़ा। रन पड़े कहूं राय से तोड़ा॥
ऐसी मन में बात बिचारूँ। राजा को कोइ छल से मारूँ॥
एक दिवस ऐसा भया भाई। पड़ि चकरी* कोइ फौजै आई॥
भया बिगाड़ सहर में भाई। राजा की फौजैं चढ़ि आई॥
आमैं सामैं† लगी लड़ाई। बहु रन खेत भया वहँ भाई॥
बहुत दिनन से बात बिचारूँ। लगा दाँव अब राजा मारूँ॥
घोड़ा लाय सवारी कीन्हा। फेरा राय गरम कर लीन्हा॥
फेर प्यार कर एड़ चलाई। जब पहुंचा रन भीतर जाई॥
घोड़ा वही याद करि लयऊ। रन भीतर जाकर अड़ि गयऊ॥

*चारो ओर से घेरा डाले हुए। †आमने सामने।

बहु सवार राजा ले घेरा। घोड़ा अड़ा फिरे नहिं फेरा॥
वह फौजनका कहे सिरदारा। तेजी का मारो असवारा॥
तब तेजी मन किया बिचारा। मारा जाय मोर असवारा॥
तेजी कुल पै गारी* लाऊँ। राजा के बोलन पै जाऊँ॥
तेजी कुल को नाम धराऊँ। राजा की मन बात बसाऊँ॥
यह बिचार मन घोड़ा कीन्हा। तुरत बचाय राय को लीन्हा॥
जो कोइ असल कुलन के भारी। मन मैं लेवैं बात बिचारी॥
असलीजोकोइअसलबिचारे।नकलीनकल माहिं चितधारे
नकली न्यारी नकल चलावे। असली का वह मर्म न पावे॥
नकली असली अंतर भाई। हिरदे तो को बरनि सुनाई॥

॥ दोहा ॥

असली असल जनाइया, घोड़े का दृष्टांत।
राजा मूरख नकल यह, भाखि बरनि बरतांत॥

( हिरदे बाच )

॥ चौपाई ॥

जब हिरदे बोला इक बाता। असली की भाखी बिख्याता॥
हे स्वामी इक और बतावो। नकली की कहि कर समझावो॥

## नकली

( तुलसीदास बाच )

नकल नीच की अकल निनारी। मन मलीन बुधि सकल सिहारी॥

*कलंक।

संकर बरन* यह वही कहावें। सासतर में उनको यौं गावें॥
सज्जन से वे प्रेम छुटावें। नीचे से नीचा मन लावें॥
नीचनीच की मसलत† मीठी। ऊँची अकल एक नहिं डीठी॥
ऐसे अधम नर्कपुर गामी। नहिं समझैं कोइ सेवक स्वामी॥
गुरुद्रोही पातक के मारे। हिरदे अपना जन्म बिगारे॥

॥ दोहा ॥

जनमैं नक़ली जन्म से, जुगल बाप के पूत।
माता की कीमत वही, सज्जन से नहिं सूत॥

॥ चौपाई ॥

धोबी कपड़े का मल धोवे। नकल नीच सज्जन मल खोवे॥
ऐसे धोबी पास बसावे। अधरम पाप धोवाया चावे॥
खोटे करम करे कुटिलाई। मुख देखन के जोग न भाई॥
अकल अनीत रीति नहिं जाना। वे भरमैं चौरासी खाना॥
गुरु निंदा संतन की करई। नहिं अज्ञान अधम निस्तरई॥
सुनु हिरदे यह काग सुभावे। भिष्टा‡ की बैठक वे चावे॥
मिसरी मेवा कभी न खावे। हर दम हिरस वही चित चावे॥
करम जोग करनी की खूबी। उनकी नाव बीच मैं डूबी॥

॥ दोहा ॥

संतन की निंदा करे, नानक कहत पुकार।
संत को निंदक नानका, बहुरि बहुरि अवतार॥

*बर्णसंकर=दोग़ला। †सलाह। ‡बिष्ठा, ग़लीज़।

॥ चौपाई ॥

यह नानक मुख गाये साखी । ऐसे सबही संतन भाखी॥
संत द्रोह सुख कधी न पावे । नहिं मुख अपने कछु
फुरमावैं ॥
अपने कर्म आप सिर बाँधे। नकली बुधि अपनी नहिं छाँड़े।।
कूकरमी नर यही कहावे । संतन की निंदा जेहि भावे॥
गुरु से कपट साध से चोरी। की होय निरधन की होय कोढ़ी॥
ऐसे अगली साख पुकारै । जिनको नीक लगै सोइ धारै।।
संत अभाव करे जो कोई । जिनकी करम रेख जस जोई।।
नारदने गुरु धीमर* कीन्हा।कर अभाव गुरु नरकहिंलीन्हा।।

*कथा है कि भगवान ने नारद से कहा कि गुरू धारन करो बिना इसके काम न सरेगा। नारद ने पूछा किसको गुरू बनाऊँ। जवाब मिला कि जो पहिले रास्ते में भेंटै। नारद वहाँ से चले तो एक मल्लाह मिला और उसी को गुरू बनाना पड़ा। जब भगवान के पास लौट कर आये भगवान ने पूछा कि कहो गुरू मिला। नारद ने ग्लानि से जवाब दिया कि हाँ एक मल्लाह जो पहिले मिला उसी को आप की शिक्षा अनुसार गुरू बना लिया। भगवान बोले तुमने अपने गुरू की निरादर से चर्चा की इससे चौरासी के भागी हुए। यह सुनकर नारद घबराये और प्रार्थना की कि महाराज किस रीति से चौरासी से बचूं। भगवान ने उत्तर दिया कि जाकर अपने गुरू से दीनता करो और उनकी शरन पड़ो। नारद ने ऐसाही किया जिस पर उनके गुरू मल्लाह ने उनको यह जुगत बताई कि एक पत्र पर हरि से चौरासी लिखवा कर उसी पर खूब लोटो तो चौरासी कट जायगी। इस प्रकार करने से नारद चौरासी से बचे।

फिरउनसेउन नरक छुड़ाया।फिरउनकी सरनागति आया।।
कागज पर लिख दी चौरासी। लेटत छूटि गई जमफाँसी।।
योँ पुरान कहि कर गोहरावे। गुरु निंदक सुख कधी न पावे।।
अपनो नीच नकल दरसावे। हम चतुराई ऐसी चावे।।

॥ दोहा ॥

नीच निचाई ना तजे, औगुन करे गुलाम।
काम पड़े पर फिरि खुले, खोटे खोटे दाम।।

॥ चौपाई ॥

खोटे में खोटा मिलि जावे। खरे खरे की राह चिन्हावे।।
अपनी खोट मोट करि जाने। खरे खराई नहिं पहिचाने।।
खोटे मेँ खोटा है राजी। यहि बिधि बूड़े मूरख पाजी।।
उनको अकल कौन अर्थावे। वे गोते अपने से खावें।।
उनको बल्ली नाव न बेड़ा। उनका होय न कधी निबेड़ा।।
सज्जन की संगति सुख पावे। दुरजन मेँ दूना दुख आवे।।
अपनी अपनी रीति मिलापा। जैसे को तैसा मिलि थापा।।
अपनी अपनी चाल चिन्हाई। जैसी गति जैसे ने पाई।।

॥ दोहा ॥

जैसे को तैसा मिले, जैसी कहे बनाय।
वह उनकी बिधि योँ मिले, एक ठिकाने जाय।।

॥ चौपाई ॥

वे अपनी करनी फल पावें। बोवेँ लुनें वही वो खावेँ।।
असल जीव की करनी न्यारी। वे ओलेंगे बात बिचारी।।

असली कुल अपने पै जावे । नकली कुल को दाग लगावे॥
बहुरूपिया कइ रूप बनावे । भाँड़ बने पै नकल दिखावे॥
असल जीव से नकल न होई । नकली नकल बनावे सोई॥
नकली असली का यह लेखा । पुरब* कर्म जिनकीजेहि रेखा॥
जो निज निज जिनकी करतूती।बुधिअनुसारसंगमजबूती॥
जल में कँवल जौंक इकसंगा । उपजे गुन अप अपने अंगा॥

॥ दोहा ॥

जौंक रुधिर को पियत है, जो कोइ जल में जाय ।
कँवल रवी† देखत खिले, ऐसे अंग सुभाय ॥

॥ चौपाई ॥

कँवल जौंक उपजे इक ठाँई । न्यारे न्यारे गुन बिलगाई॥
अब हिरदे सुनु और सुनाऊँ । साधअसाधउभै‡ गतिगाऊँ॥

## साध के लच्छन

साध वोही जो सब कछु साधे। नहिंअनुमानविरतअनुरागे॥
संजम बिना साध नहिं होई । बिन साधे साधू नहिं सोई॥
स्वाल करे नहिं मुख से माँगे । बैठे रहे नाहिं इक जागे§॥
गदला पानी बंधन सोई । बहता सदा निर्मला होई॥
जगकी आस कबहुं नहिं राखे । सतगुरु बानीकोनितभाखे॥
खाय पिये पल्ले नहिं बाँधे । पैसा न पोट उठावे काँधे॥

*अगले । †सूरज । ‡दोनों की । §जगह ।

॥ दोहा ॥

खाय पिये उतना रखे, बाकी रखे न पास ।
और आस ब्यापे नहीं, सतगुरु का बिस्वास ॥

॥ छंद ॥

हिरदे गरीबी दीनता, दृढ़ साध को निस्चै चही ।
खोटी खरी कोइ कहन कहे, जिनकी नहीं मनमें लही ॥
अपनी रहनि रस रीति को, आठो पहर जाँचे रही ।
सतगुरु बचन मुख बाक बानी, जानि सोइ समझै सही॥
सबही सनातन संत ने, गुरु बैन* की आँखी कही ।
हिये में समझ धरि कर करे, सोइ साध गुरु सूरत लही ॥
निसदिन चरन में लौ लगे, पल एक नहिं बाहर गई ।
हिरदे गुरू के ध्यान बिनु, छिन एक नहिं न्यारी रही॥

॥ सोरठा ॥

साधन की यहि रीति, प्रीति परस परखें वही ।
गुरु चरनन जिन चीत, रमक† रीति जाने जोई ॥

॥ चौपाई ॥

हिरदे सज्जन साधू सोई । यहि बिधि परख चले जो कोई॥
हे हिरदे यह साध सुभाऊ । निस दिन जिनके चरन उमाऊ‡॥
यहि बिधिसाधरहेपरबीना । निसदिनपकरिप्रेमरस पीना॥
उनका संग करे जो कोई । जीवन मुक्त जासु की होई॥

* बचन । † कुछ । ‡ उमंग ।

# असाध के लच्छन

और असाधू की सुनु रीती। आसा लोभ परख की प्रीती॥
जो कोइ देने को ले आवे। प्रीति परस्पर बहुत जनावे॥
ऐसो चित्त बिर्ति अनुसारा। कहे मुख से हम जग से न्यारा॥
मन का लोभ भोग भरमावे। ममता माया नित्त नचावे॥

॥ दोहा ॥

मनकी ममता ना घटी, लटी* न छूटे चाल।
हाल हाथ से दे कोई, ले झोली में डाल॥

॥ चौपाई ॥

खेती बैल महल सब राखे। हम हैं साध कहे अस भाखे॥
बट्टा ब्याज करे दिन राती। खौ† खाँड़े‡ गाड़े बहु भाँती॥
अपनी मरन जिवन सुधि नाहीं। साध हुए केहि कारन भाई॥
भेख किया पर रेख§ न जानी। करम कांड करनी पहिचानी॥
यों यहि भाँति रहनि दिन राती। साधू नाम करे उतपाती॥
जो कोई दरसन को जावे। हाथ मिठाई देखि सिरावे‖॥
जो कोइ राजा बाबू आवे। ले परसाद सामने जावें॥
ऐसे मन की बिर्ति बनाई। देखी बात परखि सब भाई॥

॥ दोहा ॥

यह रुजगारी साध की, बरनि बताई बात।
हाथ कछू नहिं अंत को, पंथ मिला नहिं साथ॥

---

*नीच। †भुंइधर, तहख़ाना। ‡खोद कर बनाना। §होनी, आक़िबत। ‖सराहै।

# पंथ

॥ चौपाई ॥

अब पंथा पंथी दरसाऊँ । पूछे पंथ न जाने गाऊँ ॥
पंथ नाम मारग को होई । सो पंथी बूझा नहिं कोई ॥
गाय बजाय खंजरी पीटी । गावत मुख में पड़ि गई सीठी॥
जो संतन का सब्द विचारा । सूझे पंथ वार अरु पारा॥
सब्द संधि कछु और बतावे।यह नहिं समझ सोध* मन लावे॥
गुरु बानी संतन की बूझे । निर्मल नैन आँखि से सूझे॥
गुरु चेला मिलि पंथ चलावा । संत पंथ की राह न पावा॥
यहि लेखा देखा उन माहीं । पूजा को उनका मन चाही॥

॥ दोहा ॥

पूजा के कारन करे, सब बिधि भाँति उपाधि ।
आदि अपन जाने नहीं । कहने को है साध ॥

# साध शिरोमनि या संत

॥ चौपाई ॥

अब सुनु कहूं सिरोमन साधू।उनकी मति गति कहनि अगाधू॥
उनकी सुरति कँवल पद माहीं । पदम पार बेनी नित न्हाईं॥
मँजन करि करि करते ध्याना। पदम सुरति सतगुरु अस्थाना
पदम कँवल पर आसन लावे । जहँ कोइ साध सूरमा जावे॥
सुन्न और महासुन्न के पारी। जहँ वह जाय लगावे तारी॥

---

* बिचार ।

सत्तपुरुष के दरसन पावे। तीन लोक के पार कहावे॥
यह सब संत महात्मा गाये। साखी सब्द माहिं दरसाये॥
जो सब्दन का करे बिचारा। जब जिव का पावे निरबारा॥

॥ दोहा ॥

सब्द साखि में संधि है, अंध लखे नहिं कोय।
यह माया फरफंद से, बंध न टूटा सोय॥

( हिरदे बाच )

॥ चौपाई ॥

साध साध का एक बिचारा। तुम कहि भाखा चारि प्रकारा॥
साध साध सब एक बतावा। तुम बरनन कीन्हा कइ भावा॥

## साध गति

( तुलसीदास बाच )

साधन की है रीति अनेका। साधू मति है अगम अलेखा॥
यह सब भेष नाम से पूजे। साधू की गति बिरले सूझे॥
षटदर्सन को बेद बखानो। साध रीति फिर भिन*करि जानो॥
पंथ रीति भेषन के माहीं। यौं सब संत कहें गोहराई॥
जो प्रयाग बेनी† पद पावे। सुनु हिरदे सो साध कहावे॥
सतगुरु के पूरन पद बासी। जहँ नहिं जाय सकै अबिनासी॥

॥ दोहा ॥

जो संतन सतगुरु कहा, पूरन पद के माहिं।
चरन कँवल बेनी बहे, नित जहँ जावे न्हाय॥

---

*जुदा। †सुखमन।

॥ चौपाई ॥

यह मारग साधू मत चीन्हा। सो समझै सज्जन परबीना॥

( हिरदे बाच )

साधू की करनी दरसाई। रहनी रमज* सभी समझाई॥
गृहस्थो का कहो कौन निबेड़ा। सतसँग किया न सतगुरु हेरा
सिर पर मोट†अपरबल भारी। जुगन जुगन उतरी न उतारी॥
आठ पहर वाही में लागे। कर्म भोग पूरबले जागे॥
वह कहो कैसा करे बिचारा। आठ पहर आफत में हारा॥
वोहि कभी कहुं होय निबेड़ा। नर तन नाहिं मिले जग फेरा॥
जीवन तुच्छ जक्त के माहीं। नर देंही पावन को नाहीं॥

॥ दोहा ॥

नर देंही दुर्लभ कहें, मिलै न बारम्बार।
धार बड़ी भवसिंधु की, क्योंकर उतरे पार॥

# गृहस्थी का कैसे निबेड़ा होय

( तुलसीदास बाच )

॥ चौपाई ॥

यह भवसागर अगम अथाहा। यामें लगे न बल्ली थाहा॥
सतगुरु संत भाग से पावे। की उनकी वे दया बसावें॥
जो कोइ और उपाव लगावे। भवसागर गम‡ कभी न पावे॥
काल दिवाल बाट पर कीन्हा। घाटा घेर आपने लीन्हा॥

*भेद। †गठरी। ‡थाह।

कूंची* हाथ संत के घाटा। ताला खुले मिले जब बाटा॥
और तने† कोइ राह न पाई। करि करतब सब देंहि गँवाई॥
सेवा साध करै दिन राती। तौ सुभ के फल आवे हाथी॥
साँचे भाव प्रेम से पूरी। तै। कछु पाप होयँगे दूरी॥
कोई आत्मा भूखी आवे। वाको देखि दया दिल लावे॥
वो अहार की कीमत नाहीं। मानो सब बैराट जेँवाई॥

## (पिंडुका पिंडुकी की कथा)

ब्यास भागवत माहिं बखाना। पिंडुका पिंडुकी का दृष्टाना॥
जेहि बृच्छ पर करैं बसेरा। नीचे कीन्ह मुसाफिर डेरा॥
त्रिया पुरुष दोउ बात बिचारे। भूखा रहा मुसाफिर द्वारे॥
ठंढ की सीत लगी जब भाई। लकड़ी बीनि मुसाफिर लाई॥
बन में आग कहाँ से आवे। देँह जुड़ानी सीत सतावे॥
तब पिंडुकी मन किया बिचारा। गृहस्थीपर धिरकारी डारा॥
भूखा रहा मुसाफिर द्वारे। घर मसान सम जानि निहारे॥
जब पिंडुकी उड़ि अगिनी लाई। ऊपर से उन दीन्ह गिराई॥
जबहिं मुसाफिर आग जराई। उठ करि बैठ तापने भाई॥
पिंडुकी पिंडुका बहु दुख भीँजे। भूखा रहा कौन बिधि कीजे॥
पिंडुकी गिरी आगिके माहीं। फिर पीछे पिंडुका गिर भाई॥
दोऊ जरे आग के माहीं। भूंजि मुसाफिर भूख जुड़ाई॥
भाखी ब्यास कथा के माहीं। भूखा न रहे द्वार पर जाई॥

---

*कूंजी। †तरह।

जेहि घर द्वारे भूख रहाना । वह घर कहे मसान समाना॥
बड़ा दोष पातक वहि लागे । भूखा रहे द्वार के आगे॥

॥ दोहा ॥

जो द्वारे भूखा रहे, गृहस्थी में होइ पाप ।
आप अपनपौ परखि के, भूखे को संताप ॥

॥ चौपाई ॥

हे हिरदे यह गृहस्थ बिचारा। यहि बिधि से करिलेइ गुजारा॥
गृहस्थी माहिं बने कछु नाहीं । भूखा देखे देइ जुड़ाई॥
जाति पाँति नहिं देखे भाई । भूखा कोइ होय देइ खिलाई॥
जो अभ्यागत* भूखा आवे । साध जानि के सीस नवावे॥
जो परसाद होय घर माहीं । उनके सन्मुख आनि चढ़ाई॥
वह भोजन को भोग लगावे । उनकी दया पाप नसि जावे॥
यही भाँति जग जीव गुजारा। और भाँति नहि पावे पारा॥
जो कोइ समझि लखे यहबानी । गृहस्थीधर्म करे परमानी॥

॥ दोहा ॥

गृहस्थी होय हिरदे दया, भूखे कछू खिलाइ ।
बाक सनातन यौं कहे, सभी सभी गोहराइ ॥

॥ छंद ॥

गृहस्थी धरम यह भाँति, कोइ भूखा दुवार रहे नहीं ।
सरधा बने कछु होय जो जस, आनि के लावे सही ॥
हिरदे दया दिल धीर करि, यहि भाव की भिच्छा कही ।
आतम दया मन माहिं बरते, तत्त की बातें यही ॥

---

*जो इसके घर आवे, मुसाफ़िर ।

जिव आपु सम सब का लखे॰ दुख भूख की भारी भई।
ऐसे बिचारे बात जब, वोहि पुन्न की कहो का कही॥
जग एक एक जिव भूख पोखे*, कोटि फल उनको भई।
ऐसे रहै जग माहिं गिरही, वहि जीव को जीवन सही॥

॥ सोरठा ॥

जीवन जग में सार, जो गिरही होइ अस रहे।
पावे पुन्न अपार, स्वर्ग लोक बासा करे॥

( हिरदे बाच )

॥ चौपाई ॥

स्वर्ग पुन्न से पावे कोई। ऐसी तुमने बरनि बिलोई† ॥
पुन्न जोग से स्वर्ग सिधावे। पुन्न भोगि मृत लोकहि आवे॥
स्वर्ग नर्क नहिं हुआ निबेड़ा। फिर कीन्हा चौरासी फेरा॥
आवागवन छुटा नहिं स्वामी। जन्म धरे जिव अंतरजामी॥
जग निस्तार पार नहिं पाये। यह तो आवागवन समाये॥
वह उपदेस दिया नहिं कोई। जासे आवागवन न होई॥
सिर भरि बूड़ रहा जग सारा। माया मोह बँधा परिवारा॥
जड़ता ने सब बुद्धि नसाई। कैसे भव जिव उतरि जुड़ाई॥

॥ दोहा ॥

स्वर्ग भोग पुन‡ के उदै, भोग करे भुगताय।
पुन्न भोग जब करि चुके, फिर चौरासी जाय॥

---

*पालन करै। †निर्नय किया। ‡पुन्न।

# सतसंग की महिमा

(तुलसीदास बाच)

॥ चौपाई ॥

सुनु हिरदे जग का यहि लेखा। बिन सतसंग न होय बिबेका॥
बिना बिवेक एक नहिं आवे। एक बिना नहिं दुरमति जावे॥
दुरमति से दुनियाँ भई भाई। दुनियाँ दुरमति कीन्ह बनाई॥
यह ऐसे बूड़ा संसारा। संसै आस बँधा सिर भारा॥
बिन सतसंग बिवेक न आवे। बिना बिवेक ज्ञान कहा पावे॥
बिना ज्ञान बुधि सुधि नहिं होई। बिना बुद्धि बूझै नहिं कोई॥
बिन बूझै नहिं आँखी सूझा। यौं जग अंधा भया अबूझा॥
बिन सतसंग बूझि नहिं पावे। बिना बूझि नहिं तिमिर नसावे॥
संत दया अंजन अर्थावैं। जब यह तिमिर आँख से जावे॥
सतसँग सब संतन गुहराया। तन मन दीन हुए जिन पाया॥

॥ दोहा ॥

केई* मूरख भटके फिरैं, लगा न उनके हाथ।
साथ केई दिन से लगे, जगे न बूझी बात॥

*कोई।

॥ चौपाई ॥

सतसँग केई दिन करै जो कोई। बिना दया नहिं वासिल[*] होई॥
बिन वासिल कछु पड़े न हाथा। सत संगति नहिं पावे बिधाता॥
बिन सत संगति कधी न पावे। यहि विधि संत सभी गुहरावे॥
सतसँग की महिमा कहें भारी। सो कोइ सज्जन साध बिचारी॥
करे घड़ी इक कोइ सतसंगा। सो वह करे जक्त भव भंगा॥
जिन अपने में लीन्ह बसाई। निकरे तिमिर आँखि खुलि जाई॥
जो कोइ सतसँग प्रानी पावे। जिनका आवागवन नसावे॥
हिरदे गृही[†] संगत कहा जाने। जग फंदे में जीव भुलाने॥

॥ दोहा ॥

जीव दया पाले कोई, इनको इतना बहुत।
मौत खड़ी सिर ऊपरे, मूरख बाँधे थोथ[‡]॥

॥ चौपाई ॥

यौं हिरदे गृही का परभावा। भूखे दया भाव दरसावा॥
और तने[§] नहिं होय गुजारा। जिव आतम सब एक पसारा॥
दयाहीन नर दुष्ट कहावे। नर तन नाहक जन्म गंवावे॥

---

[*] मेला। [†] गृहस्थी। [‡] मुंह। [§] तरह।

सतसँग बिना भरम नहिं भागे। पुरबले अंकुर बिन नहिं जागे
सतसँग सतसँग सब गुहरावे। सतसँग का कोई अंत न पावे
बिस्वामित्र बसिष्ठ प्रसंगा। तप सतसंग कहे दोउ अंगा*॥
साठ हजार बरस तप कीन्हा। उभै† घड़ी सतसँग तिन दीन्हा
दोइ घड़ी सतसंगति आगे। तुली तपस्या तुले न लागे॥

॥ दोहा ॥

कई बरस तप करि मरे, बीते साठ हजार।
दोइ घड़ी सतसंग से, तुला सेस का भार॥

*कथा है कि एक बार बशिष्ठ जी बिश्वामित्र जी के घर गये तो बिश्वामित्र ने उनको अपने साठ हज़ार बरस की तपस्या का आधा फल भेंट किया। कुछ दिन पीछे बिश्वामित्र जी बशिष्ठ जी के आश्रम पर गये तो बशिष्ठ जी ने दो घड़ी सतसंग का फल उनको भेंट किया। बिश्वामित्र जी ने जिनको अपने तपोबल का बड़ा अहंकार था इस भेंट को अपनी भेंट के मुकाबिले में बड़ा तुच्छ समझा और दोनों ऋषीश्वरों में बहस होने लगी कि साठ हज़ार बरस की तपस्या बढ़कर है या दो घड़ी का सतसंग। अंत को बिश्वामित्र न्याव चुकवाने को शेष नाग के पास गये। शेष नाग ने कहा कि मेरे मस्तक पर सारी पृथ्वी का भार है उस को ज़रा सम्हाल लो तो निर्णय करूँ। बिश्वामित्र ने अपने साठ-हज़ार बरस का तपोबल लगाया पर पृथ्वी तनिक न हटी, तब शेष नाग ने पूछा कि कुछ और पूंजी भी है। बिश्वामित्र ने बड़े हेठाई की निगाह से कहा कि हाँ वही दो घड़ी के सतसंग का फल जो बशिष्ठ जी ने दिया है। शेष नाग बोले कि ख़ैर उस को भी लगा कर आज़मा देखो। ज्यों ही ऋषिजी ने उस को लगाया पृथ्वी दूर हट गई—तब वह बोले कि अब निर्णय करिये। शेष नाग ने जवाब दिया कि अब भी निर्णय करना बाक़ी है जब तुम ने देख लिया कि वह अपार भार जिसे तुम्हारा साठ-हज़ार बरस का तपोबल रंचक न हटा सका वह दो घड़ी के सतसंग के महात्म से दूर हट गया। बिश्वामित्र लज्जित हो कर लौट आये।

†दो।

॥ दोहा ॥

बिस्वामित्र बसिष्ठ की, भई परस्पर बाद ।
उन तप को कीन्हा बड़ा, उन सतसंग अगाध॥

( हिरदे बाच )

॥ चौपाई ॥

यह स्वामी सतसँग की महिमा। जो कहुं मिले करे इक लहमा
भाग बड़े सज्जन के सोई । वे सतसँग में रहें समोई॥
अब वह कथा कहो बिस्तारी । जुगन जुगन की पूछूं सारी॥
सतजुग सब से बड़ा बतावैं। कलिजुग छोट सबै मिलि गावें
कहो स्वामी मुख बैन बिलासा। याका भाखो भेद खुलासा॥

( तुलसीदास बाच )

सुनु हिरदे यामें दोइ बाता । याको बूझु बचन बिख्याता॥
जग रचना को सतजुग भारी। जिव निस्तार कलू अधिकारी
भिन भिन याका भेद सुनाऊँ। तोको बरनि भाखि समझाऊँ॥

॥ सोरठा ॥

बिधि बिधि भाखूं बैन, कहन कोई राखूं नहीं ।
सुनने में सुख चैन, नैन निरख दीसे वोही ॥

## सतजुग का प्रभाव

॥ चौपाई ॥

अब सुनु याको कान लगाई। प्रथम कहूं सतजुग गति गाई॥
जब लछमी प्रभुता बिस्तारी। माया सुख कीन्हा अधिकारी॥
उमर बहुत कल्पन की कीन्हा। जोधा जोर अधिक लखि लीन्हा॥

कंचन भूमि पिरथिवी कीन्हीं । मट्टी मीठ लगे जस चीनी॥
एक कमावे घर दस खावे । खेती में सौगुन उपजावे॥
द्रव्य अपार अपूरब भारी । जग माया कीन्हा बिस्तारी॥
हीरा रतन जवाहिर सोई । कलसे रतन महल के जोई॥
इन बातन सतजुग है भारी । माया छलन किया बिस्तारी॥
इन आसा में जीव जुड़ावे । बंधन ले आसा फिरिआवे॥
ऐसे जक्त बाँधि बिस्तारा । जीव सुखी माया अधिकारा॥

॥ दोहा ॥

इन बातन सतजुग बड़ो, पिया घर जीव भुलाय ।
यह सुख माया में बँधे, उलटि काहे को जाय ॥

॥ चौपाई ॥

उलटि जीव भव सागर आवे । बंधन से मालिक बिसरावे॥
सतजुग ध्यान हाड़ में प्राना । खान पिवन बिन कष्ट बखाना
काष्टा फल तप राज कराई । दोनों जक्त भोग के माहीं॥
इन बातन सतजुग बढ़ गाया । पिया मिलन नहिं जीव बताया ॥
यासे सतजुग छोट बतावे । पिया मिलन की राह न पावे॥

## कलिजुग का प्रभाव

कलजुग संत बड़ा ठहरावैं । संत उतरि पिय घर से आवैं॥
नाम डोरि दे सुरति लखावें । सुरति डोरि जिव पिय घर जावे॥
सब संतन कल बड़ा बतावा । यामैं जीव अपनपौ पावा॥

॥ दोहा ॥

बड़ा कलूजुग सब कहैं, संत बचन के माहिं ।
रामायन के बाक में, तुलसी कही बनाय ॥

॥ चौपाई ॥

कलु कर एक पुन्न परतापू । मानस पुन्न होय नहिं पापू॥

॥ दोहा ॥

कलजुग सम नहिं आन जुग, जो नर करे बिस्वास ।
नाम डोरि गहि भव तरै, जा मन तुलसीदास ॥
कलजुग सम नहिं आन जुग, संत धरैं अवतार ।
जीव सरन होइ संत के, भवजल उतरै पार ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी कही कलू की साखी। यहि बिधि यौं सब संतन भाखी॥
द्वापर त्रेता का यह लेखा । ये जुग में औतार बिसेषा॥
मारि निसाचर जग के माहीं। यह लीला उन ने दरसाई॥
जीव जेहि घर से चलि आया। वहि घर राह नाहिं दरसाया॥
मार कूट संग्राम सुनाया । आतम हत जिव मारन गाया॥
संत दयाल दया अर्थावैं । जीव हतन की राह छुड़ावैं॥
अज्ञानी को ज्ञान बतावैं । दे उपदेस दया उपजावैं॥
अंकूरी जिव में धरि लेई । हिरदे सुद्ध हरख हिय जेई॥

॥ दोहा ॥

संत चरन बिस्वास से, कलजुग में निरधार ।
सतजुग तो बंधन करे, कहैं सब संत पुकार ॥

॥ छंद ॥

हिरदे कलू जुग जोग है, सब संत ने ऐसी कही ।
लेवैं संत औतार जेहि जुग, जीव को सुधि बुधि दई ॥
हिये के तिमिर खुलि ज्ञान उपजे, संत की सरना लई ।
दृढ़ कै दिये उपदेस मन को, भोग बिष त्यागे रही ॥
इतनो कलू परताप जग में सब्द को समझै सही ।
सतजुग सुनो सब रीति उनकी, उलटि सुधि घर ना लई ॥
लीला त्रिलोके कृत्तम बस, जिव अंध का अंधै रही ।
सतजुग जगत में नीक कहैं, हिरदे सुनो बातैं यही ॥

॥ दोहा ॥

सतजुग की बरनन* करैं, कलजुग कहत मलीन ।
सब दुनियाँ ऐसी कहे, संत बचन मुख चीन्ह ॥

॥ चैापाई ॥

संतन ने कलु नीक बताया । सतजुग का इतबार न आया ॥
त्रेता द्वापर कृत्तम देखा । मार कूट रस रीति बिसेषा ॥
यामें नाहिं जीव को काजा । ये जुग में भूमी भये राजा ॥
राज काज जग रीति अनीतो । जो जिन करी भई जस रीतो ॥
यहि बरनन कछु हाथ न आवे । को कहि कहि सिर मूड़ पचावे ॥
यह हिरदे बकबायद† लेखा । आवत कछू हाथ नहिं देखा ॥

*बड़ाई । †बकवाद ।

# सतसंग की महिमा

जो सतसंग मिले कोइ बारा। घड़ी एक दोइ होइ कृतारा*॥
बड़े भाग सत संगति होई। जब अनुराग जीव में जोई॥

॥ दोहा ॥

सत संगति यह जीव को, लगे जो अंदर जाय।
माहिं† भाल खटकत रहे, काल बली को दाँव॥

( हिरदे बाच )

॥ चौपाई ॥

हे स्वामी जो सतसँग पावे। उनको भर्म कहो कस आवे॥
यह मोरे मन भया बिचारा। सो स्वामी कहिये निरवारा॥

( तुलसीदास बाच )

हिरदे उन सतसंग न कीन्हा। अंदर चुभक‡ नाहिं रस पीना॥
ज्यौं पानी पाहन पर डारा। ऊपर गील सूख वाहि वारा॥
अंदर हुआ गील नहिं भाई। कहो सूखे नाहिं कहा कराई§॥
ज्यौं मिसरी पानी में डाली। मिसरी घुल पानी रस चाली॥
पानी मिसरी इक रँग राता। जल मीठा मिसरी के साथा॥
घुली मिठाई जल के माहीं। सो सरबत मीठा भया भाई॥

॥ दोहा ॥

जल मिसरी कोइ ना कहे, सर्बत नाम कहाय।
यौं घुल के सतसँग करे, काहे भरम समाय॥

---

* कृतार्थ। † अंतर। ‡ डुबकी लगा कर। § कहो तुरत सूख न जाय तो क्या करे।

॥ चौपाई ॥

उन हिरदे सतसंग न कीन्हा । जिनको आया भर्म यकीना॥
बिन माँगे से दूध दिवावें । माँगे से पानी नहिं पावे ॥
जिनपरउनकीमेहर कहावे । पानी से वे दूध दिवावें ॥
जोउनकीमन मौज निहारे । दिल में होय सोई धरि धारे॥
यह सतसंग गूढ़ गति गाई । यह कोइ रतन पारखी पाई॥
जैसे भाँग पिये कोइ भाई । नसाबाज जो जाय पचाई॥
नया कोई पीवन को जावे । उसके तन को तुरत घुमावे॥
ऐसे सतसँग का रस भारी । पीवत आवे तुरत खुमारी ॥

॥ दोहा ॥

सूरा रन में सीस को, धरे हथेली माहिं ।
सरा सती जरि जाय जो, पिल पैठे घर माहिं ॥

॥ चौपाई ॥

दाम्नी बिन सूरा ज्यों पेले । सूरा बिन सिर धड़ से खेले ॥
ऐसा जो मारग पग धारे । धड़ ऊपर से सीस उतारे ॥
दूध छटी का निकसे भाई । सिर बेचे मारग जिन पाई॥
यह नहिं दूध भात की बाता । बैठे खान चलावे हाथा॥
जो यह राह सहज की होती । तो ब्राह्मन क्यौं बाँचत पोथी ॥
तप अरु जोग कठिन पहिचानो । इनहिं राह अटपट करि जानो ॥

*अग्नि ।

ऐसा मारग बिकट अतोला। पचि पचि मरे किनहुं नहिं तोला ॥
संत राह रस्ते की बातें। सतगुरु बिना कोई नहिं पाते॥

॥ दोहा ॥

राह रकाने संत के, मारग को को जाय।
बड़े बड़े महात्मा थके, कहे को अगम अथाह ॥

( हिरदे बाच )

॥ चौपाई ॥

हे स्वामी मोहिं बरनि बतावो। संतन की गति गाय सुनावो॥
कहो मारग केहि देस रहाई। कहँ होइ राह देस को जाई॥
कैसा देस बरनि मोहिं कीजे। हिरदे दया हिये में लीजे॥

## संत देश

( तुलसीदास बाच )

॥ चौपाई ॥

जहँ नहिं पृथ्वी पवन अकासा। पाँच तत्त मारग नहिं स्वाँसा ॥
चाँद सुरज तारागन नाहीं। जोगी ब्रह्मा बिस्नु न जाई॥
दस अवतार राह नहिं जानी। निरंकार नाहिं निर्बानी ॥
जोति सरूप न पहुंचे भाई। नहिं ओंकार अकार न जाई॥
पारब्रह्म जो कहिये ऐसा। जाके आगे सतगुरु देसा ॥
जाके परे संत अस्थाना। उनका देस उनहिं पहिचाना॥

हे हिरदे यह अकथ बिलासा। उनको गति उनही परकासा॥
यहि रे अगम्य को को जाने। भेद नेत कहि संत बखाने॥
जहँ नहिं साखी सब्द न बानी। यह अदेख गति किनहुँ न जानी॥
वे करि दया देइँ दरसाई। उनकी मेहर बिना नहिं पाई॥
देखन में नहिं नजरे आवे। हिये दृग नैन खुले जब पावे॥
सो अंजन है उनके पासा। दया बिना और झूंठी आसा॥
वे पल माहिं दया दरसावें। कृपावंत संत को पावे॥
केइ मूरख पचि मुए अनेका। उनकी मेहर मिले नहिं ठेका॥

॥ दोहा ॥

हे हिरदे यहि अकथ गति, कही सब संत बिचार।
संत सिरोमनि रीति को, पावे को निरधार॥

( हिरदे बाच )

॥ चौपाई ॥

जब हिरदे ने बचन सुनाया। यहतो समझ नाहिं मोरि आया
कपट भेष जो साध कहावे। भेष बनाय ठगी करि लावे॥
देखत साध सरोतर* भाई। अंतर कपट छलन को चाही॥

# कपट भेष--बाघ का दृष्टांत

( तुलसीदास बाच )

॥ चौपाई ॥

तब तुलसी बोले सुनु भाई। याका एक प्रसंग सुनाई॥
इक बन बाघ रहे बनखंडी। बन में मठ देवी जह चंडी॥

*हर प्रकार से या पूरा।

वोहि अस्थान ठिकाने भाई । बाघ वहीं बिसराम कराई॥
धुंधूकार बड़ा बन भारी । एक दिवस गये बाघ सिकारी॥
सब दिन फिरे सिकार न पाई । साँझ पड़े अस्थान सिधाई ॥

॥ दोहा ॥

खुध्या* में ब्याकुल हुए, लगी सिकार न हाथ ।
राति बिताई बिपति से, फजिर किया उतपात ॥

॥ चौपाई ॥

बाघ साध का भेष सँवारे । फूँकि पाँव भूमि पर डारे ॥
बिन फूंके नहिं पाँव उठावे । फूंकि भूमि जब पाँव चलावे ॥
येही भाँति मारग में आवे । मानो सुद्ध साध दरसावे॥
बंदर एक बृच्छ पर बैठा । देखी अचरज बात अनूठा ॥
बाघ फूँक धरि पाँव चलाई । यह अचरज देखा बढ़ भाई॥
बंदर के मन भया अचंभा । पिरथी फूंकि धरे पग लंबा॥
बृच्छ नजीक पास जब आया । जब धीमी सी चाल उठाया ॥
बंदर ने पूछी हे भाई । तुम हो कौन कहाँ से आई॥

॥ दोहा ॥

अरे बनचर हम साध हैं, दया भाव के माहिं ।
फूंकि पाँव हम यौं धरैं, जिन चोंटी मरि जाय ॥

*भूख ।

॥ चौपाई ॥

बंदर के मन में उठि आई । याके चरन धरूँ सिर जाई॥
ऊँचे उतरि डार पर नीचे । जा करि पड़ो पाँव के बीचे॥
तब बंदर ने वचन उचारा । स्वामी धूप बड़ो यहि बारा॥
करोबृच्छबिसरामनिवासा । मैं सेवक तुम्हरो निज दासा॥
हौले पाँव उठाये आये । बृच्छ छाँह में आसन लाये॥
बंदर उतरि पाँव सिर दीन्हा । तबही पकरि डाढ़ में लीन्हा
हे भाई तू सेवक प्यारा । साधू को दीन्ही ज्योनारा॥
आज अहार बनो भल भाई । तुम कीन्ही मोरी सेवकाई॥

॥ दोहा ॥

बंदर को हाँसी लगी, सुने कपट के बैन ।
बाघ मनै बिसमय भई, क्यौं हाँसे सुख चैन ॥

॥ चौपाई ॥

कहे बंदर हाँसी यौं आई । एक अचंभा देखा भाई॥
जब बन बाघ पूछिया भाई । ताे को हाँसी क्योँ करि आई॥
तब बंदर बोला अस भाऊ । ढील करो मैं बचन सुनाऊँ॥
जब बन बाघ ढील मुख कीन्हा । बंदर छलाँग डारि* को लीन्हा॥
जब बिस्वास बाघ बुलवावे । नहिं बंदर वा को पतियावे॥

डाल ।

ऐसे कपट साध जग जानो। गुन मन ज्ञान कहा पहिचानो॥
बंदर कहे सुनु बाघ प्रसंगा* । अब मैं कबहुं करूँ नहिं संगा॥
सर्प उरगाने की जस बाता । अस मोहिं आज कीन्ह तुम घाता॥

॥ दोहा ॥

यह मन तो बंदर कहा, बाघ कहा है ज्ञान ।
उरगाना कहें गरुड़ को, काल सरप पहिचान ॥
ज्ञान पकरि मुख में लिया, मन बंदर को जाय ।
गरुड़ काल मुख सरप को, भच्छन को रे उपाय ॥
बाघ कहे बंदर कहो, सरप उरगाने बात ।
कहो कैसे उनकी भई, सो बंदर कहो साख ॥

## (उरगाने और साँप की कथा)

॥ चौपाई ॥

कहे बंदर सुनु रे बन बाघा। तैंने छल कीन्हा यहि जागा॥
साध जान तोरे ढिंग आया। तैंने मोको डाढ़ दबाया॥
जैसे उरगाने छल कीन्हा । उनने बचन सरप को दीन्हा॥
बचन दिये पर दगा बिचारा। जेहि बिधिकीन्हाहालहमारा
उरगाना इक जाति मुसाफिर। रहे बड़ चोर चलनमेंकाफिर
डेरा कीन्ह सहर इक माहीं । खाने में अधि रात बिताई॥
घोड़ा एक रहे उन पासा । तसमा टूटा करे तलासा॥
वोहि दुकान बनिये से पूछा । तसमे बिन घोड़ा रहे छूछा॥

* बात ।

॥ दोहा ॥

बनिये से उन पूछिया, कहाँ चमार का ठाम ।
तसमा टूटि बनावने, यह जल्दी का काम ॥

॥ चौपाई ॥

आधि रात जब गई बिताई । पूछत फिरै चमार का ठाँई ॥
ढूंढ़त गये चमार के पासा । तसमा एक बनावो खासा ॥
तब चमार बोला हे भाई । रात पड़े अब नहिं बनि आई ॥
दिया न बाती तेल उजाला । मोसे बने नाहिं ततकाला ॥
वाको टका दिये दो चारा । फजिर बने सो करो बिचारा ॥
इतनो कहे मकाने आया । उस चमार ने डौल बनाया ॥
काट कूट करि करी तयारी । कुंडली* पानी माहिं तगारी† ॥
वामें धरि पत्थर से दाबा । जब चमार सोया ले लाभा ॥

॥ दोहा ॥

ठंड मास के दिवस में, सरप कहूं चलि आय ।
कुंडली करी तगार में, माहीं पैठे जाय ॥

॥ चौपाई ॥

ठंड में बैठ रहा जल माहीं । तन में होस रहा नहिं भाई ॥
फजिर भये उरगाना आई । राह चले जल्दी करि भाई ॥
सरप कुंडलिया मारे बैठा । ठंड माहिं पानी में ऐंठा ॥
लीन्हा तुरत चमार उठाई । भूल गया चमड़े को भाई ॥
दोच दाच‡ चपटा कर दीन्हा । रापी§ ले मुख चीरा कीन्हा ॥
उरगाने लीन्हा ततकाला । उनने ले तंग में कस डाला ॥

---

*गेंडुरी बना कर । †बरतन जिस में चमड़ा भिंगाते हैं । ‡पीट कर और मसल कर । §चमड़ा काटने का औज़ार ।

होइ सवार मारग में लागा। पाँच कोस निकले वोहि जागा॥
सीत उड़ी रबि तेज दिखाना। गरमी भई सरप अकुलाना॥
उरगाने को मालुम नाहीं। सरप कसा घोड़े के माहीं॥
मारग बाँबि सरप इक बैठा। कहि अवाज इक बचन उलेटा॥
कसा सरप घोड़े पर देखा। तोको लाज न आवे नेका॥
काला होइ कर डसता नाहीं। तैंने सरप जाति लजवाई॥
जब लगि काम पड़ा नहिं काले। तैं का बोले बाँबी वाले॥
माल गड़ा जिस पर तैं बैठा। काम पड़ा नहिं खाया खेटा॥
माल गड़े पर तैं खुस भाई। वह गरूर मन में भरि आई॥
मेरी दसा डसन की नाहीं। जब तूने यह नोक चलाई॥
दोनों बोल सुने उरगाने। घोड़ा छोड़ तुरत अलगाने॥
सर्प कसा घोड़े तंग माहीं। देखा जब दिल दहसत खाई॥
घोड़े कसा सर्प जोइ बोला। अब कहुं डरे जाय मत डोला॥
खोल निकाल तंग से न्यारा। तोको नहिं मैं डसनेहारा॥
तंग खोल करि बाहर काढ़ा। मोको लगे बदन में जाड़ा॥
जब चमार ने यहि गति कीन्हा। तैं तंग माहिं जबरकस दीन्हा॥
अब मेरे हैं प्रान चलइया। तोको मैं इक भेद कहइया॥
बाँबी माहिं माल है भाई। ताता तेल देव छिड़काई॥
इतनी कहि उन प्रान गँवाया। उरगाना अपने घर आया॥
ताता तेल तुरत करवाया। उरगाना बाँबी पर आया॥
बाँबी माहिं सर्प ने जाना। ताता तेल छिड़क ले आना॥

सर्प कहे सुनु रे उरगाना। लेन माल मारन को ठाना॥
उलटि तोहिं मैं डस कै खाई। तौ यह माल कहाँ ले जाई॥
यासे एक बिचार बताई। तू भी रहे माल तैं पाई॥
नित इक दूध कटोरा लावो। एक मोहर मोसे ले जावो॥
तब उरगाने किरिया खाई। तुम हम बीच दगा नहिं भाई॥
तब चलि के वह आवन लागे। सत सत बचन कहूं तोरे आगे॥
तू मैं तीसर जाने नाहीं। तीसर में सब बात नसाई॥
वचन करार हुआ दोउ केरा। जब चलि आये अपने डेरा॥

॥ दोहा ॥

जो करार भयो सर्प से, उरगाने मिलि दोय।
तीसर कोइ जाने नहीं, बचन पालिये सोय॥

॥ चौपाई ॥

किरिया कसम भई सब भाँते। दीन इमान बचन की बातैं॥
हम तुम माहिं बीच भगवानै। अब दूसर कोइ बात न जानै॥
यौं कहि कर घर अपने आया। दूध कटोरा भर करि लाया॥
बाँबी केर पास धर दीना। निकरा सर्प दूध सोइ पीना॥
मोहर सरप लेकर इक डारी। ली उरगाने हाथ पसारी॥
मोहर लई घर अपने जाई। सो दइ तिरिया हाथ के माहीं॥
ऐसे कइ दिन बीति सिराने। एक दिवस पुत्र ने पहिचाने॥
तिरिया पुत्र कहे समझावो। कहो यह मोहर कहाँ से लावो॥

॥ दोहा ॥

नित की मोहर मिले कहाँ, कहो कौन से ठाँव।
सो ठिकान मोसे कहो, पिता पुत्र परभाव॥

॥ चौपाई ॥

ठाँव ठिकान मे हिं बतलाओ। नहिं फरियाद राज पर जावौं॥
यहि विधि बाल पुत्र ने कीन्हा। उरगाने मुख अँगुरी दीन्हा॥
यह तो बात कहन में नाहीं। ताक कहूं तो वचन नसाई॥
वह मूरख नहिं माने बैना। यह वरतंत कहो सुख चैना॥
मोहर कहाँ से नित उठि लावो। सो मोरे को ठौर बतावो॥
यहि चर्चा में रात बिलानी। फजिर पुत्र सँग हुआ निदानी॥
दोनों मिलि बाँबी पर आये। सर्प देखि दिल में दुख पाये॥
सुनु उरगान बात तैं फोड़ी। दूसर दगा करी लैं चोरी॥

॥ दोहा ॥

सर्प कहे उरगान से, बचन विरोधी कीन्ह।
लड़काई बुधि पुत्र की, मारे कोउ दिन चीन्ह॥

॥ चौपाई ॥

तब उरगान बोलिया भाई। मैं मोरे पुत्र भेद कछु नाहीं॥
तुम संका मन में मत लावो। यहि अपना तुम दास बनावो॥
तुम हम बचन करौं प्रतिपाला। कछु मन में नहिं लाओ दयाला॥
तुम्हरी टहल करन नित आवे। दूध कटोरा नित प्रति लावे
सरप वचन बोला यौं भाई। यह तो तुम में भी लरिकाई॥
इन बालन में दगा विचारे। एक दिन ... लोभ जिव मारे
यह तो हाल हरकुन कीन्हा। दूसर काम भेद में दीन्हा॥
जब उरगान वचन यों बोला। जानो तुम मोरा बचन अडोला॥

॥ सोरठा ॥

डोलै बचन हमार, जुगन जुगन नरके परूँ ।
यौं अस मनहि बिचारि, जनम बिगारूँ आपनो ॥

॥ चौपाई ॥

अस उरगाने बचन उचारा । तोरे मोर बीच करतारा॥
यहि सुनि मोसे दगा न होई । सत सत बचन कहूं मैं तोही॥
अस कहि कर घर डगर सिधारा । सरप समझि मन माहिं बिचारा ॥
लड़का फजिर दूध ले आया । उरगाने ने आप पठाया॥
बाँबी पास कटोरा लाया । धरि कर दूध तुरत अलगाया॥
डरता सरप बाँबि से आया । दूध पियत मन संका लाया॥
चौंकत दूध पिया उन भाई । दुबिधा मन के माहिं समाई॥
लई मोहर घर लड़का आया । मारग माहिं मता उपजाया॥

॥ दोहा ॥

रोज दिवस यह को करे, नित को आवे जाय ।
सरप मारि मरदन करूँ, माया लेउँ छुड़ाय ॥

॥ चौपाई ॥

नित नित कौन फिरे यहि काजा । सरप मारने मति उपराजा ॥
यौं बिपरीति बुद्धि उपजाई । लड़का सरप मारने चाही॥
लड़का यहि अपने मन ठाना । दूसर कोइ सुने नहिं काना॥

उरगाने को मालुम नाहीं । लड़का यहि मन में उपजाई॥
गुनता रहा रात भर सारी । सरप मारने बात बिचारी॥
दूध फजिर को ले कर चाला । लठिया से मारूँ दरहाला ॥
सोंटा लिया हाथ के माहीं । दूध धरा बाँबी पर आई॥
सोंटा सरप हाथ में देखा । चितवन चित्त चरित्तर लेखा॥

॥ दोहा ॥

सरप समझ मन आपने, बिपरीत* बुद्धि बिचार ।
आज उपद्रव होय कछु, यह मन माहिं सिहार ॥

॥ चौपाई ॥

यह अस समझि बाँबि से निकरा । सोच करी मन उपजा फिकरा ॥
दीन इमान भया पितु केरा । पहिले डसूं धरम नहिं मेरा॥
सोंटा पहिल चलावे आई । ता पीछे काटूं धरि खाई॥
यहि बिचार करि बाहर आया । सोंटा लड़के तुरत चलाया॥
सोंटा लगा मूड़ के माहीं । सरप झपट लड़के को खाई॥
जहर घुमरि घन्नाटो आई । लड़का पड़ा भूमि के माहीं॥
गया फजिर से साम कहानी । जब माता मन में अकुलानी॥
उरगाने से कहा बिचारा । लड़का गया भई बड़ि बारा॥

॥ दोहा ॥

यह उरगाना समझि के, तुरत चला वोही बार ।
देख ठिकाने सरप के, सोंटा हाथ मँझार ॥

---

*उलटी ।

॥ चौपाई ॥

भीतर बाँधि सरप अस भाखा। हे उरगान बचन भल राखा॥
मैं तो से पहिले कह दीना। लड़के का मोहिं नाहिं यकीना॥
तैं विस्वास किया मन मेरा। दगाबाज मन माहिं कठोरा॥
साँटा तोर पुत्र मोहिं मारा। सिर में चली रुधिर की धारा॥
जब मैं झपट पकड़ के खाया। तोर मोर यह वचन नसाया॥
उरगाना रोवत घर आया। तिरिया को बरतंत सुनाया॥
तिरिया बिकल पुत्र सुन सोगा। बिछुड़े पुत्र पुर्बले भोगा॥
ब्याकुल रुदन करे कइ भाँता। पुत्र मरे सुन करि यहि बाता॥

॥ दोहा ॥

पुत्र सोग सुन कर त्रिया, ब्याकुल भई मलीन।
रुदन करै लट तोरि के, पुत्र सोग दइ* दीन॥

॥ चौपाई ॥

उरगाने से भई लड़ाई। तिरिया पुरुष माहिं अधिकाई॥
लड़का मार मोर तैं डारा। मैं राजा से करूं पुकारा॥
त्रिय सिर खोल गई फरियादी। नीच त्रिया बुधि करी उपाधी॥
करि बिषाद† राजा पर पहुंची। कहा ब्रतंत धान नाहिं सोची
मेरा पुत्र पुरुष ने मारा। यह इन्साफ होय दरबारा॥
सुन राजा उरगान बुलाया। तुरत बाँधि कर पकरि मँगाया॥

---

* ईश्वर। † शोक।

तोरी त्रिया कहा कहे भाई। पुत्र पुरुप मोरा मारि सुनाई॥
जब उरगाने बचन सुनैया। न्याय नीति दरियाफ करैया॥

॥ दोहा ॥

गुनहगार दरबार का, तव* तकसीरीवार।
माफ न कीजे गुनह की, तुरतै गरदन मार॥

॥ चौपाई ॥

हे राजन के श्री महराजा। गरदन गुनह मारिये आजा॥
जो तकसीर अंग मोरे लागा। चाहे सो कीजे यहि जागा॥
साँचहि साँच कहूं जस बीती। मानो बचन मोर परतीती॥
जो कछु भया बिधी बरतंता। कहूं प्रसंग आदि से अंता॥
कान सभा सब मिलि सुनि लीजे। मोरे बचन बाक चित
दीजे॥
सुनु यह कहूं आदि बिख्याता। साँची झूंठि परखिये बाता॥
मैं परदेस गयो महराजा। यह रुजगार पेट के काजा॥
कई दिवस में घर को आया। मारग भई कहूं अथाया॥

॥ दोहा ॥

एक सहर मारग महीं, रहिया मोर मुकाम।
तसमा घोड़े को नहीं, टूटि कसन में चाम॥

॥ चौपाई ॥

आधी रात फरक जब पाई। तब तसमे की सूरति आई॥
तुरत चमार पास मैं गैया। सोवत वाको जाय जगैया॥

* तुम्हारे।

तसमा एक चाहिये भाई । जो कछु कहो दाम दिलवाई॥
आधो रात बने नहिं भाई। तुरत तयार मोर घर नाहीं॥
चाहै सोई दाम मैं देऊँ। तसमा तो तेरे से लेऊँ ॥
तब चमार कहे दिया न बाती। तुम चलि के आये अधिराती॥
अब तो तसमा बने न भाई । फजिर कहो तो देउँ बनाई॥
तब उरगाना समझ सुनावे । सदिये* घड़ी राति से जावे॥
कहे चमार तुम जावो भाई । हाल करूं चलते ले जाई॥

॥ दोहा ॥

उरगाना उठि कर चला, आया जहँ बिसराम ।
चमड़ा लिया चमार ने, काटा तसमा चाम ॥

॥ चौपाई ॥

गोल घरी तसमे की कीन्हा। सो तगार के महिं धर दीन्हा॥
पानी भरा तगारी माहीं । तसमा तामें डारयो जाई॥
सीत काल महिना मलमासा । पूस परे ठंढ होत हिरासा†॥
सरप कहूं चलि आया भाई । बैठा जाय तगारी माहीं॥
चाम कुंडलिया धरी तगारी । सरप कुंडलिया बैठे मारी॥
फजिर भये मैं जाय जगाया । तसमा दे अस बचन सुनाया॥
जल्दी से चमरा उठि आया । चाम चूकि के सर्प उठाया॥
चाम कुंडलिया सरप बनाई । दोनों एक तरह के भाई॥
सरप कुंडिलया लीन उठाई । मुंगरी से मुंह दोचा जाई॥

---

*तड़के । †डर ।

॥ दोहा ॥

रापी से मुँह चीरि के, चपटा दोच बनाय ।
कर दुरुस्त मोको दियो, तँग में खैंचा जाय ॥

॥ चौपाई ॥

होय सवार मारग को जाई । ठहरे पाँच कोस पर गाई॥
जहँ इक सरप बाँबि पर बैठा । देखा सरप तंग में ऐँठा॥
जब उसने इक तरक चलाई । करिया नाम धराया भाई॥
जब मोको मालुम अस बोला । देखा तंग सरप को खोला॥
जब यह सरप कही सुनु भाई । मेरे प्रान पलक में जाई॥
यहि बाँबी में सरप रहाई । यामें माल बहुत है भाई॥
गरम कढ़ाय तेल करि डारे । काढ़े माल सरप को मारे॥
अस कहि प्रान तुरत तन त्यागा । मोरा लोभ माहिं मन लागा ॥
तेल कढ़ाय गरम करि लाया । बाँबी पर लेकर चलि आया॥

॥ सोरठा ॥

सरप कहे सुनु बात, माल मरे ले जाय तैं ।
मैं डसि खाऊँ तोहि, बहुरि माल को पावई ॥

॥ चौपाई ॥

सरप अवाज कही सुनु भाई । मोको मारि माल ले जाई॥
मैं तोहिं पकरि तोरि के खाऊँ । तो रहे माल कौन से ठाऊँ॥
मैं इक बचन कहूं उरगाने । जो मोरी बात कहन को माने॥
दूध कटोरा नित ले आवो । एक मोहर नित को ले जावो॥

सरप कही उरगाने मानो । दूसर कान कोऊ नहिं जानी॥
यह अस बचन भया दोउ माहीं । किरिया कसम दोऊ
मिलि खाई ॥
दूध पियाय मोहर ले आऊँ । भया अस यौं बरतंत सुनाऊँ॥
ऐसे कइ दिन बीति सिराना । तिरिया पुत्र बात यह जाना॥

॥ दोहा ॥

तिरिया यौं पूछन लगी, मोहर कहाँ से लाय ।
जहाँ दूध लै जात हो, देव मोहिं ठौर बताय ॥

॥ चौपाई ॥

भया एक दिन श्री महराजा । लरिका दूध सरप के काजा॥
लेकर गया हाथ में दूधा । मैं नहिं जानूँ मन का सूधा॥
सौंटा लिया काँख के माहीं । सर्प पियत में चोट चलाई॥
झपटा सरप पुत्र को खाया । राजा को यह बरन सुनाया॥
राजा हुकम दीन तत्काला । लावो बाँधि खोद करि माला॥
उरगाने ने ठाँव बताये । खोदन माल राज से आये॥
माल मँगाय राज ने लीन्हा । तुरत बिदा उरगाना कीन्हा॥
तिरिया केर मूड़ मुड़वाया । साँच बचन उरगाना पाया॥
सुन घन बाघ बचनअस कीजे । साँचे पर साहब बहु रीझे॥

॥ दोहा ॥

बंदर कहे सुनु बाघ यह, उरगाने की साँच ।
सत्त बचन आधीनता, कधी न आवे आँच ॥

॥ चौपाई ॥

बंदर कहे दगा यह कीन्हा। सुनु बन बाघ भेष तैं लीन्हा॥
साध भये पर कपट न छूटा। झूंठे जबर जाल जम लूटा॥
मिथ्या बचन करे अधिकाई। निस्चै जीव नरक मैं जाई॥
जो परपंची दगा बिचारे। बिना मौत परमेसुर मारे॥
उठि कर गवन करो तुम भाई। अब मैं तुमको नहिं पतियाई॥
साँच भया राजा पै जाई। सरप से बचन झूंठ भया भाई॥
कइ कइ कसम सरप से खाई। तीसर कान पड़े नहिं भाई॥
पुत्र त्रिया को तुरत सुनाई। झूंठा भया बचन के माहीं॥

॥ दोहा ॥

जिन के बोले बंध नहिं, स्वारथ बचन रसाल।
डारि गले बिच मेखला, खैंचे जम धरि खाल॥

॥ चौपाई ॥

अस तैं झूंठा भेष बनाया। साध बचन को दाग लगाया॥
साँचे बचन बंध जोइ प्रानी। प्रान जाय बोले परमानी॥
झूंठे बचन कधी नहिं भाखे। भीतर सुद्ध मन मैल न राखे॥
तन मन बचन बोल के साँचे। उनके बाक कहे नहिं काँचे॥
दुरमति दगा दाँव जिन कीन्हा। अपने भोग आप सिर लीन्हा॥
जो परलोक बिगारा चावे। सो मलीन मन बुद्धि बसावे॥
जो मतिहीन दीन नहिं जोवे। अपना जन्म अकारथ खोवे॥
जन्म मरन का करे निबेरा। सो जीवन कोइ बिरले हेरा॥

॥ दोहा ॥

जग में जीवन तुच्छ है, कछु करि ले निरधार* ।
पार उतरना चहे जो, केवट समझि सुधार ॥

( हिरदे बाच )

॥ चौपाई ॥

हे स्वामी यह कही कहानी। कौन परोजन बरनि बखानी॥
को उरगाना सरप कहावा । को बंदर बन बाघ सुनावा॥
को घोड़ा को तसमा होई । टूटा तंग माहिं कहो सोई॥
कहो को सरप पुत्र ने मारा। उलटि सरप ने पुत्र बिडारा॥
को गइ त्रिया राज फरियादी। बैठे कौन राज की गादी॥
कस इन्साफ कीन्ह निरबारा । सो स्वामी कहो बरनि बिचारा ॥
जो सम्बाद कहा परसंगा । बिना अर्थ व्यापे नहिं अंगा॥
सो बरतंत बरनि बतलाओ। हिरदे को भिन भिन अर्थावो॥

॥ दोहा ॥

ये स्वामी परसंग का, कहिये बरन बयान ।
जान पड़े हित समझ ये, हिरदे परख पिछान ॥

( तुलसीदास बाच )

॥ चौपाई ॥

तुलसी कहे वचन बिस्वासा।यह तन अंदर माहिं तमासा॥
बिन अस्थूल कहन में नाहीं । मूल मरम की भूल बताई॥

---

* निर्णय ।

बरनन रूप बिना कहुं कैसे। समझि न पड़े रूप बिन जैसे॥
जो कोइ सज्जन सुरति बिलासी। भीतर भूमि लखे तन बासी॥
वे सुनि के करिहैं निर्बारा। निर्मल ज्ञान उदै अनुसारा॥
जो मलीन मति बुधि के मैले। जिन बिन बूझे बचन उथेले*॥
हिरदे कुटिल कुमति की झाँई। पड़ी नहीं सतसँग परछाँई॥
सतसँग सुना न देखा आँखी। लखी नहीं सतगुरु मुख भाखी॥

॥ दोहा ॥

अंदर की आँखी नहीं, बाहर की गइ फूटि।
बिन सतगुरु औघट बहे, कभी न बंधन छूटि॥

## (उरगाने की कथा का आशय)

॥ चौपाई ॥

अब सुनु याका भेद बताऊँ। जो परसंग पूछि अर्थाऊँ॥
उरगाना उर अंतर बासी। जा का नाम कहें अबिनासी॥
तत्त तुरी घोड़े असवारी। जा पर बैठि फिरे जुग चारी॥
तसमा तो सम रूप कहाना। टूटि नेह निज नाम भुलाना॥
चाह चमार ने फेरि बनाया। तसमा तन तँग तुरत कसाया॥
मँजिल मुसाफिर चल करि गयऊ। सुभ और असुभ माहिं दरसयऊ॥

---

* उलट दिया।

चाह मारि सोइ चोख चमारा। काल सरप मुख तसम सँवारा
तिन तसमे का बरनि सुनाया। तिन का तिन में जाय समाया॥

॥ दोहा ॥

चाह जो मारि चमार है, तसमा तन तजि आस।
पवन सुरति आधी चढ़ी, तिन का तिन के पास॥

॥ चौपाई ॥

भूमि भुवंग माल मन धारी। माया पर बैठा अधिकारी॥
मुख उर अंदर बास कराया। सो उरगाना पुत्र कहाया॥
लख गो* गुन तजि गगन उजारा। उन भुवंग सिर सौंटा मारा॥
गगन चढ़त मुख मरम न पाया। काल सरप जबही धरि खाया॥
इच्छा नारि त्रिया गुन साधी। मन राजा पै गइ फिरियादी॥
उर में जाय राय नहिं रोका। मात पुत्र मन भया बिसोका॥
निज इन्साफ राय ने कीन्हा। बासन पाँच माहिं धर दीन्हा
बरतन भूमि माल जनवाया। सो राजा ने खोदि मँगाया॥

॥ दोहा ॥

धन खुदवाया राज ने, लीन्हा माल निकार।
बंदर बाघ बयान का, सुन करि करो बिचार॥
ज्ञान बाघ मुख में लिया, बंदर बिपति बिनास।
उरगाने प्रसंग का, भाखा अगम अवास॥

---

* इंद्री।

मन बंदर मानी नहीं, ज्ञान बाघ बिस्वास ।
मुख मेलत मुक्ती हती, मूल मुकर के पास ॥
बाघ कहे बंदर सुनो, उरगाने की ऐन ।
तू का जाने भेद यह, कहि भाखे मुख बैन ॥

॥ सोरठा ॥

उरगाना उर बास, नास कभी होवे नहीं ।
जुग जुग रहत निरास, अंग आस ब्यापे नहीं ॥

॥ छंद ॥

हिरदे गगन गुरु ज्ञान गति, उरगान की कोइ का कहे ।
आगे अगम धुर धाम पुर, बिसराम जुग जुग ते भये ॥
अंदर उदै भये भानु भिन्न, पिछान पद पूरन गहे ।
घट मठ मुकर में बास बस अस, आनि ऐनक में रहे ॥
सुंदर सिखर चढ़ि चीन्ह दृढ़, दुरबीन दुख सूरति सहे ।
नित परन पालि दयाल दिल, जम जाल बुधि बंधन बहे ॥
आँखी अजर घर घूमि सोइ, भल भूमि भुँइ मारग गये ।
तुलसी तरावट नैन नित हित, हेरि हिरदे को कहे ॥

॥ दोहा ॥

उरगाने का उग्र मत, सत सूरति को पंथ ।
बाघ कहे बंदर सुनो, नाहिं कोइ पावे अंत ॥
तुलसी हिरदे को कहे, उरगाने गति गाय ।
जाय जुगति जाने जोई, सोई अगम लखाय ॥

॥ चौपाई ॥

मन का तत्त तरंग न पाया । अंदर की गति बरनि सुनाया॥
उर में बास बसे उरगाना । बाघ ज्ञान गहे बचन बिधाना
जिन जो ज्ञान गती पहिचानी । दीन भये पर भक्ति समानी ॥
दिल में दीन गरीबी चावे । आप अपनपौ को बिसरावे॥
अंकुर उदै होय बड़ भागी । जिनकी प्रीति पुर्बली जागी॥
सो सज्जन रस पिये अघाई । सतसँग की महिमा जिन पाई॥
जो पूरन सतगुरु पहिचाना । वह महिमा उनहीं ने जाना॥
उर मारग अंदर में बासो । उर में गवन करे अबिनासी॥

॥ दोहा ॥

सुरति सिखर अंदर खड़ी, चढ़ी जो दीपक बार ।
आतम रूप अकास का, देखे बिमल बिहार ॥

॥ चौपाई ॥

सुनु हिरदे उरगाना सोई । यहि बिधि पंथ चले जो कोई॥
हर हिये हेर फेर कर आवे । सोइ उरगाना उग्र कहावे॥
बिमल बचन बातैं रस यानी† । मीठी मधुर पूर परमानी॥
भानु उदै हिये ज्ञान समाना । तन से तिमिर दूर अलगाना॥
रैन रबी ऊगे निसि नासी । उदै भानु जस तिमिर बिनासी॥
यौं अंदर घट मैं उँजियारा । परम प्रकासक दीपक बारा॥
आतम तेज तत्त से न्यारा । सो बूझे सतगुरु का प्यारा॥
हे हिरदे यहि उनकी बाती । जो होइ उरगाने का साथी ॥

---

* बिधि । † यानि=बाहन, यहाँ मतलब "भरीहुई" से है ।

॥ दोहा ॥

कहे तुलसी हिरदे सुनो, गुनो जो मन के माहिं ।
उरगाने की आदि यह, दीन्ही तोहि जनाय ॥

॥ चौपाई ॥

सुनु हिरदे यहि बरनि सुनाई । उरगाने की निज गति गाई॥
यहि मेँ समझ लेव सब लेखा । यहि अपने मन करो बिबेका॥
जब हिरदे बोले कर जोरी । स्वामी बचन बोध मति मोरी॥
भिन भिन बचन कहे अर्थाई । जब मोरि बूझ समझ में आई॥
अब वह बरनि बाक समझावो । पूछौँ जौन तौन दरसावो॥
स्वामी से पूछौँ इक बानी । सो बरतंत कहो सहदानी॥
अबिनासी पद कौन कहाई । उनकी आदि कहाँ से आई॥
तुम अबिनासी बर्नन कीन्हा । सो मोहिं भाखि सुनावो चीन्हा ॥
केहि घर से अबिनासी आया । बासी बरन मूल कहा गाया
इनकी आदि कहाँ से आई । सो मोहिं कहिये ठौर सुनाई॥
कौन ठिकाने तन में बासा । सो कहिये यह भेद खुलासा॥
आगे अंत कहाँ से आया । अबिनासी कस नाम कहाया॥
कहँ को आदि अंत घर बासी । जासे भानु किरन अबिनासी ॥

# अबिनाशी का निरूपन

( तुलसीदास बाच )

॥ दोहा ॥

सूरज ब्रह्म अकास मेँ, भास भूमि परकास ।
किरन जीव यहि आत्मा, सब घट कीन्हो बास ॥

॥ सोरठा ॥

पिंड पिंड ब्रह्मंड मैं, अबिनासी रहे छाय ।
सभी सनातन यौं कहे, आगे अगम अथाह ॥

( हिरदे बाच )

॥ चौपाई ॥

हे स्वामी मोरे मन माहीं । आगे भाखि कहो समझाई॥
आगे का मोहिं भेद बतावो । स्वामी आदि समझ
समझावो ॥
आगे कहो कहाँ है मूला । सो मोसे कहो आदि अतूला॥

( तुलसीदास बाच )

सुनु हिरदे यह बरनि बयाना । मन चित से सुनिये दे काना॥
धुंधूकार सब्द सुन माहीं । पारब्रह्म परमातम भाई॥
धुन उनकी से आतम आया । सो अबिनासी नाम कहाया

( हिरदे बाच )

धुंधू सब्द कहा सुन माहीं । अबिनासी आतम गति गाई॥
यह तो समझि परी सहदानी । साहब के कहने से जानी॥
धुंधू सब्द सुन्न के पारा । उनके परे कौन घर न्यारा ॥

॥ दोहा ॥

पार कहो घर कैान है, सब्द ब्रह्म से भिन्न ।
सो मोसे बरनन कहो, आदि अंत को चिन्ह ॥

॥ चौपाई ॥

धुंधू सब्द सुन्न के आगे । कहो उनको स्वामी केहि जागे॥
तब तुलसी बोले सुनु भाई । आगे भाखूँ बरनि सुनाई॥

चौथे पद सत साहब बासा । उनके अंस ब्रह्म परकासा॥
सब्द ब्रह्म परमातम गाया । सो वहि सत्त पुरुष से आया॥
वहि मालिक सतपुरुष कहाई । तिन से आदि ब्रह्म की आई॥
सत्तपुरुष के पार ठिकाना । वहँ से है अद्भुत अस्थाना॥
जिनको कोई संत पहिचाना । अगम निगम से अंत ठिकाना
ऋषी मुनी कोइ भेद न पाया । कहि कहि बेद नेत गुहराया॥

॥ दोहा ॥

दस अवतारी ब्रह्म से, ब्रह्म पार के पार ।
सो का जाने भेद यह, संत कहे निर्बार ॥

॥ चौपाई ॥

जब हिरदे इक बिस्मै बोले । हे स्वामी यह बात अतोले॥
हद बेहद के पार कहाई । यह नहिं कधी सुनन मैं आई॥
आप दया करि भाखैं स्वामी । यह कहुं भेद न अंतरजामी॥
एक भरम मोरे मन माहीं । जाको बोध कहो समझाई॥
सब मैं सासतर बरनन बासी । पिंड ब्रह्मंड बसे अबिनासी
परम हंस बेदांत सुनावा । कहे यहि नास कधी नहिं पावा॥
मीमांसा यह कर्म बस गावा । यह सुनि के मोहिं
भरम समावा॥
उन अबिनासी बरनन कीन्हा । यह तो कहे करम बस लीन्हा
इनका भेद कहो समझाई । यह दौनों दो बात बताई॥

॥ दोहा ॥

बेदांती कहे ब्रह्म यह, करम मीमांसा बाक ।
यामैं कहो काकी कहौं, झूठ साँच की साख ॥

॥ चौपाई ॥

यहि संदेह मोर मन माहीं। सो सब मो को बरनि सुनाई॥
जो बेदांत कहे अबिनासी। करम माहिं की* भिन्न निवासी॥
तब तुलसी ने बचन सुनावा। सुनु हिरदे याका परभावा॥
काया काल करम के माहीं। उपजे मरे धरे तन भाई॥
करम भोग से काया पाया। बिना करम नहिं काया आया॥
पाँच तत्त जड़ चेतन गाँठा। रचि बैराट करम से ठाठा॥
यहि रचना ऐसे चलि आई। बिना करम नहिं उत्पति भाई
जो यहि नासमान होइ जावे। तौ कहो करम भोग को पावे॥

॥ दोहा ॥

अबिनासी आतम कह्यो, रह्यो करम के बंद।
उलटि न चीन्हा आदि को, बिन सतगुरु की संध॥

॥ चौपाई ॥

सासृतर कहे बेद जो गावा। फिर आगे को नेत सुनावा॥
जिन की साखि सासृतर गावा। बिन जाने की साखि सुनावा
जब बैराट में आतम आया। जेहिके पाछे बेद बनाया॥
सिंधु बुंद काया में बासी। याको बेद कहे अबिनासी॥
आगे सिंधु भेद नहिं पाया। जासु बुंद बैराटी काया॥
बुंद पाँच तत माहिं समाना। याको बेद बिराट बखाना॥
आगे बेद भेद नहिं पाया। सासतर में कहो कहँ से आया॥
आतम अंस करम के माहीं। सासतर से रचना भइ भाई॥

* या।

जब जिव भया करम के संगा। दस इंद्री गुन तीन प्रसंगा॥
पाँच भूत का सूत बँधाना। जड़ चेतन आतम उरझाना॥
जह हिरदे यौं बंधन आया। जुग जुग फिरे करम बस काया॥

॥ दोहा ॥

रस इंद्री गुन स्वाद से, बंधन भया अजान।
जान भुलानो आदि को, बादै जनम हिरान* ॥

( हिरदे बाच )

॥ चौपाई ॥

जब हिरदे बोले हे स्वामी। मन अचरज भया अंतरजामी॥
जीव मूल तुम अंत बताया। कस घर भूलि भँवर मैं आया॥
सो मोको भाखो बरतंता। कस सब कही सनातन संता॥

## जीव का मूल को भूल जाना और भोगों में आशक्त होना

( तुलसीदास बाच )

तब तुलसी कहे सुनो प्रसंगा। पाँच तीन मैं रचि रह्यो अंगा॥
बिषै बासना में मन राचा। जक्त भोग से कोइ नहिं बाचा॥
रस बस रीति जीति नहिं जानी। ज्यौं माखी मद में लिपटानी॥
यौं जिव रस माहीं मदमाता। इंद्री सँग रस भोग सनाथा॥

॥ दोहा ॥

दस इंद्री रस भोग से, भूले मूल मुकाम।
सदा रहे भव चक्र में, उलटि न बूझे धाम॥

---

*खोया।

॥ चौपाई ॥

मूल भूलि यौं फाँस फँसानी। रँग रस भोग जनम जिव जानी
अब याका दृष्टांत सुनाऊँ। नकल बनाय असल दरसाऊँ॥
ज्यौं माखी मद रस मैं राजी। यौं रस पगा जीव यह पाजी॥
यहि यौं भवसागर का लेखा। सहद कटोरा भरि करि देखा॥
यौं माखी उड़ि उड़ि के आवे। सहद कटोरे ऊपर छावे॥
कोइ कोइ बैठि किनारे भाई। सब को देखि तमासा जाई
रस पर पंख कभी नहिं लिपटे। कोइ पर पंख बचाये झपटे॥
कोइ मतिहीन गिरे जो माहीं। जिनके पाँव पंख लिपटाई॥

॥ दोहा ॥

एक फकीर अलमस्त जो, देखत ही मुसकान।
यौं जहान रस भोग में, पगे प्रेम रस खान॥

॥ चौपाई ॥

जब फकीर को हँस्ते देखा। हलवाई मन कीन्ह बिवेका॥
कहो मियाँ तू क्यौं मुसकाना। हँस कर खड़े मर्म नहिं जाना॥
जब फकीर बोला सुनु भाई। अचरज देखि हँसी उठि आई॥
जैसे सहद कटोरा माहीं। सब माखी उड़ि बैठी आई॥
यहि लेखा खिलक़त* का जाना। बिष रस सहद माहिं उरझाना॥
जो फाजिल साहब के प्यारे। सो तो देखैं बैठ किनारे॥

* संसार।

कोइ सोहबत अक़्ले[x] उन माहीं। पंख पैर बाँचि खायँ मिठाई ॥
बेसहूर अकल के ओछे। बिष रस मोह ज्ञान के पोचे†॥
धाय पड़े सो माहिं मिठाई। बुधि सुधि बिना पंख लिपटाई ॥
कछू स्वाद मुख में नहिं आया। वे नाहक नर देँहि गँवाया॥
ज्यौं माखी रस में उरझानी। यौं मतिहीन जानिये प्रानी॥
मीठे को जो मन ललचावे। वह भव सिंधु में गोते खावे॥

॥ दोहा ॥

ज्यौं माखी पर पाँव से, सहद माहिं लिपटाय।
ऐसे ही जग जीव जड़, झाड़ि बिषै रस खाय ॥

॥ चौपाई ॥

जब हिरदे पूछे परभावा। सब कहैं बेद सनातन आवा॥
सब्द नाद से बेद बतावैं। सब मिलि यौं करि करि गुहरावैं॥
सुन्न सब्द तुमने भी भाखी। बेद सब्द की देवे साखी॥
यामें कौन फरक है स्वामी। भाखे सब्द बेद सहदानी॥
यह निरनै मो को समझावो। जो तुम कही बेद ने गावो॥

## शब्द भेद

( तुलसीदास बाच )

सुनु हिरदे यह भेद निनारा। सो का जाने बेद बिचारा॥

---

x बुद्धिमान। † खाली।

सब्द सब्द में अंतर भाई । जो हम कही बेद नहिं पाई॥
ओं सब्द बेद बतलावे । त्रिकुटी मद्ध माहिं से आवे॥

॥ दोहा ॥

गढ़ त्रिकुटी के मद्ध में, सब्द उठे ओंकार ।
यह पुकारि बेदन कही, सुनु हिरदे निरधार ॥

॥ चौपाई ॥

ओंकार के पार ठिकाना । जहँ है सुन्न सब्द अस्थाना॥
सो कहँ संत सब्द सुखदाई । सो महिमा बेदन नहिं पाई॥
ओंकार को नेत पुकारा । यह सुन सब्द बेद से न्यारा॥
अंडा सुन्न में सैल कराई । सो वो सब्द परखिया भाई॥
ओअं सोहं जाप सुनावा । सो सब ये माया परभावा॥
वह तो सब्द सुन्न के माहीं । उलटे चढ़े अधर घर माहीं॥
सो बूझै यह बाक बयाना । सतसँग से कोइ सज्जन जाना॥
सब्द सब्द में भेद निनारा । यह परखे संतन का प्यारा॥

॥ दोहा ॥

सुन्न सब्द वह अंत है, देखे सैल सिहार ।
ओंकार त्रिकुटी बसे, सो कहे बेद पुकार ॥

॥ सोरठा ॥

निराकार से बेद, आदि भेद जानै नहीं ।
पंडत करै उछेद*, मते बेद के जग चलै ॥

*तर्क, बिबाद ।

॥ छंद ॥

निराकार बेद पुकारि कहे, औंकार से उतपति भयो ।
त्रिकुटि मधि इक सब्द उठि, अस बेद ने बायक* कह्यो॥
सुन्न को सबद बेहद्द में, इन भेद से न्यारो रह्यो ।
सोई सनातन संत सब, लखि देखि सुख सुंदर गह्यो ॥
निराकार ब्याल† बिकार बायक, बेद मनमुख दुख दयो ।
सब सृष्टि सासतर साखि राखे, जक्त यौं बादै बह्यो ॥
सुभ असुभ अंक बढ़ाय बायक, करम बस जिव बँधि रह्यो ।
सुधि बुधि बिसारी आदि अपनी, मूल तजि मारग लह्यो॥
बिधि बेद ने रचि बिस्व बंधन, बाक सुनि गुन गठि रह्यो।
अंदर हिये के तिमिर ज्यौं, यौं धुंध आँखिन पै छयो॥
जैसे कटोरा सहद पर, झुकि झुंड माखिन को भयो ।
पर पाँव लपटि बिनासि काया, जीव माया बस थयो॥
हिरदे सुनो जग जीव अस, यौं बस बिषै में रचि रह्यो ।

॥ सोरठा ॥

मद माखी दृष्टांत, सुने समझि कोइ भेद यह ।
गहे गुरन के बाक, साखि समझ हिरदे धरे ॥

( हिरदे बाच )

॥ चौपाई ॥

सब्द सब्द अंतर अरथाया । न्यारा न्यारा भेद सुनाया॥
निराकार सब्द औंकारा । औं सब्द बेद बिस्तारा ॥

*कथन । †साँप ।

सुन्न में सब्द अगम से आवे। आदि पुरुष का सब्द कहावे॥
यह सब समझ पड़ी सहदानी। साहब बरनन भाखि बखानी
मुख भाखे पद परखि पिछानी। सब्द सब्द की न्यारी बानी॥
सुन में सब्द संत समझाई। सो कहो राह मँजिल अरथाई॥
ओअं को कस राह पिछानी। यह भी भेद कहो सब छानी॥
ये दोनोँ की बाट बतावो। सो घर घाट मोहिं समझावो॥

॥ दोहा ॥

कैान डगर ओंकार की, निराकार के बाक।
सुन्न सब्द सत पुरुष का, बरनि सुनाओ भाख॥

( तुलसीदास बाच )

॥ चैापाई ॥

निर्गुन सब्द बेद बतलावे। सोई काल ओंकार कहावे॥
तीन लोक रचना रचि राखा। सो जोगिन का पद अभिलाखा॥
त्रिकुटी सेज अकास समाना। सो निर्गुन का है अस्थाना॥
मुद्रा उनमुनि धरेँ समाधा। त्रिकुटी मद्ध पवन को साधा॥
इँगल पिँगल सुखमनि के माहीँ। बंकनाल में पवन समाई॥
त्रिकुटी तत्त जोति दरसानी। यह जोगिन का भेद बखानी॥
जहँ है निरंकार का बासा। मन ओअं कह्यो सब्द खुलासा॥
ये जोगिन के बाक बिलासा। काल निरंजन का जहँ बासा॥
ओंकार सब्द समुझाई। हिरदे सुनियो कान लगाई॥

॥ दोहा ॥

सुन्न सब्द संतन कहा, सो समझाऊँ भेद ।
खेद करम की सबन से, बसै बिन बाक अभेद ॥

॥ चौपाई ॥

सुनु हिरदे सत सब्द लखाऊँ । जोग भेद से भिन समझाऊँ॥
सुन्न माहिं से सब्द जो आवे। सोई सब्द सत पुरुष कहावे॥
चौथा पद बेहद के माहीं । सुन्न सब्द सोइ नाम कहाई॥
ओअं सब्द काल को जानो। सुन में सब्द पुरुष पहिचानो॥
सब्द सब्द का भेद निनारा । सो कहि भाखि बरनि निरआरा॥

## मंज़िलों का भेद

अब सुन मँजिल माल दरसाऊँ। संधि माहिं परबन्ध* लखाऊँ ॥
पदम सुरति तिरबिनी घाटा। जहँ होइ जाय संत की बाटा॥
आठ महल अंदर के माहीं । संत बिलास करें वोहि ठाँई॥

॥ दोहा ॥

सत्त लोक सतपुरुष का, करे सुरति से ध्यान ।
सात गगन ऊपर चढ़े, जहँ सतगुरु अस्थान ॥

॥ चौपाई ॥

सत्त पुरुष सोइ सतगुरु गाया। जीव अंस सब वहाँ से आया॥
तीन लोक निरगुन का घाटा। उन सब रोकि जीव की बाटा ॥

* सिलसिला ।

# जीव की निर्बलता—मतों की भूल भुलैयाँ

जीव भुलाय* खाय उरझाई । बेबस है चौरासी माहीं ॥
जो कोइ सतसँग को मन चावे । काल ब्याल† होइ ताहि सतावे ॥
कई उपाधि करे जिव साथा । मन की पकड़ न आवे हाथा॥
भरम भुलाय उठाय फँसावे । सतसँग यासे करन न पावे॥
मन बिकराल काल होय ताके । बेरस रहे रस में नहिं पाके॥
सतमत को निंदा करि भाखे । काल मते समझावे साखे॥

॥ दोहा ॥

कलजुग माहीं मति चले, नास्तिक होवे झार ।
सो सिहारे मन में रहो, बेदन कही पुकार ॥

॥ चौपाई ॥

ऐसे बरनि थाक समझावे । यहि बिधि जन्म जीव भरमावे
पोढ़ होय सतसंग में आवे । जाके संग उपाधि उठावे॥
पानी पाहन देव पुजावे । ऐसे ले जिव को भटकावे ॥
तीरथ बरत बँधावे आसा । काल कला जीवन को फाँसा॥
मुए मुक्ति फल दायक भाखा । अस गावे बेदन की साखा॥
आसा बंध होय फल दाई । जहँ आसा तहँ बास कराई॥
चेतन इष्ट दृष्टि से तोड़ी । तन मन प्रीति जड़न से जोड़ी॥
यों भवसागर भरा अथाही । अपने घर की राह न पाई॥

* भूल । † साँप ।

॥ सोरठा ॥

भर्म रहा संसार, सार भेद पाये बिना ।
सुभ औार असुभ कराय, काल चक्र भरमत रहे ॥

॥ चौपाई ॥

यह बेदन ने किया खराबा । आसा अंग लगाय अड़ावा॥
त्रिसना तोप अनीति बनाई । गोला लोभ चलायो भाई॥
माया मोह कायागढ़ धारी । बिषै बंदूक ताकि के मारी॥
बन्धन बान चले बहु भाँती । गुन गरनाल लगे दिन राती॥
गो* में बास गाँसि† मन राखे । तू मैं तोर मोर मन भाखे॥
तन मन जीव फिरे बन माहीं। भव भरमन‡ की चाल चलाई॥
मन मकरंद§ अंध यौं आया । सब मिलि के यौं बाँधि गिराया॥
जड़ चेतन की गाँठि बँधानी । बँधन बसे चौरासी खानी॥

॥ सोरठा ॥

काया गढ़ के माहिं, गो* गुन मन राजा भयो ।
रह्यो काल की छाँहिं, हाय हिरस बस बंधि रह्यो ॥

॥ चौपाई ॥

हिरस हरकत कीन्हा वासिल॥ । मन बिष सँग जिव किया बेहासिल॥
ऐसे जीव भया हड़काया¶ । ज्यौं कूकर हड़ हाड़ चबाया॥

---

*इंद्री । †घेर लेना । ‡संसार में भटकना । §भँवरा । ॥मेल । ¶दुर-दुराया हुआ ।

सूखा हाड़ चूसि दिन राते । अपने मुख लोहू निन खाते॥
ऐसा जक्त भया हड़काना* । भव रस में घर भूलि भुलाना॥
बिन सतसंग जक्त बौराना । लाभ हानि नहिं मूल पिछाना॥
मूल भूल करि सूल सिहारा । यौं ऐसे जिव बाजी हारा॥

## संत शरन और सतसंग की महिमा

संत दयाल चेत करवावैं । सो सत बाक हृदय नहिं लावे॥
दाता संत बड़े सुखदाई । परमारथ देइ दृष्टि लखाई॥
लैँइ न दैँइ करैँ उपगारा । सो चित में नहिं नेक बिचारा॥

॥ सोरठा ॥

यह संतन के बाक, आँखि हिये सूझै नहीं ।
कहि कहि हारे थाक, जीव कहन माने नहीं ॥

॥ चौपाई ॥

संत बिना कोइ भूल न छूटे । जासे पकरि पकरि जम लूटे॥
बिना संत नहिं लगे ठिकाना । सब महातमा साखि बखाना ॥
जुग चारो कहते अस आये । कहें सब संत यही बिधि गाये ॥
तीन जुगन में नहिं निस्तारा। कलजुग संत लैँइ अवतारा॥
तीनो जुग तप जोग बिचारे । राज भोग फल को अनुसारे॥
कलजुग जुक्त संत अर्थावैं। सुन हिरदे हिये माहिं बसावैं ॥
उनके बचन सुरति सहदानी । हिरदे में मन लावे प्रानी॥

*दुरदुराया हुआ ।

कहनि अवाज आज कोइ बूझै। नर तन में आँखी से॥
सूझै ॥
होइ निरधार पार पहिचाने। सतगुरु सत्त बचन करि माने॥

॥ दोहा ॥

संत बचन सतगुरु कहैं, गहे जो चित मन लाय।
सहाय करे सुधि अंत की, सभी संत गुहराय॥

॥ छंद ॥

हिरदे बिना सतसंग के, जिव जोनि में भटका फिरे।
बिन संत के नहिं अंत पावे, खानि में गुरु बिन गिरे॥
करनी करम फल फूल काया, ममन माया में घिरे।
कोइ ज्ञान बाक बिबेक कहे, अज्ञान से आगे भिड़े॥
गुरु ज्ञान बिन बैराग उपजे, कोइ जतन मन ना थिरे।
ऐसा कुलाहल* कठिन यों, पल एक नहिं लावे बिरे†॥
करि करि जुगत सब हारि थाके, नेक नहिं पावे जिरे‡।
पाले धरम जिव कर्म ये यों, भव नहीं हिरदे तरे॥

# शास्त्रों का उलझेड़ा और उन को ठीक न समझने से ख़राबी

॥ दोहा ॥

धरम बेद ने करि किया, करम बंध की टेक।
द्वैत भाव भरमाय के, नहिं बूझा प्रभु एक॥

---

* हल्ला। † बिरह। ‡ मर्म, भेद।

॥ चौपाई ॥

करम धरम ने बंधन डारा । पूजा पत्री नेम अचारा ॥
तीरथ बरत और चारो धामा। यह यौं पाप पुन्न उरझाना॥
लोभ दिखाय स्वर्ग समझावा। स्वर्ग भोगि भवसागर आवा॥
पुन्न प्रभाव कहे समझाई। भोग भुगति चौरासी माहीं ॥
नर की दैंहि देव नहिं पावे । स्वर्ग आस नर को बँधवावे॥
नर तन दुरलभ देव न पावे। यह नर अधम स्वर्ग को चावे॥
सुख सुर लोक मैं अधिक कहावे। तो सुर नर दैंही क्यौं चावे॥
यौं नहिं मूरख बूझै बानी । देव स्वर्ग तजि नर तन ठानी॥

॥ दोहा ॥

स्वर्ग छाँड़ि सब देव यह, नर तन माँगत झार ।
यह बिचार मन मैं करे, तब पावे निरधार ॥

॥ चौपाई ॥

सासतर ब्रह्म बेदांत बतावे । याहि पूजा कहो केहि की लावे
ब्रह्म अस का सकल पसारा। सोई ब्रह्म दैंहि निज धारा॥
सब्द ब्रह्म सब माहिं बतावैं । श्रीमत* ऐसे साखि सुनावे॥
पिंड बैराट रूप भगवाना । आतम रूप कहैं परमाना ॥
फिर पाहन की पूजा लावे। सोइ अज्ञानी मनुष कहावे॥
चेतन तजि बाँधे जड़ आसा। धरम टेक बस करम निवासा॥
जो कोइ निरनै कहे बुझाई । बूझै न बैन चैन चित लाई॥
सो निंदा करिके मन माना । सासतर आतम कहे पुराना॥

* भगवान ।

॥ सोरठा ॥

आतम देव पुकारि के, सब पुरान गुहराय ।
देँहि देवल बैराट यह, पूज करो निरधार ॥

॥ चौपाई ॥

देँह देवल सब साखि सुनावे। आतम रूप परिमा* गावे॥
जो तैँ मूरति पूजि पखाना। यह नहिं पूजन कहै पुराना॥
याकी साखि संत नहिं गावैँ। नहिं पुरान पूजन बतलावैँ॥
याकी साखि समझि मन लावे। झूँठ साँच निरनै जब आवे॥
बिन सतसंग भरम नहिं जावे। सतसंग साधुन भरम छुड़ावे॥
जुग जुग का मल मैल मलीना। बिन सतसंग न आइ यकीना॥
सतसंग अंजन आँखि लगावे। जब कछु तिमिर नैन से जावे॥
ज्ञान उदै बिन भक्ति न होई। भक्ति बिना सब बुद्धि बिगोई।

॥ दोहा ॥

भक्ति भाव बूझे बिना, ज्ञान उदै नहि होय ।
बिना ज्ञान अज्ञान को, काढ़ सके नहिं कोय ॥

॥ चौपाई ॥

सब सब मैँ भगवान बतावे। चर अरु अचर माहिं समझावे
पाहन में परमेस्वर जाना। सब मैँ कहै भाखि भगवाना॥
पाहन को कस पूजो भाई। पूजन तो सबही की चाही॥
श्री भगवान बसे सब माहीं। सब को तजि पाहन लौ लाई॥
जो तैँ इष्ट दृष्टि मैँ देखे। सब मैँ जान बराबर लेखे॥

*प्रतिमा मूर्ति ।

मुख से एक सबन में भाखे। फिर दुरमति केहि कारन राखे॥
यह नहिं इष्ट भाव का लेखा। दुरमति दृष्टि भाव से देखा॥
सुनु उपासना की यहि रीती। एक भाव से पाले प्रीती॥

॥ दोहा ॥

कूकर सूकर में कहो, सब के माहिं समान।
और बसे अलगाय के, पूजन करो पखान॥

॥ चौपाई ॥

गो गुन में मन राम कहाई। गोपी गो मन इंद्री माहीं॥
कृस्न राम को धाम कहाई। मन तन सब में बास कराई॥
सो। यों मन इंद्री रस चावे। वहि मन को सब खोंट बतावे॥
भव रस माहिं मुकर* में आसा। संख चक्र गदा पद्म निवासा॥
यहि महिमा रम राम कहावे। सोइ मुकर मन सब गुहरावे॥
मन यहि बिषै बासना माहीं। सोइ सरगुन मन राम कहाई॥
चेतन राम सबन में बासा। छाँड़े असल नकल कीआसा॥
पाहन मूरति मनुष बनावे। टाँकी से गढ़ि गढ़ि के लावे॥

॥ दोहा ॥

मूरति का करता कहो, को गढ़ि कीन्ह बनाय।
ताहि समझि हिरदे धरो, रहो चरन लौ लाय॥

# अवतार स्वरूपों की कथा का अंतरी अर्थ

॥ चौपाई ॥

जोइ बैराट रूप भगवाना। सोइ सबके तन माहिं समाना॥

---

* आईना।

याको छाँड़ि और मन लावे । सोइ प्रानी जड़ मूर्ख कहावे॥
जिन बैराट रचा सो न्यारा । वहि सबका है सिरजनहारा॥
निगुरन कहैँ निरंजन कोई । पिंड ब्रह्मंड रचा जिन जोई॥
जिनके आहि दसौँ अवतारा। गुन तीनौँ सँग साथ पसारा॥
सोइ नर देँहि जक्त में धारा । इंद्री सँग मन करे बिहारा॥
मन तन सँग जड़ताई माहीँ । यासे परख कोऊ नहिं पाई॥
आप अपनपौ को नहिं चीन्हा । जासे जग में रहा अधीना॥

॥ दोहा ॥

आप अपनपौ ना लखा, भखा न सिरजनहार ।
पार बिना भटकत फिरे, कस पावे निरधार ॥

॥ चौपाई ॥

जीव तो अंस पुरुष से आया । निराकार रचि कीन्ही काया॥
जोति सरूप तेज उपजाया । यौँ जग माहिं प्रगट भइ माया॥
जोति माहिं से भये भगवाना । तन धरि के प्रगटे जग रामा॥
सोइ इंद्रिन में करे निवासा । तीन गुनन मेँ जग की आसा॥
सो भया मन इंद्रिन के संगा । भव रस भोग करे रस रंगा॥
तीन गुनन से आसा धारी । आसा अँग भव बाल बिचारी॥
आसा आहि भरम को मूला । आसा करम संग सहे सूला॥
बोले राम सबन के माहीँ । जड़ तत ने यौँ फाँस फसाई॥

॥ दोहा ॥

जोति सरूपी माहिं से, प्रगट भये भगवान ।
सोई राम मन गुन गहे सरगुन साखि बखान ॥

॥ चौपाई ॥

आदि छाँड़ि जिव निरगुन आया । आदि अंस की सुधि बिसराया ॥
निरगुन जोति तत्त उपजाया । पाँच तत्त सँग धारी काया ॥
काया सँग अँग में उरझाना । आदि पुरुष की सुधि बिसराना ॥
भूलि पुरुष निरगुन को धावे । आदि पुरुष की सुद्धि न लावे
निरगुन छाँड़ि जोति के संगा । तत्त बनाय बसा यौं अंगा ॥
जोति अंस इच्छा भइ रानी । जीव भुलाय जोति अलगानी ॥
जोति छाँड़ि जिव बाहर आया । जब तत पाँच धरी नर काया
अंग अजोध्या मेँ अवतारी । दस इंद्री दसरथ मन धारी ॥

॥ दोहा ॥

जोति जीव बिसराय के, दसरथ पुत्र कहान ।
कुमति कौसिल्या मात सँग, भरत अंग उरझान ॥

॥ छंद ॥

मन तन त्रिगुन की चाह चतुरगुन, गाँठि मेँ बंधन भयो ।
निरगुन बरम्ह अपनी सता*, सीता को हरि कर ले गयो ॥
रावन त्रिकुट के मद्ध लंका, बास में बसि के रह्यो ।
सत की सता सीता लये, दुख राम तन बन को सह्यो ॥
करे राम मोह बिलाप ममता, लच्छ लछमन को कह्यो ।
सीता गये का सोच सुधि, सुग्रीव चिन्ह पट† को दयो ॥
सन्मुख समुन्दर बाँधि मन, तजि अंग सँग अंगद लह्यो ।
तोड़े त्रिकुट चढ़ लंक गढ़, ब्रह्म की सता सीता लयो ॥

* सत्ता=ताक़त । † कपड़ा ।

॥ दोहा ॥

रावन ब्रह्म त्रिकुट बसे, चढ़ मन राम जो धाम ।
सता ब्रह्म सीता लई, कीन्हा पूरन काम ॥

॥ चौपाई ॥

मन सो ब्रह्म भये अबिनासी । गहे निज मूल त्रिकुट के बासी ॥
संपादी* समपद मन गयऊ । इन्द्री गीध† गीध मन रहऊ ॥
जोति तजे मन भयो भगवाना । मन गीधे सोइ गीध कहाना ॥
त्रिकुटी धाम चढ़े भगवाना । सो मन केवल ब्रह्म कहाना ॥
जो भगवान भवन भव माहीँ । गो पालन गोपाल कहाई ॥
गो में बिंध गोबिंद रहाया । तन मन गीध† गीध बताया ॥
समपद को जो चीन्हे भाई । जिनका आवागवन नसाई ॥
चेतन सूरति मन भगवाना । पूजे जड़ जड़ माहिं समाना ॥

॥ दोहा ॥

सत्त पुरुष को जीव तजि, निरगुन भवन पिछान ।
निरगुन छाँड़ि जिव जोति के, मद्ध भया भगवान ॥

॥ चौपाई ॥

सो भगवान सबन के माहीँ । जड़ चेतन में ठावँ ठाईँ ॥
एक रूप सोइ भया अनेका । मन अपने में करो बिबेका ॥
आदि एक अपनी को भूला । भया अनेक छाँड़ि तत मूला ॥
चर और अचर खानि के माहीँ । सब में देखो राम रमाई ॥

*नाम गिद्ध का जिस की रामायन में कथा है । †बिँधना या पगना ।

सोइ अपने में करो विचारा। बोले सब में सिरजनहारा॥
लख चौरासी में तन धारा। उपजे मरे करम संसारा॥

## सतगुरु शरन बिना निर्बार नहीं हो सकता

सतगुरु संत सरन जो आया। जिनका आवागवन नसाया॥
सुरति डोर सतगुरु में लाये। सो जिव आदि अंत पद पाये॥

॥ दोहा ॥

सतगुरु संत दयाल बिन, सब जिव काल चबाय।
बाँधि करम के बस रखे, सके न सूरति पाय॥

॥ चौपाई ॥

बिना सुरति नहिं लगे ठिकाना। सतगुरु संत बिना भरमाना॥
भेष संत नहिं बूझा भाई। संतन की गति अगम अथाही॥
जो वे मिलें जीव निरबारा। बिन उनके चौरासी धारा॥
जड़वत जीव भया जड़ताई। अपनी सुधि आपै बिसराई॥
यासे भूला आदि ठिकाना। जुग जुग जीव फिरे भरमाना॥
सतसँग करने को कोइ चावे। पंडित भेष भूल भरमावे॥
नेम अचार इष्ट की बातैं। करि समझाय कहें बहु भाँतैं॥
यह सतसँग है जग के माहीं। बंधन जीव जानि उरझाई॥

॥ दोहा ॥

ईसुर कर्म परमात्मा' मन तन मूल मिलाप।
आप अपनपौ ना लखे' सुख दुख से संताप॥

# (एक सिद्ध की कथा)

॥ चौपाई ॥

अब याका परसंग बताऊँ । मूल भूल की साखि सुनाऊँ॥
गुरु चेला रमते कहुं आई । जोगी सिद्ध रहे बन माहीँ॥
आसन कुटी धुनी के पासा । रात्रि आय जहँ किया निवासा
फल फलहार खान को दीन्हा । भोजन कंदमूल का कीन्हा॥
भोजन करि आसन पर आये । सिद्ध प्रनाम चरन सिर नाये
पूछा सिद्ध कहाँ से आई । कहो कहँ कहँ की रमत कराई॥
चेला सुनि के रहा अबोला । जब रमते में से गुरु बोला॥
तीरथ चार धाम परसाया । नहिं कोइ सिद्ध नजर में आया॥

॥ दोहा ॥

माया भगवत की बड़ी' को पावे परभाव ।
को लीला उनकी लखे' छल बल बहुर उपाव ॥

॥ चौपाई ॥

सिध सुनके मन में मुसकाना । सिद्धन का इन मरम न जाना
जोग करे जिन सिद्ध पिछाना । बिन सिद्धी नहिं सिद्ध कहाना ॥
जब चेला बोला सिध स्वामी । सिद्धी का कहो भेद बखानी॥
मैं अजान हौं तुम्हरो बारा* । पूछा कहो भेद निरबारा॥
सिद्धी मैं कहो कहा दिखाई । भाखो भेद मोहिं समझाई॥
जब सिध बोल कही यह बाता । सिध सिद्धी संसार सनाथा॥

* अयाना ।

जग राजी सिद्धी के माहीं। जो कोइ जानि परख जिन पाई॥
तिलोकी का नाथ कहाया। सिद्धी आहि जाहि की माया॥

॥ दोहा ॥

जो तिरलोकीनाथ की, माया है बलवान।
सो सिद्धी सिध सब कहैं, आप रूप भगवान॥

( गुरू बाच )

॥ चौपाई ॥

चेला को गुरु यौं समझावा। सिद्धी आहि कृत्तम परभावा॥
सिद्धी से कछु मुक्ति न होई। सिद्धी संत कृत्तम कहैं सोई॥
ज्यौं बाजीगर आम लगावे। परतछ अमिया आम देखावे॥
चमड़े का करि साँप चलावे। सो सब के देखन मैं आवे॥
डमरू को जो जानि बजावे। सब संसार तमासे आवे॥
कौड़ी माँग उन खेल उठाया। डमरू बट्टे झोली नाया॥
सरप चाम का चामै भइया। अमिया आम कछू नहिं रहिया॥
कौड़ी कौड़ी माँगि दुकाना। यौं सिद्धी है कृत्तम समाना॥

॥ सोरठा ॥

ज्यौं बाजो का खेल, झूँठ पसारा कृत्तम का।
जब वो लेत समेट, सुपने सम जिमि खेल यह॥

॥ चौपाई ॥

जब चेला बोले गुरुस्वामी। सत्त बात कहि अंतरजामी॥
यामें नाहिं मुक्ति को काजा। तो काहे की सिद्ध समाजा॥

( सिद्ध बाच )

सिध सुनि के मन मेँ रिसियाया। क्या जाने सिद्धी की माया॥
फजिर उठे कोइ खेल देखाऊँ। सिद्धी माया का परभाऊ॥
राति बीत जो भया बिहाना। सिध सिद्धी करने को ठाना॥
चेला गुरू उठे दोउ भाई। हिरदे को तुलसी समझाई॥
जग अंधा फंदा पहिचाने। जीव मुक्ति की खबर न जाने॥
मुक्ति छाँड़ि माया कृत माना। मुक्ति बिना चौरासी खाना॥

( हिरदे बाच )

॥ दोहा ॥

हिरदे कहे तुलसी सुन्यौं, गुरु चेला के बाक।
वोहि सुनाय फिरि के कहो, सिध सिद्धी की भाख॥

॥ चौपाई ॥

राति बीति कर भया बिहाना। सिध सिद्धी करने को ठाना॥
यहि बिधि तुमने कहन सुनाई। सो सब मन मोरे मेँ आई॥
राति बात का कहो बयाना। सो भइ कहा समझि परमाना॥
गुरु चेला सिध की कहो बोली। सिध ने करामात क्या खोली॥

( तुलसीदास बाच )

कहे तुलसी हिरदे सुनि लीजे। करामात मेँ करनी छीजे॥
जग संसार आँखि अँधियारी। करामात लगे सब को प्यारी॥
सिध सिद्धी करिके बतलावे। करामात मेँ जक्त रिझावे॥
सिध कछु कीन्ह चुटकला भाई। बड़े जानि सब सीस नवाई॥

सिद्धी करि करि जनम बिगारा। मुक्ति न गये चौरासी धारा॥
जग रिझाय के आप बिगाड़े। बंधन बँधे काल के गाढ़े॥

॥ दोहा ॥

सिध सवाल अपना करे, करनी केर बिगाड़।
कर्म भाड़ में भुंजि मूए, पड़े खानि की खाड़* ॥

॥ चौपाई ॥

जग रीझे कृतम लख माया। सिद्ध बिगाड़ आप सुख पाया॥

( हिरदे बाच )

सिध बिगाड़ जग का सुख पाया। पुत्रकलित्र और धन माया
यह माया मोह बन्धन लीन्हा। अंत मुक्ति का काज न कीन्हा
माया मोह बहुत दुखदाई। यह सिद्धन से सिद्धी पाई ॥
सिद्धी ले बहु फाँस फँसाना। जन्म मरन नहिं लगा ठिकाना
यह लइ आस बास तन छूटा। चौरासी जम धरि धरि लूटा॥
यह भी भये नर्क गति गामी। जग सुख में क्या लीन्हा स्वामी॥

( तुलसीदास बाच )

जग संसार भँवर बहि जावे। काल जाल बस यौं अस आवे
माया मोह बँधाई आसा। सुख संपति ममता में फाँसा॥
गये प्रान कछु संग न लीन्हा। ममता से मुक्ती नहिं चीन्हा॥
सब संसार जक्त ज्ञ जाली। करम बंद सँग फिरे बेहाली॥
ज्यौं बंदर बाजीगर बाँधा। यौं चावे जिव करम इरादा॥

( हिरदे बाच )

हिरदे कहे सबब सुनि स्वामी। दोउ बूड़े ये अंतरजामी॥

*खड्ड।

सिध बूड़े करनी लुटवाई। मोह माया सिद्धी बतलाई॥
सो सिद्धी में जक्त भुलाया। जुग जुग धरी करम बस काया॥
कूकर सूकर में लिया बासा। सब संसार जक्त की आसा॥
अब वह कथा कहो दरसाई। गुरु चेला सिध की समझाई
भई राति बरतंत सुनावो। कस कस इन उनका बतलावो॥

॥ दोहा ॥

इन उनकी कस कस भई, राति बात बरतंत।
सो बनाय मोसे कहो, का निकरा फिर तंत* ॥

( तुलसीदास बाच )

॥ चौपाई ॥

सुनु हिरदे यह मन दुखदाई। यह मैं मैं की मान बड़ाई॥
सिध सिद्धो कीन्हा अहंकारा। कोई च ्मला करन बिचारा
निज निसि गई भई अधिराती। ब...ह प्रसिद्ध† अगिन कइ भाँती॥
चेला गुरु बैठे दोउ भाई। चर्चा सिध से करैं बनाई॥
चरचा में सिध से नहिं हारा। जब सिध मन में कपट बिचारा॥
प्रबल प्रचंड अगिन कुटि माहीं। जरे देखि मन संका लाई॥
चेला गुरु उठि कर घबराने। कुटी जरे सिध मरम न जाने॥
सिध हँसते अपने मन माहीं। कपट भाव उनको भरमाई॥

*तत्त, मतलब। †जगाया।

॥ दोहा ॥

गुरु चेला उठि कर भगे, खड़े जो मारग माहिं ।
देखे सिद्ध समाधि से, उठि के भागे नाहिं ॥

॥ चौपाई ॥

सिध समाधि से सिद्धी आई। कुआ उमँगि जल अगिन बुझाई॥
बिना डोल डोरी जल आवे। कुवा उमँगि कर कुटी बुझाये॥
सिध आसन पर बैठ रहाई । किर्तिम सिद्धी करि बतलाई॥
अगिन बुझे पर आसन आये। गुरु चेला दोउ अचरज लाये॥
यह बरतंत राति को बीता । सिद्ध दिखाई कपट प्रतीता॥

( हिरदे बाच )

यह तो भई समझि सोइ लीन्हा । आगे को कहो फिर का कीन्हा ॥
फजिर भये का कहो बयाना । फिर सिध ने मन में कहा ठाना ॥

( तुलसीदास बाच )

सिद्ध कहे कछु करि दिखलाऊँ। अचरज कुटी माहिं दरसाऊँ॥

॥ दोहा ॥

फिर मन में सिध के उठी, करि बतलाऊँ खेल ।
रमते साधु सुभाव को, डारूँ नीचे मेल ॥

( हिरदे बाच )

॥ चौपाई ॥

रमते साधु सिद्ध की बाता । फिर कस भई कहो बिख्याता॥

फिर सिध ने सिधि कहा जनाई। वह भी कहो मोहिं समझाई
गुरु चेला कहो रहे निवासा। की उठि गये फजिर कहँ बासा॥

( तुलसीदास बाच )

जब तुलसी बोले सुनु भाई। जो जस भई कहूं समझाई॥
उठि कर चले फजिर दोउ साधू। सिध सिद्धी करि कीन्हा जादू
बेनी बहे कुटी के माहीं। यह महिमा करिके दिखलाई॥
साधुन को सिध कहत सुनाई। भया अचंभा देखो जाई॥
कुटी माहिं पूरन परयागा। देखि पुनीत रहो यहि जागा॥

॥ दोहा ॥

साधु दोऊ उठि कर चले, देखि कुटी में जाय।
तिरबेनी तीनों नदी, बहती अगम अथाह॥

॥ चौपाई ॥

अचरज साधु बहुत मन लाये। भया अचंभा दोउ मुसकाये
सिद्ध कहे तिरबेनी न्हावो। अपना जनम सुफल करि पावो॥
साधु कहे हम बहुत अन्हाये। कलप बास करि व्हाँ से आये॥
कुटी माहिं तिरबेनी देखी। यह अचरज की बात बिसेखी॥
चेला कहे गुरू फिर न्हावे। यामें कहा गाँठि को जावे॥
चेला गुरू किये असनाना। अचरज मन में भरम समाना॥
करामात सिद्धौं की माया। सो सिद्धौं ने करि दिखलाया॥
दोऊ गये करन असनाना। सिध सिद्धी कीन्हे पकवाना॥
रुचि भोजन सब निपुन* बनाये। करि अस्नान साधु
पुनि आये॥
बैठे जब पत्तल पर जाई। सब पकवान परोसे आई॥

*उत्तम।

॥ दोहा ॥

एक फकीर चलि आइ के, ठहर कुटी के पास ।
स्वाल बचन कछु ना कहे, बैठे आय उदास ॥

॥ चौपाई ॥

सिद्ध कहे कहो कहँ से आये । कैसे बैठ रहे मुरझाये ॥
कहे सिद्ध कुछ खाना खावो । तो साँई तुमहूँ उठि आवो॥
कछु जवाब साँई नहिं दीन्हा। सिद्ध समझ करि पत्तल लीन्हा
पत्तल धरि साँई के आगे । फिर खाने को लावन लागे॥
बासन ढाँकि अँगोछा डारा । ह्वाँ से भोजन काढ़ि निकारा॥
जब साँईं सिध सिद्धा जानी । समझि बूझि बोले नहिं बानी॥
पत्तल पर खाने को लाये । साँई के सन्मुख धरि आये॥
कछु फकीर ने ख्याल न कीन्हा । सिध मन में अचरज
करि लीन्हा ॥

॥ दोहा ॥

सिद्ध कहे साँईं सुनो, धरा खान को पास ।
सो खाना खावो नहीं, यौं क्यौं बैठ उदास ॥

॥ चौपाई ॥

बैठे रहे कहो क्यौं साँईं । जो चहिये सो देउँ मँगाई॥
मियाँ कहे हमरी सुनि लीजे । गुनह करे मुरसिद नहिं रीझे॥
बिन मुरसिद नहिं खाना खावे। खावे तो यह गुनह कहावे॥
सिद्ध कहे मुरसिद कहाँ साँईं । चाहो उनको लावो लेवाई॥
साँईं कहे सुनु सिद्ध गुसाँईं । मुरसिद ह्याँ आवैं गे नाहीं॥

वे दाता कहो कैसे आवैं। उनके बिन खाना कस खावैं॥
सिद्ध कहे कहो कहाँ बिराजे। करम* करैं हमहीं पर आजे॥
साँई कहे इहाँ कहाँ आना। उनका होय कहूँ नहिं जाना॥

॥ दोहा ॥

नहीं मकान से उठि सकैं, कहूं न उठि कर जायं।
रहैं मकान के माहिं वे, आठौं पहर समाय॥

॥ चौपाई ॥

जब सिध पूछि कही है साँई। मुरसिद का कहो ठौर बताई॥
कहो वह ठाँव कौन से ठाँई। दाता मुरसिद जहाँ रहाई॥
जब साँई बोले यह बाता। ह्याँ से बैठे देख दिखाता॥
कुटी सामने बाग दिखावे। देखु निगाह नजर में आवे॥
खाना जबै दुरुस्त कहावे। बिन उनके खाना नहिं खावे॥

( सिद्ध बाच )

बाग मियाँ ह्याँ कहँ बन माहीं। कोसन पहाड़ उजाड़ दिखाई॥
जब बोले उठि के यौं साँई। कुटी सामने बाग दिखाई॥
बड़ा बाग सन्मुख दिखलावे। देखो बाग नजर में आवे॥

॥ दोहा ॥

तुम तो सिद्ध समाधि से, देखो नजर पसार।
दूर नहीं यहि पास है, मुरसिद मियाँ हमार॥

*दया।

( सिद्ध बाच )

॥ दोहा ॥

मियाँ बाग सन्मुख कहो, देखूँ नैन निहार ।
कोसन पहाड़ उजाड़ है, यह कहो कौन बिचार ॥

॥ चौपाई ॥

सिध को भया अचंभा भारी । यह कहो कौन कला बिस्तारी॥
करि निगाह देख चहुं फेरा । दिखे न बाग भूमि सब हेरा॥

( साँई बाच )

बदन जहीर* आँखि अँधियारो । ऐनक एक फकीर निकारी॥
सिध लगाय तुम इसमें देखो । बगिया सन्मुख सुरति बिबेको ॥
देकर ऐनक सुरति लगाई । बगिया तुरत नजर मेँ आई॥
सिध मन मेँ जब करे बिचारा । यह कहो कौन खेल करतारा ॥
बैठा करि जुग जुग से ध्याना । सिद्धी भई और नहिं जाना॥
दृष्टि कधी बगिया नहिं आई । अचरज ऐनक माहिं देखाई॥

॥ दोहा ॥

ऐनक के परभाव से, बगिया दृष्टि दिखान ।
रहे जुगन यहि भूमि पै, पड़ी नहीं पहिचान ॥

॥ चौपाई ॥

कहे सिद्ध साँइं तुम दाता । देखी नहीं सुनी यह बाता॥

---

*दुबला ।

सो ऐनक मैं खोलि दिखाई । बड़े भाग से ऐनक पाई॥
उठे सिद्ध साँई के साथे । बगिया देखन को सँग जाते॥
कुत्ता संग लाये थे साँई । सो पतरी* कुत्ते ने खाई॥
गुरु चेला भोजन को खावे । देखन सिद्ध बाग को जावे॥
चलि भये मियाँ सिद्ध के आगे । ऐनक सिद्ध आँखि मैं लागे॥
चले बाट ऐनक से आवे । बिन ऐनक नहिं बाट दिखावे॥
ऐनक भई सिद्ध को दाता । ऐनक से सब खेल दिखाता॥

॥ दोहा ॥

जब सिध ऐनक आँखि से, देखे निरखि निहार ।
सब जब तो बगिया लखे, नहिं तो झाड़ उजाड़ ॥

॥ चौपाई ॥

कुत्ता पीछे भूँकत आवे । सिध सँग जान मियाँ घुरकावे॥
पहुंचे जाय बाग के पासा । बगिया चौकी सिंघ निवासा॥
उठिकर सिंघ सिद्ध पर डाका । जब फकीर सिंघ ऊपर ताका॥
पंजा धरे सीस पर जाई । सीतल सिंघ रहा मुरझाई॥
बगिया के मारग को चाले । सिद्ध बाग पर कीन्हा ख्याले॥
बाग बृच्छ फूली फुलवारी । देखा बाग बड़ा बन भारी॥
आस पास बगिया चहुं फेरा । कहे बेनी अति नाहिर पं तेरा॥
मैं बेनी किर्तिम दिखलाई । यह तो बेनी अगम अथाई॥
सिध अचरज मन माहिं बिचारा । मैं सिद्धो को देखि निहारा।

*पत्तल

॥ दोहा ॥

जोग कष्ट करि करि थके, अचरज ऐनक माहिं ।
सहज भाव देखत रहूं, समझ पड़े केहि ठाँहिं ॥

॥ चौपाई ॥

आगे चले बाग के नाके । जोगी जती सिद्ध जहँ थाके॥
द्वार बाग पर रहै भुजंगा* । वह डसि खाइ जाइ जेहि अंगा॥
भीतर से सन्मुख को दौड़ा । फन फटकारि फिरे चहुं ओरा॥
बड़े बड़े जाने नहिं पावैं । जोगी सिद्ध तुरत बगदावैं†॥
साँईं देखि भुजँग फन डारा । भीतर बाँबी माहिं सिधारा॥
साँईं सिधि सँग आगे चाले । परिमल‡ उठे सुगंधि रसाले§॥
भँवर पोहप से बहु लिपटाने । निर्मल गंध बास उरझाने॥
परम पुनीत भूमि बहु भाँती । सोभा कहूँ कही नहिं जाती॥
निर्मल बास भूमि सब जागे । बृच्छ बृच्छ सूरज फल लागे॥

॥ सोरठा ॥

तरु तरु फल सूरज लगे, कहा कहूं तेज प्रभाव ।
उदै होत रबि बृच्छ पै, कहा कहुं अगम अथाह ॥

॥ चौपाई ॥

सूरज फल बृच्छन पर होई । सोभा कहा कहे भल कोई॥
आगे गये बाग के माहीं । मियाँ कहे सुनियो सिध भाई॥
तुम तो रहो ठहर यहि जागे । मैं साँईं से मिलिहौं आगे॥
हुकुम हुए पर मैं ले जाऊँ । साँईं दाता दीदार कराऊँ॥

*साँप। †भरम जायँ। ‡अचरजी सुगंध वाली । §रस की खानि।

साँईं साँईं के पास सिधारे । साहिब मियाँ अगम से न्यारे॥
मंदिर मठ अंदर के माहीं । मढ़ बाग मुरसिद को ठाँईं॥
मिले मुरीद पैर सिर दीन्हा । मुरसिद तुरत अंग मैं लीन्हा॥
कदमअली* कहे मुरसिद प्यारे । सिध आये इक करन दिदारे ॥
मुरसिद कहैं उन्हैं ले आवो । तुम दहसत* दिल मैं जिन खावो
तुरत सिद्ध को लीन्ह बोलाई । कदमअली ले पहुंचे जाई॥

॥ दोहा ॥

सीस कदम ऊपर धरे, सिद्ध लिया अपनाय ।
मियाँ कहे मुसकाय के, क्यौं कर पहुंचे आय ॥

॥ चौपाई ॥

हाथ जोड़ के सन्मुख ठाढ़े । कदमअली बन्धन से काढ़े॥
मेहर बड़ी मुरसिद ने कीन्हा । दीन्ही काढ़ि एक दुरबीना॥
सिध मुरसिद का देखे नूरा । हीरा चमके तेज जहूरा॥
मुरसिद कहे सुफल कर लेखो । यह दुरबीन ताकि कर देखो॥
सिध ने ले दुरबीन चढ़ाई । ऐसे बाग अनेक दिखाई॥
बाग पार जब ताकन लागे । सहर एक सब बागन आगे ॥
सिद्धि वहाँ की क्या कहे कहेनी । महलौं महल बहे तिरबेनी ॥
सिध अपनी सुधि बुद्धि बिसारी । यह तो गति ऐनक से न्यारी ॥

*भय । †नाम साँईं यानी मुरीद का

॥ दोहा ॥

जब ऐनक को देखि कर, कहते अगम अथाह ।
यह दुरबीन के सामने, ह्याँ कछु लगे न थाह ॥

( कदमअली बाच )

॥ चौपाई ॥

सुनो सिद्ध यह बात गुसाँई । संग ऐनक देकर ह्याँ लाई ॥
हम मुरसिद दीदार कराया । जब मुरसिद के दरसन पावा ॥
संग मुरसिद होइ बाट बतावैं । बिन संग मुरसिद बाट न पावे ॥
दे दुरबीन वे आगे चालैं । तो वोहि देख पड़े सब ख्याले ॥
सँग उन बिन दुरबीन लगावो । तो आगे नहिं जाने पावो ॥
बिन हम सँग तुम ह्याँ नहिं आये । सँग मुरसिद ले जायँ लिवाये ॥
इत दुरबीन उत ऐनक भाई । संग बिना कोई नहिं जाई ॥
मोको हुकुम करैं सँग जाऊँ । तो संग जाय खेल दिखलाऊँ ॥
बिना हुकुम नहिं पैर उठाऊँ । मुरसिद मेहर हुकुम से जाऊँ ॥

॥ दोहा ॥

सिध कहे कदमअली सुनो, तुम बतलाया ठौर ।
बिना मिले तुम से अभी, कहूँ और की और ॥

॥ चौपाई ॥

तुम तो हो गुरु पीर हमारे । तुम्हरी दया देख दरबारे ॥
इहाँ कहो को आने पावे । तुम सँग भये बिना को आवे ॥

अब तुम कहो सोई, बिधि जानूँ । हुकुम होय सोई मैं मानूँ॥
तुम लाई दुरबीन दिखाई । इतनी सैल मेहर से पाई ॥

( कदमअली बाच )

अब तुमको इक अकिल बताऔं । ले दुरबीन मियाँ पै जाऔं
मियाँ कदम पर सीस लगावो । हुकुम करैं सोइ सीस चढ़ावो॥
ले दुरबीन मियाँ पै आये । जेहि बिधि कदमअली फरमाये॥
जस जस कही वही बिधि कीन्हा । ले दुरबीन कदम
धरि दीन्हा ॥

॥ दोहा ॥

सिद्ध सुनो मुरसिद कहे, ऐनक औ दुरबीन ।
दोनौं के मध में रहौ, त्यो मकान को चीन्ह ॥

॥चौपाई ॥

जब दुरबीन के ऊपर जावे । संग लिवाय तुम्हें ले आवे॥
अब तुम जाव कुटी के माहीं । ऐनक को नित निरखो भाई
नित की सैल करो दरबारा । तुम हर वक्त करो दीदारा॥
हुकुम लिया सिध मुरसिद केरा । कीन्हा आय कुटी पर फेरा
गुरु चेला भोजन करि बैठे । देखा जाय कुटी में पैठे॥
जो ऐनक मुरसिद से पाई । देखे नित ऐनक के माहीं॥
दर्सन नित मुरसिद के पावे । सीतल भये दया से आवे॥
मारग गये गुरू औ चेला । नित नित आवे जाय अकेला॥

॥ दोहा ॥

नित प्रति दरसन मैं करूँ, नहिं कोइ परख पिछान ।
अगम बास नित कर बसूँ, नहिं पावे कोइ जान ॥

॥ चौपाई ॥

इक दिन गये सिद्ध दरबारा। चलो मियाँ कहे करो दिदारा
संग ले मियाँ सैल करवाई। भाखूँ रमक रेखते माहीं॥

( रेखता )

अकल बुजरुग* सिखाते हैं। कोई दिल में न लाते हैं॥
मभझ मुरसिद बतावेगा। अरस† अकसीर‡ पावेगा॥
समझ कोइ नूर का प्यारा। जहूरे में दिखा सारा॥
सुई के द्वार नाके में। ऊँट जाते हजाराँ हैं॥
पुखत§ हैं छाँह घूपाँ के। लदे दो दो संदूकाँ के॥
उसी संदूक में अंडे। वजन भारी चले ठंडे॥
उन्हीं अंडों के अंदर में। मिहीं आकार अंडा है॥
कहूं उनमान क्या उसका। अगर दाना जो खसखस का॥
उसी दाने में है रसता। अंदर उसके सहर बसता॥
करे कोइ ख्याल फहमीदे‖। जिगर अंदर खुलें दीदे॥
अगर आदम कोई इक था। हकीकत सुन खड़ा हँसता॥
दिलों में ना हुई हाजम¶। जिकर सुनना नहीं लाजिम॥
सिया सुन्नी** न था मालुम। बिगर ईमान का आलिम॥
उसे सुन के हुआ ताजुब। कही उन बात बेवाजिब॥
कुफर वेफहम†† फरमाई। नहीं आकीन‡‡ में आई॥

---

*बुजुर्ग=बड़े, पूज्य। †अर्श=सहस दल कँवल। ‡कीमिया, रसायन। §पक्के। ‖समझदार। ¶हाज़मा। **मुसलमानों की दो विरुद्ध तड़ शीआ और सुन्नी हैं। ††नादान। ‡‡यक़ीन।

दहरिया* काम जब जाना । मुकर† यह कहन कुफराना॥
नहीं इतबार आता है । ऊँट सुइ में समाता है॥
एक पोसते के दाने में । सहर क्यौंकर समाना है ॥
अगर यह बात सुनने में । तसल्ली दिल न लाता है॥
सुभा‡ सुन के समाती है । नहीं अंदर में आती है॥
सरे§ रसते चले जाते । मारफत|| के मँजिल माते॥
अगर उस की सुनी बातैं । किया कायल कई भाँतैं॥
मुकर कर थे खुदा बंदे । कही दुनिया के ये गंदे॥
अकिल तरकीब ठहरावैं । सबर सोहबत खबर पावैं॥
कभी यह बात नाहिं कहना । सबब सुन के समझ लेना॥
बुजुर्गों के बचन माहीं । असल को ऐन† ठहराई॥
उसे बूझे समझ करके । खुलैं आँखैं मुकर करके ॥
जधी ईमान में आवे । अकीदा¶ ऐन में पावे॥
मिले महरम** उसी का जो । कहेंगे हाल ज्यौं का त्यौं॥
अबे सुन ले समझ सारी । कहूं मैं बात बिस्तारी॥
दरक्खत†† एक है उलटा । कधी होवे नहीं सुलटा॥
अगर वह पेड़ अड़बड़ का । तले डाली अधर जड़ का॥
फूल फल भी उसे आवे । मरम महरम वही पावे॥
उसी में वह गुपत‡‡ रसता । सुबह से साम लौं चलता॥

*नास्तिक । †आईना, ऐनक, अंतर दृष्टि । ‡शुबहा । §ऊपर, सीधे ।
||ज्ञान । ¶बिश्वास । **भेदी । ††पेड़ । ‡‡गुप्त, छिपा हुआ ।

वहीं सुई द्वार दिखलावे। ऊँट जाते नजर आवे॥
अंड खसखस का दाना है। कहूं उस का बयाना है॥
पहाड़ आड़े कहे तिल के। फरक परदे खुले दिल के॥
दिखे दुरबीन में रसता। मुकर अंदर सहर बसता॥
अगर कोइ तलब[1] को चावे। तिलों का खोज कर पावे॥
वहीं खसखस का दाना है। तिलों के में समाना है॥
पेड़ इतना बड़ा बड़ का। उसी बीजे में से कढ़ता॥
डार और पात जड़ छिकला। मिहीं दाने में से निकला॥
अगर सुन के खबर खोजे। ऐन के भेद में चोजे[2]॥
कहैं तुलसी रसीला है। अजब कुदरत की लीला है॥

॥ ग़ज़ल ॥

खसखस के दाने के अंदर सहर खुदा का बसता है।
कस्द करे ऐनों के तिल में वोही तो उस का रसता है॥
रूह रकाने में ठहरावे सोई मुकर में घसता है।
सैल करे दाने के भीतर सो मुरसिद अलमसता है॥
कहे मजहब[3] मासूक की बातें डगर दिलों के वसता[4] है।
बड़ा माल जोरावर घर का किया खरीदा ससता है॥
बाँके बड़े खड़े लड़ने को सोई कमर को कसता है।
बिना मेहर महरम की सोहबत यों क्यों नाहक पचता है॥

॥ चौपाई ॥

बिन मुरसिद सब पचि पचि हारे। मुरसिद ने सब काज सधारे॥

[1] जिज्ञासा। [2] बिलास। [3] मज़हब। [4] वस्त - मध्य।

सिध सिद्धी बहु किये अनेका। पुनि पाया मुरसिद से ठेका॥
मुरसिद मुकर जाल से फेरा। मेहर नजर करि मुझ पर हेरा॥
जब देखा यह खेल बिलासा। छूटी यहि जहान की आसा॥
अब दिल रहा मझब के माहीं। झूठ जहान खिलकत की राही॥
सब सरियत* ने राह बिगारा। मियाँ मारफत किये दिदारा†॥
जो सरियत को सच करि जाने। बिना मूल सब भूलि हिराने॥
यह जहान की उलटी बातैं। मारैं मुकर फिरिसते लातैं॥

॥ सोरठा ॥

खिलकत जहान मुकाम का, झूँठा है सब काम।
मुरसिद महरम मझब से, देखि मुकर को माँज॥

॥ चौपाई ॥

कहे तुलसी हिरदे सुनु बानी। सिध ऐनक दुरबीन पिछानी॥
ऐनक औ दुरबीन लगाई। रमक‡ रेखते माहिं सुनाई॥
सिध सिद्धी संसार भुलाना। महरम भया मझब जब जाना॥
जब हिरदे पूछा अहो स्वामी। ऐनक का कहो भेद बखानी॥
ऐनक कौन कहो समझाई। भाखी आप परख नहिं पाई॥

( तुलसीदास बाच )

सब संतन ने भाखि सुनाई। सब्दन माहिं दीन्ह दरसाई॥
ऐनक आँखि ताकि कर देखा। जब कछु सूझा बूझ बिबेका॥
हिये नैन दुरबीन दिखावे। जब आगे की सुधि बुधि पावे॥
बहुत नजीक दूर बहु भाई। जाने मँजिल राह जिन पाई॥

*कर्म कांड। †दर्शन। ‡ज़रा सी।

॥ दोहा ॥

यह ऐनक है अलख की, खलक पार के पार ।
जिन निहार अंदर लखे, भखे सो भेद अपार ॥

॥ चौपाई ॥

जब सतगुरु की किरपा पावे। तब यह बात समझ मैं आवे॥
बिन सतसंग न पावे चीन्हा। सतसँग से लखि आइ यकीना॥
सो सतसँग सब्दन के माहीं। संत सब्द मैं दीन्ह दिखाई॥
जो कोइ बिरही जिव अनुरागी। परमारथी पीर* के रागी॥
सो सज्जन मारग कछु पावे। पचि पचि मरैं हाँथ नहिं आवे॥
जब कहुं उनकी मेहर मझावे†। दया करैं वहि जीव छुटावे॥
बिरह बिना नहिं दया समावे। दया धरन को जगह न पावे॥
कहो कैसे उपकारी लेई। सुने समझ नहिं हिरदे जेई॥

॥ दोहा ॥

सुनि समझे सत सजन की, मन दौड़ावे आप ।
कहो खाप‡ कैसे लगे, ले ले लंबी नाप ॥

॥ चौपाई ॥

मन से भर्म निकरि नहिं पावे। कहो कैसे सतसंग समावे॥
आसा अंग भंग करि देई। यौं भीतर रस जाय न जेहो॥
यह मलीन मन चोर न पावे। जासे खोज खतम होइ जावे॥
अपनी आसा बुझे न भाई। सतगुरु को दे दोष लगाई॥

---

*गुरू। †खोजे। ‡ ज़मीन की पैमाइश का एक पैमाना लकड़ी का जो कान तक ऊँचा होता है।

मारग यह संतन का झीना। बिन सतसँग नहिं आवे यकीना॥
मेहर धरन को बरतन चावे। सो तो नेक समझ नहिं लावे॥
बिरह होय तो भर्म उड़ावे। जग की रीति नेक नहिं भावे॥
बिरह उदास आस के आगे। मन से भर्म रोग जब भागे॥

॥ दोहा ॥

की तो यौँ करनी करे, की सतगुरु बिस्वास।
बास बसे सूरति चरन, तन मन होय निरास॥

॥ चौपाई ॥

जो अपना मन मूल न माने। तो सतगुरु के चरन पिछाने॥
मन बस नाहिं चरन नहिं जाने। यौँ सब जग यह भाड़ भुँजाने॥
सतगुरु साखि सबै मिलि गावे। अपने हिरदे साँचि जो आवे॥
जब बिस्वास बसे मन माहीं। कर्म करज से लेत सुरझाई॥
यह वह दोनौं में इक नाहीं। बेबिस्वास आस के माहीं॥
जब हिरदे बोले हे स्वामी। दो मेँ एक परख ले छानी॥
एक तरफ बिन फरक न होवे। फिर समझे सिर धुनि के रोवे॥
आज काज करि होय अकाजा। फिर नहिं यहि नर तन को साजा॥

॥ दोहा ॥

चेतन तन मेँ ज्ञान है, जड़ तन में अज्ञान।
फिर भरमत भव भव फिरे, नहिं कछु लगत ठिकान॥

॥ चौपाई ॥

यह सब बात परखिया बानी। स्वामी के कहने से जानी॥

( तुलसीदास बाच )

॥ चौपाई ॥

हे हिरदे सतगुरु केहि काजैं । जीव उबारन जक्त बिराजैं॥
हंस होय जो करे पिछाना । उन सतगुरु की महिमा जाना
आदि अनादि संत गुहरावैं। सतगुरु बिना पार नहिं पावे॥
सास्त्र कहे और बेद पुराना । महिमा सतगुरु बरनि बखाना॥
और महातम सब गुहरावैं। सतगुरु साखि समझि सब गावैं॥
कोटिन जिव यह करे उपाई । सतगुरु बिना राह नहिं पाई॥
जुग जुग भरमत भये अनेका। जिन भाखा जिन सतगुरु ठेका

॥ दोहा ॥

सतसँग अरु संतन कहो, स्रुति पुरान गुहराय ।
सास्तर सब महातम* कहे, सतगुरु का रे उपाय ॥

( हिरदे बाच )

॥ चौपाई ॥

स्वामी कही समझ मैं कीन्ही । बानी बचन बूझि के लीन्ही॥
जो जो बाक काढ़ि मुख भाखा । कहने में कछु फेर न राखा॥
कोइ मूरख जिव मन में लावे । हिये सतगुरु का बचन बसावे
अब वह बहुरि कहो समझाई । गुरु चेला बरतंत सुनाई॥
रमत गये पर फिर भी आये। सिद्ध कुटी पर बहुरि सिधाये॥
तुलसी हिरदे को रे सुनाये । बीत मास नौ पीछे आये॥
कुटि के माहिं जाइ के बैठे । बहुत प्रेम करि सिध से भैंटे॥

*महिमा ?

सिध सब पूछि कहो कुसलाता* । करी बहु रमत†
लगा कछु हाथा ॥
तीरथ करे ज्ञान सुनि आये । नहिं कछु और हाथ में लाये॥
ज्ञान सुने अज्ञान न भागा । तीरथ करत फिरे बहु जागा॥
चेतन तो तुम चीन्हे नाहीं । जल में न्हात फिरे बहु ठाँईं॥
चेतन तन में बास कराई । जा का खोज कीन्ह नहिं भाई॥

॥ दोहा ॥

चेतन ब्रह्म बैराट यह, आतम तन के माहँ ।
तुम बाहर खोजत फिरे, जासे लगा न थाह ॥

॥ चौपाई ॥

रमता में से गुरु कहे बोली । तुम कछु भेद बतावो खोली॥
सिद्धो को हम मानैं नाहीं । राह मुक्ति की कहो समझाई॥
भटकत फिरे भये हैराना । मुक्ति राह की जुक्ति न जाना॥
पैर थके कछु मरम न पाया । भरमत फिरे दुखित भइ काया॥
अब कछु जीव मुक्ति दरसावो । अब हमरी भव भटक मिटावो॥
जब सिध कहे मुक्ति कहा कीजे । जीवत जीव मुक्ति लखि लीजे
मुक्ति जुक्ति से भेद निनारा‡ । सो पावे संतन का प्यारा॥
सतसँग करे तोड़ के आपा । धनुवाँ खैंचि चढ़ावे चाँपा§॥

॥ दोहा ॥

सुरति चाँप धनुवाँ चढ़े, कढ़े गगन के पार ।
ऐनक आँखि लगाय के, देखे बिमल बहार ॥

---

*ख़ैरियत । †जात्रा । ‡न्यारा । §ताँत जिसे खींच कर धनुष चढ़ाते हैं ।

॥ चौपाई ॥

सो ऐनक मुरसिद से पावे । मेहर करैँ जब दया बसावे॥
जब ऐनक में पैने* भाई । मुक्ति जुक्ति की कौन बड़ाई॥
देखे सैल अपूरब आँखी । मुक्ती ज्ञान रहे सब थाकी॥

( रमते बाच )

सो ऐनक किरपा करि दीजे । जिव मारग को कारज कीजे॥
हमहूं बहुत फिरे चहुं ओरा । जीव जतन कछु किया न ठौरा॥
मुख तुम्हरे ऐनक सुनि पाई । मेहर दया सिध करो गुसाँईं॥

( सिद्ध बाच )

अब आये बिसराम करैये । फजिर हुए पर फिर कछु कहिये

( रमते बाच )

बेनी कुटी करन असनाना । अज्ञा करो हुकुम परमाना॥

( सिद्ध बाच )

॥ दोहा ॥

सिद्धी की बेनी हती, सो तो गई बिलाय ।
डोल पड़ा है कूप पर, यहि जल लेवो न्हाय ॥

॥ चौपाई ॥

सिद्ध कहे कछु भोजन कीजे । फल फलहार खान को लीजे ॥

( रमते बाच )

जब भोजन पकवान कराये । अब कहो कहा कहा ले आये॥

( सिद्ध बाच )

वे सिद्धी से थे पकवाना । सो गया छूटि सिद्धि सरधाना†॥

---

*धस जाय । †भाव।

अब ऐनक का ऐन बिचारा। या में देखि जीव निरधारा॥
रमते ने भोजन जब कीन्हा। रहे रात बिसराम जो लीन्हा॥
फजिर हुए पर पूछि पचारी। ऐनक की कहो बात बिचारी॥
कदमअली इतने में आये। हम से मिले बहुत सुख पाये॥
कदमअली से अरजी कीन्हा। रमते पर करो मेहर यकीना

॥ दोहा ॥

कदमअली बोले सुनो, बिन सोहबत नहिं हाथ।
सोहबत करि पावे सोई, नहीं सहज की बात॥

॥ चौपाई ॥

जब रमते पैरों सिर दीन्हा। मुरसिद सरन तुम्हारो लीन्हा॥
होइ दयाल ऐनक दिखलावो। मेरे तन को तपन बुझावो॥
कदमअली के दिल में आई। दे ऐनक उस को दिखलाई॥
दो ऐनक दोनों को दीन्ही। देखो परखि पड़े जो चीन्ही॥
ऐनक दोनों दीद लगाई। देखो सो कहो भाखि सुनाई॥
गुरु को तौ संसार दिखाना। खिलकत दीदे दीद जहाना॥
जितने मनुष देँह तन धारे। सो दीखे पसुवत* सब सारे॥
मनुष देँह तो दोइ दिखाई। की ये सिध अरु दूजे साँई॥

॥ दोहा ॥

गुरु ऐनक को देखि कर, भाखि कहे ये बैन।
नहिं जग में नर देँह दिखे, कूकर काग बेचैन॥

*जानवर सरीखे।

॥ चौपाई ॥

जो रमते गुरु को दिखलाना। समझ पड़ा सोइ भाखि बखाना
नर चोला खिलकत में नाहीं। खोज किया ऐनक के माहीं॥
यह तो गुरु ने भाख बयाना। अब चेले का सुनो बखाना॥
सब दिस पहाड़ जले चहुं फेरा। अगिन प्रचंड चक्र का घेरा॥
उस के मधि में जाइ घिराना। नहिं हूाँ बाट पड़े पहिचाना॥
मैं घबराय फिरयौं चहुं ओरा। नहिं भागन की बाट बहोरा॥
देखा कूप एक वहि ठाँई। उस में कूदन को मन चाही॥
उसके मधि में बैठ भुजंगा*। खावन चहे फाड़ि मुख अंगा

॥ दोहा ॥

जो भुजंग रहे कूप में, खाने को मुख फाड़।
कहा बिचार मन में करौं, ले धरि चाभे डाढ़॥

॥ चौपाई ॥

यह निहार चेला कहे बानी। और कहूं जो परख पिछानी॥
एक उपाय कीन्ह मन माहीं। कूप किनारे दूब रहाई॥
दूबै पकड़ि कूप लटकाना। बृच्छ किनारे रहे निदाना॥
वहिं पर मधु माखी का छाता। उड़ि के लागि बदन को खाता
सहद बूँद टपके मुख माहीं। मीठा लगे और दुखदाई॥
चूहे जुगल कूप के माहीं। हर दम दूब कतरि के जाई॥

*साँप।

जब मैं गिरा कूप के माहीं । सो बरसंत कहा समझाईं॥
यह ऐनक में दिखा तमासा। सो कहूं भाखि आप के पासा॥

॥ दोहा ॥

साँईं सुनि मुसकाय के, कही बहुरि इक बात ।
दोनौं गुरु चेले सुनो, समझ लिया बिख्यात ॥

॥ चौपाई ॥

गुरु चेले बोले हे साँईं। यह कछु समझ माहिं नहिं आई ॥
यह कहो कौन चरित्तर देखा। याका कहिये बरनि बिबेका॥

( कदमअली बाच )

ऐनक दोउ हमको दे दीजे। फिर हम कहैं बरनि सुनि लीजे॥
ऐनक दोउ दोनौं ने दीन्हा । कहिये साँईं भेद यकीना॥
जब साँईं बोले सुनि लीजे। हम कहैं कहन माहिं चित दीजे॥
नहिं ऐनक सतगुरु पहिचाना। सो नर मरे पसू भये खाना॥
जो नर मरि नर देंहि न पावे । चौरासी पसु कीट समावे॥
दो नर दिखे साँईं सिध साँगी* । सो सतगुरु मुरसिद अनुरागी ॥

॥ दोहा ॥

मुरसिद सतगुरु चरन का, आठ पहर अनुराग ।
सो भागे भवचक्र से, उनको लगा न दाग ॥

॥ चौपाई ॥

यह मुद्दा गुरु को दरसाया। कदमअली कहि कर समझाया॥

*संग या साथ में।

अब चेले को समझ सुनाई । तुमहूं समझि लेव यहि भाई॥
यह संसार पहाड़ चौफेरा। जरे अगिन जिव चहुं दिसि घेरा॥
गृह भवकूप पड़े घबराई । काल सरप मुख खाने चाही॥
दूबि उमिर भुगते दिन राती । निस दिन चूहे कतरि यहि भाँती ॥
माखी* महू† फोड़ करि खावे। सो सब जानो कुटँब कहावे॥
सहद बूंद बिष रस की मीठी। इतना सुखी यह और न डीठी
यहि चेला समझो मन माहीं। भवरस सुख दुख भुगते भाई॥

॥ दोहा ॥

चेले का मन भ्रमित है, सुनि फकीर की बात ।
कछु जादू दिखलाय के, फेरि करै उतपात ॥

॥ चौपाई ॥

चेला आय गुरू के [illegible]हिया । जादू खेल फकीर दिखइया॥
यहि गुरु के मन माहिं समानी । दोनोँ की अक्किल भरमानी॥
मसलत‡ करि राते उठि भागे। यह फकीर के मुँह नहिं लागे॥
बड़े फजिर भिंसारे भाई । गये रमते कहुं खोज न पाई॥
तुलसी कहे साँचि नहिं आई । यह हिरदे मन भरमे भाई॥
कोइ दिन संग साँचि नहिं आवे । कहो दो दिन में कहा समावे ॥
भरम रहे जुग जुग के माहीं। तिनको साँचि कौन बिधि आई
कर्मट§ करि सब जन्म बिताया। इष्ट करा जड़ सँग लौ लाया॥

---

*मक्खी । †शहद । ‡सलाह । §कर्म ।

॥ दोहा ॥

सो सुधरैं नहिं जन्म लौं, धारैं जन्म अनेक।
भेष जतन करि के मरे, टारी टरी न टेक॥

॥ चौपाई ॥

इक हिरदे संदेह उठाई। भर्म भया मोरे मन माहीं॥
आगे जो संवाद सुनाये। वा में बेद पुरान उठाये॥
ह्याँ तुम थापे बेद पुराना। साखि वही की भाखि बखाना॥

( तुलसीदास बाच )

हे हिरदे तैं समझ न लाई। या का भेद कहूं अरथाई॥
बंधन बेद जक्त को कीन्हा। भव भुगते जिव जन्म अधीना॥
जीव मुक्ति नहिं राह बताये। तीरथ बरत इष्ट उरझाये॥
यहि कारन से खंडन कीन्हा। हिरदे हिरदे* बूझ यकीना॥
बेद पुरान साख ह्याँ दीन्ही। या का भेद लखो चित चीन्ही॥

॥ सोरठा ॥

संत साखि सतगुरु कहैं, बेद कहैं यहि भाख।
साखि दैंइ सतगुरु सही, यहि मुकाम पर थाप॥

॥ चौपाई ॥

सतगुरु की जहँ साखि सुनाई। जहँ बेदन को थापे भाई॥
जग बंधन भवसागर डारा। जहँ बेदन को काढ़ि निकारा॥
यह बैठी हिरदे मन माहीं। नहिं कहुं और रीति समझाई॥
हिरदे कहे समझि मन माहीं। सो तो समझि समझ में आई
एक अचंभा अचरज माहीं। सो पूछौं कहो भाखि सुनाई॥

*मन में।

तीनौं ऐनक आँखि चढ़ाई। सिध गुरु चेले तीनौं लगाई ॥
तीन भाव तीनौं ने देखा । यह अचरज मन भया बिबेका ॥
ऐनक में सिध बगिया देखी । गुरु ऐनक नर पसू बिबेकी ॥
चेले को भवकूप दिखाना । तीनौं कहैं तीन सरधाना* ॥

॥ दोहा ॥

यह मोको कारन कहो, तीनौं तीन बखान ।
ऐनक में इक रस चही, यह कहो भेद बयान ॥

( तुलसीदास बाच )

॥ चौपाई ॥

सुनु हिरदे यह बरनि सुनाऊँ । यह निर्वार तोहि समझाऊँ॥
ऐनक देने की बिधि भाई । यामें करो समझ चित लाई॥
जो सिध ऐनक आँखि लगाई । बाट चले छूटन नहिं पाई॥
हर दम ऐनक छुटो न राही। यहि बिधि बाग दिखाना भाई॥
गुरू ज्ञान के मान समाने । उनको नर पसुवत दरसाने ॥
रमत रहे अज्ञानी चेला । यह भवकूप लखा उन खेला ॥
योँ तीनौं के तीन बिचारा । या में समझि लेव निर्बारा ॥

( हिरदे बाच )

को गुरु ज्ञान अज्ञानी चेला। कहो स्वामी यह समझ दुहेला† ॥

( तुलसीदास बाच )

॥ दोहा ॥

गुरू ज्ञान को समझि ले, चेला जग अज्ञान ।
यह दोनोँ यहि बिधि कहैं, लीजे परखि पिछान ॥

*भाव । †कठिन ।

॥ चौपाई ॥

यहि बिधि कहे गुरू अरु चेला। नहिं परखे वह आदि अकेला

( हिरदे बाच )

स्वामी कही सकल निर्बारी। संसय मोरी दूर बिडारी॥
आदि अंत सुनि के भ्रम भागा। बरनि कही रहि एक न जागा॥
मैं स्वामी चरनन बलिहारी। निरनय छाने भरम निकारी॥
बड़े भाग अंकुर के मोरा। चरन चीन्ह प्रभु सरन बहोरा॥
मैं अति कुटिल अधम अन्याई। तुम्हरे दरस परस को पाई॥
संत दरस अघ पाप नसावैं। अस अस कहैं सभी मिलि गावैं॥
आदि अंत भाखा बरतंता। पावे कहा बिना को संता॥

॥ सोरठा ॥

आदि अंत की बात, पूछी सो बरनन करी।
भिन भिन कह्यो लखा व स्वामी को कहे भेद यह ॥

॥ छंद ॥

हिरदे कहे परनाम करि, इतनी कहन तुम ने कही।
मतिहीन मैं आधीन होय, कहुं कोउ मरक* काढ़ी नहीं॥
कोइ परखि चीन्ह प्रबीन जन, जिन पकड़ करि गाढ़ी गही।
जग भेष टेक टेकाव जड़, मन मूढ़ नहिं कीन्ही सही॥
यह अगम ज्ञान बखान बरनन, कहूं नहिं ऐसी भई।
तुमने कही सब भाँति भिन भिन, कोइ नहीं बाकी रही॥
हिये में हरखि कोइ परखि, पुर धुर धाम धरि मन में लई।
सतगुरु कृपा निज नाम नौका, निधि† निरखि मानो मही॥

* मढ़क की बात, नुकता। † ख़ज़ाना।

यह संत की बेअंत बोली, बिमल होइ बूझा चही।
जग कर्मकांड उफान* उर धरि, धरम बस बाँधे दई† ॥
सतसंग के रँग रमक रस अस, बिमल मग बाचे सही।
हिरदे कहे अनरूप आतम, अंग के अंदर मही‡ ॥

तुलसीदास बाच

॥ दोहा ॥

तुलसी हिये हुलसी लखो, हिरदे हरख बयान।
जानि जन्म नर तन यही, कही सब संत बखान ॥
नर तन में निरनै लखे, रखे सुरति समझाय।
चाह रखे नहिं अंत की, सतगुरु सब्द समाय ॥
नर तन दुरलभ ना मिले, खिले कँवल रस माहिं।
खाय अमर फल अगम के, जो सतगुरु सरनाय ॥
रतन जतन सागर मही‡, कही जो निरनै छान।
ब्यान बरन बिख्यान सब, बूझे बचन प्रमान ॥
हिरदे से तुलसी कहे, रहे अगम के पार।
जो निरधार संतन कही, सो सतगुरु पद सार ॥

*उबाल यानी मैल। †कर्म। ‡मथा।

॥ इति ॥

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तक-माला के जो दोष उन की दृष्टि में आवैं उन्हें हमको कृपा करके लिख भेजैं जिस में वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावैं और जो दुर्लभ ग्रंथ संतबानी के उन को मिलैं उन्हें भेज कर इस परोपकार के काम में सहायता करैं।

यद्यपि ऊपर लिखे हुए कारनों से इन पुस्तकों के छापने में बहुत व्यय होता है तौ भी सर्व साधारन के उपकार हेतु दाम आध आना फ़ी आठ पृष्ठ से अधिक किसी का नहीं रक्खा गया है। जो लोग सबसक्रैबर अर्थात पक्के गाहक होकर कुछ पेशगी जमा कर देंगे जिस की तादाद दो रुपये से कम न हो उन्हें एक चौथाई कम दाम पर जो पुस्तकें आगे छपैंगी बिना माँगे भेज दी जायँगी यानी रुपये में चार आना छोड़ दिया जायगा परंतु डाक महसूल उन के ज़िम्मे होगा और पेशगी दाम न देने की हालत में वी० पी० कमिशन भी उन्हें देना पड़ेगा। जो पुस्तकें अब तक छप गई हैं (जिन के नाम आगे लिखे हैं) सब एक साथ लेने से भी पक्के गाहकों के लिये दाम में एक चौथाई की कमी कर दी जायगी पर डाक महसूल और वी० पी० कमिशन लिया जायगा।

अब दरिया साहब बिहार के महात्मा और ग़रीबदास पंजाब के महात्मा की बानी हाथ में ली गई हैं।

प्रोप्रैटर, बेलवेडियर छापाख़ाना,

अक्तूबर, १९०९ ई०　　　　इलाहाबाद।

# संतबानी पुस्तक-माला

तुलसी साहब (हाथरस वाले) की शब्दावली और जीवन-चरित्र ... २)<br>
,, ,, ,, रत्न सागर मय जीवन-चरित्र .. ।।।=)<br>
कबीर साहब की शब्दावली और जीवन-चरित्र, भाग १ ... ... ।≡)<br>
[दूसरा एडिशन विशेष शब्दों के साथ ।।)]<br>
,, ,, शब्दावली भाग २ ... ... ... ।।=)<br>
,, ,, अखरावती ... ... ... ... -)<br>
पलटू साहब की शब्दावली (कुंडलिया इत्यादि) और जीवन-चरित्र,<br>
भाग १ ... ... ... ।।)<br>
,, ,, शब्दावली, भाग २ ... ... ... ।-)।।<br>
धरनदासजी की बानी और जीवन-चरित्र, भाग १ ... ।।)।।<br>
,, ,, भाग २ ... ... ... ।≡)।।<br>
रैदासजी की बानी और जीवन-चरित्र ... ... ... ।-)।।<br>
जगजीवन साहब की बानी और जीवन-चरित्र, भाग १ ... ।।-)<br>
दरिया साहब (मारवाड़ वाले) की बानी और जीवन-चरित्र,<br>
दूसरा एडिशन, कितनेही अधिक पदों और साखियों<br>
के साथ ... ... ... ... ... ... ।)।।<br>
भीखा साहब की शब्दावली और जीवन-चरित्र ... ... ।≡)<br>
सहजोबाई की बानी और जीवन-चरित्र ... ... ... ।)<br>
दयाबाई की बानी और जीवन-चरित्र ... ... ... =)।।<br>
गुसाईं तुलसीदासजी की बारहमासी ... ... ... )।।<br>
अहिल्याबाई का जीवन-चरित्र भी अंग्रेज़ी पद्य में छपा है (यह<br>
रमनीय पुस्तक एक मेम ने लिखी है संतबानी पुस्तक-माला<br>
की नहीं है) ... ... ... ... ... =)

मूल्य में डाक महसूल व वाल्यू पेयबल कमिशन शामिल नहीं है।

मनेजर, बेलवेडियर प्रेस,<br>
इलाहाबाद।